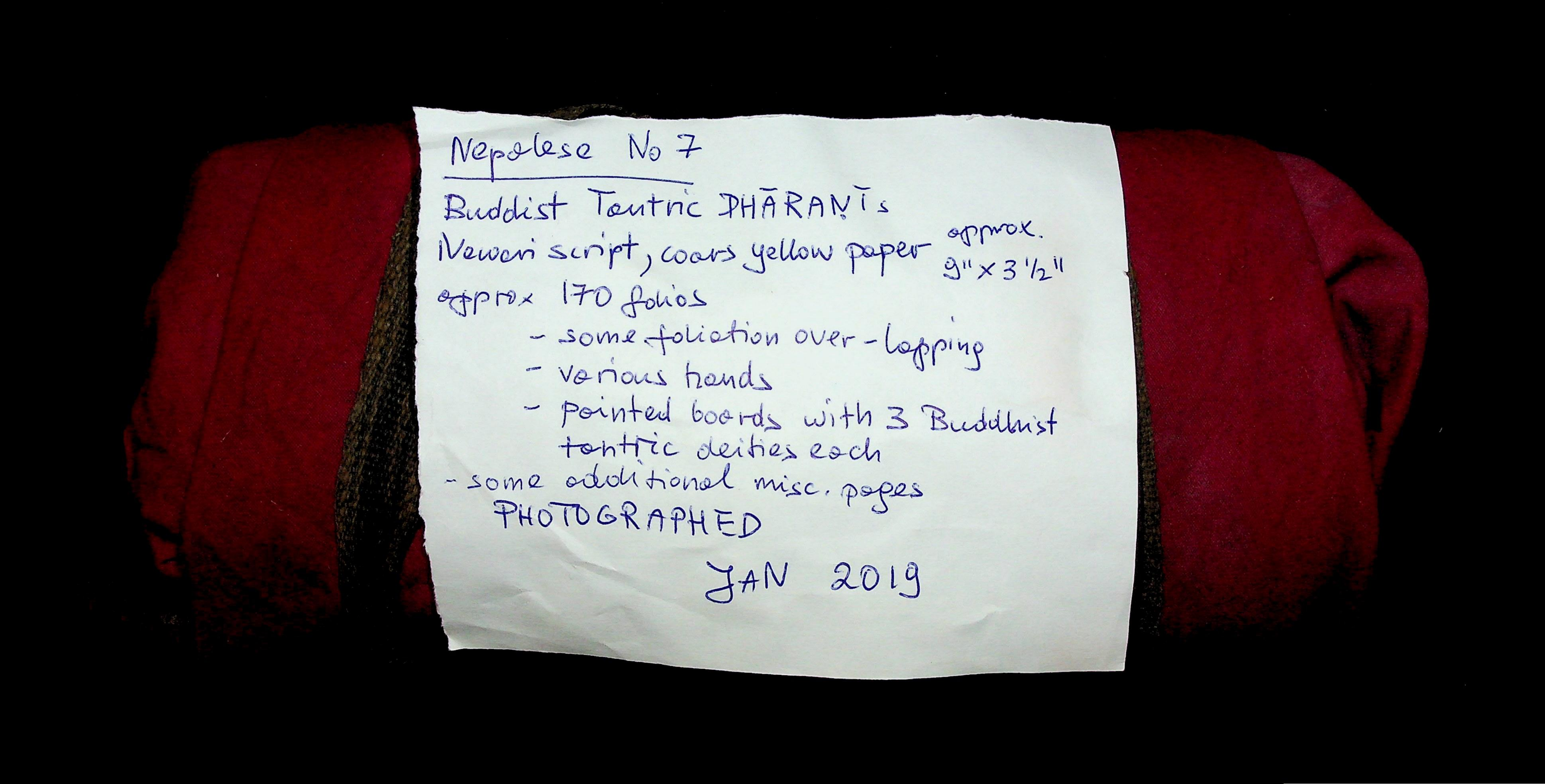
Nepalese No 7
Buddist Tantric DHĀRAṆĪs
Newari script, coars yellow paper
approx. 9" x 3 1/2"
approx 170 folios
- some foliation over-lapping
- various hands
- pointed boards with 3 Buddhist tantric deities each
- some additional misc. pages
PHOTOGRAPHED
JAN 2019

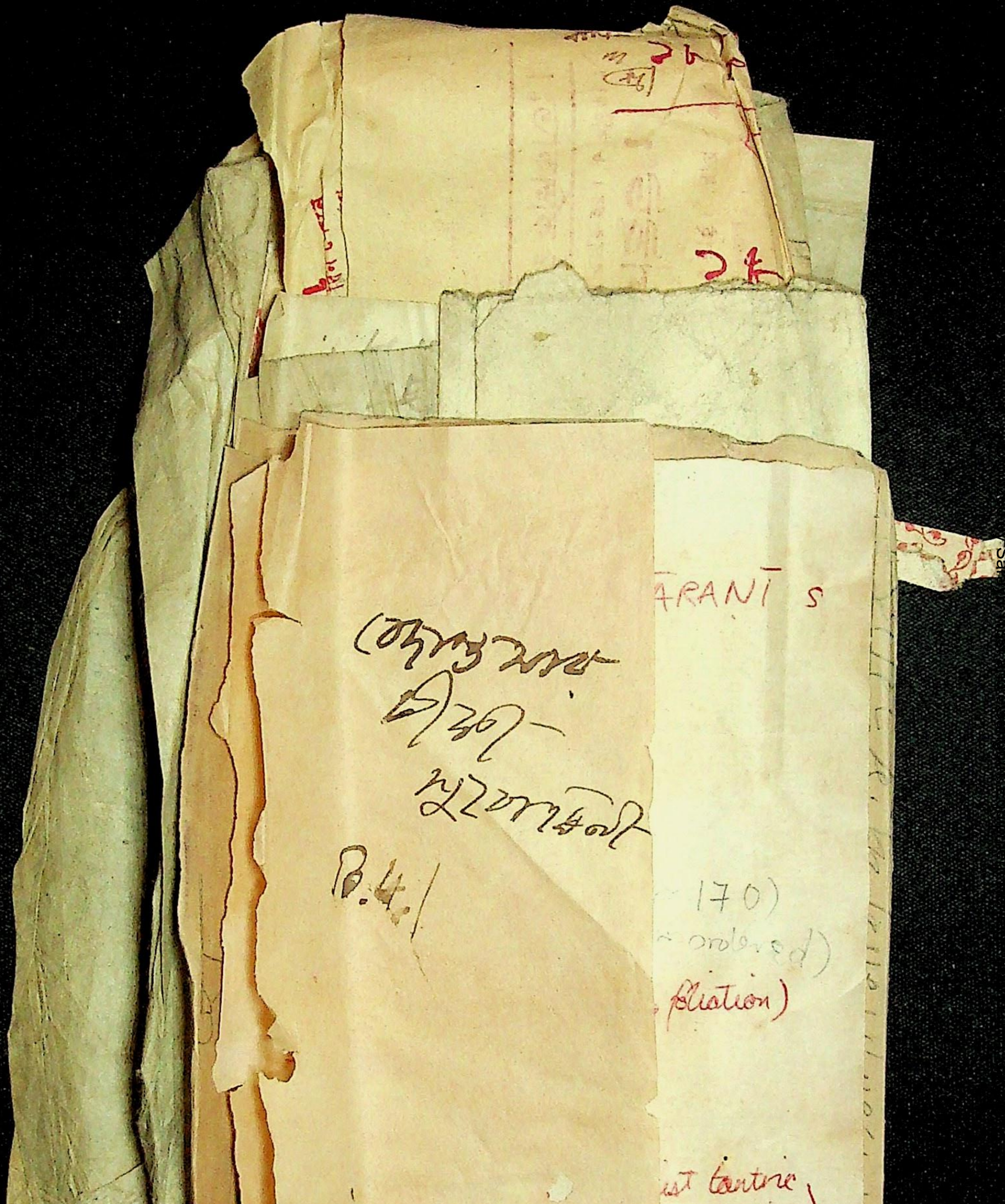

B.4.
170)
deities)

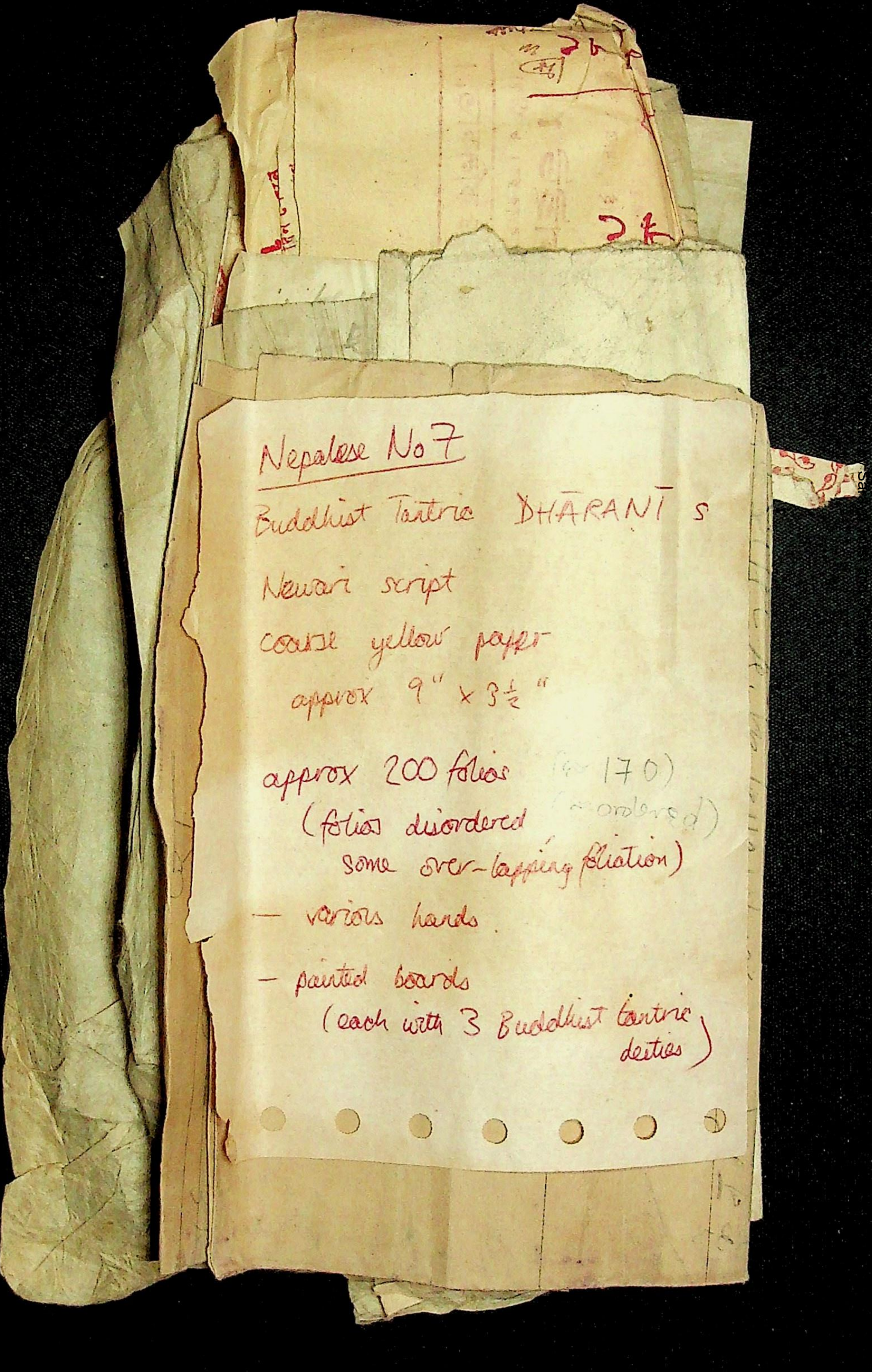
Nepalese No 7
Buddhist Tantric DHĀRAṆĪ s
Newari script
course yellow paper
approx 9" x 3½"
approx 200 folios 170)
(folios disordered ordered)
some over-lapping foliation)
– various hands
– painted boards
(each with 3 Buddhist tantric deities)

Brought forward ...

Carried ...

Brought forward ...

CC-0. In Public Domain S

...gotri. Equipment Heritage Foundation, ...

Carried ...

Brought forward ...

CC-0. In Public Domain Sri...

Brought forward ...

Carried over ...

C G P...No. 469 P O...12-9-1906...70000

Digitized by Sarayu Trust and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Sri A...

॥ धान्यकोश्लोक ॥

॥ धन: धान्य: विधि ॥ वराना थ: मान्य ॥ सदा सु[illegible]: भूमौ ॥ जयधिर्ज्य: व ती ॥ कल ना: रिजानास् षचि ना: व[illegible] सैु ॥ शानि ॥ धान्ये ॥ धान्यो वृद्धि: करोति ॥ ॥ ॥

॥ धान्या को: भाषा ॥

॥ धन लाभ ॥ धान्यादि: अन्न लाभ ॥ राजा देखि: पुजा ॥ सबै का लज्दु मा: जये ॥ खिज्येना ॥ उनम: स्वि पुत्र: को सुख ॥ चित्त: विचित्र: वस्त्र लाभ ॥ धान्ये दसामा ॥ धन धान्य: पूर्णहुछ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ भ्रामनिको श्लोक ॥

॥ विदेस ॥ भ्रमनी ॥ हानि र्दुर्गतीश्च ॥ कलत्राग: पिडा ॥ सुवैवर्जित त्व ॥ रिनव्यादि ॥ वृद्धि ॥ जनानी: प्रकोपी ॥ दसा भ्रामरि ॥ भ्रामये: सर्व देस ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

भ्रामनि दसाको भाषा

॥ विदेस ॥ भ्रमन ॥ नइमा हानि ॥ स्त्री सन्ता: नादि लाई: पिडा सुख ले ॥ हिनु: नपाउन्या ॥ रिराजरू ॥ अधार ॥ कर्जी ला जन्यो ॥ नाना: प्रकार: को: रोग ॥ वृद्धि मन बे: इन्द्र सोजन देखि ॥ को इहुन्या ॥ सर्व देसमा: भ्रमन हुछ ॥ अधान ॥ घ्र मन प न्या ॥ भान गेट को फल से विदेस वास गर्छ ॥

CC-0. In Public Domain. Sri Aurobindo Li[illegible]

के ह जमा म : उ वु वि पा ह यान वि जि पाज
वा क : वि पा हि म है म त : मा म : हु पा व :
ज ना त वा व म जि उ : हु ब ज व ध मा ज : ना
प ना प : व ई म ज : ध म : थ म : पा ना व पा
ग जु क त मा न क ता प म ज प क : ह
हे ला प ज ज म ज : द ता ला चा य म जि
उ : ई वि पा ग : न जा ति तो त्व म ते : ई व
द ह जु क ऐ पा ना चो मे ग त्व व र मा म
ध उ : प कू : हु ब ज त ध का : ह ता ल
प न जि उ : व था दे : क में : ज त ध ला

[illegible]

Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

শিশি ১০ আনা। ...

সালসা-কেশ...

রক্তদুষ্টী, কণ্ডু, বাত, পারা, শিরঃপীড়া, ধাতুক্ষীণতা, সকল প্রকার ক্ষত নালী ঘা, বেরিবেরী, অর্শ, যাবতীয় চর্ম্মরোগ, পারা ক্কত যাবতীয় দুষ্ট ক্ষত ও উপদংশের বিষ নষ্ট করিতে ও শোণিত শোধিত করিয়া নব বল সঞ্চয় করিতে ইহাই একমাত্র অসীম শক্তিসম্পন্ন মহৌষধ। যাহারা ভূরি ভূরি দেশী ও বিলাতী সালসা ব্যবহার করিয়া কোন ফল না পাইয়া হতাশ হইয়াছেন তাঁহাদের নিকট একান্ত অনুরোধ, একবার পরীক্ষা করিয়া দেখুন, এরূপ আশু শান্তি কারক ঔষধ দ্বিতীয় আবিষ্কৃত হইয়াছে কি না। ব্যবহারে গুণ জানিতে ও জানাইতে পারিবেন। ইহা ভারতে সর্ব্বত্র প্রসিদ্ধ। শিশি ১৷৷০ টাকা। ৩ শিশি ৪৲

ফিটিং-টাক।

হতাশ জীবনে আ...

ফিটীং টাক্ ব্যবহারে যে কোন প্রকার যত বেশীদিনের বা যত বয়সের টাক রোগ হউক না কেন ৭ দিবসের মধ্যে গাঢ় কৃষ্ণবর্ণ চুল উঠিয়া জুড়িয়া যাইবে পুন টাক্ পড়িবে না বা চুল পাকিবে না। যাহাদের গোপ দাড়ি উঠেনা, তাঁহারা ব্যবহার করিলে অতি উৎকৃষ্ট গোপ দাড়ি হইবে। বহু পরীক্ষিত অতি অব্যর্থ মহৌষধ কোন প্রকার দূষিত দ্রব্য নাই। শিশি ১৲ তিন শিশি ২৷৷০ টাকা

দদ্রুদাবানল।

দদ্রু আদি চর্ম্মরোগ বিনা যন্ত্রণায় ২৪ ঘণ্টার মধ্যে নিরাময় হয়। পুনঃ হয় না। শিশি ।৵০ আনা।

হয় না, ব্যবহারে ...
১০ টাকা।

প্রমেহ-কে...রা।

১ দিনে মেহ প্রমেহের অসহ্য যন্ত্রণা দূর হয়, ৭।৮ দিন সেবনে পূয পড়া, রক্তপাত, অতিরিক্ত প্রস্রাব বা মুহুর্মুহু প্রস্রাবের বেগ ফোঁটা ফোঁটা প্রস্রাব এবং অতি কষ্টে প্রস্রাব করা তজ্জন্য অসহ্য যন্ত্রণা, ঘোলাটে বা খড়ি গোলার ন্যায় প্রস্রাব, প্রস্রাবের পূর্ব্বে বা পরে বীর্য্যপাত, সূত্রবৎ তুলার আঁশের ন্যায় ধাতু বাহির, কাপড়ে দাগ লাগা, প্রস্রাবের বেগ ধারণে অক্ষমতা, স্নায়বিক দৌর্ব্বল্য হেতু যৌবন শক্তির লোপ, দুঃস্বপ্ন, স্ত্রীসঙ্গমে অক্ষমতা, নিদ্রাহীনতা, জ্বরভাব, কার্য্যে অনুৎসাহ প্রভৃতি যাবতীয় যৌবন-সুলভ বিবিধ যে কোন উৎকট উপসর্গ হউক চিরকালের জন্য দূরীভূত হয়। রোগের জড় গনোকোকাই কীট বিনষ্ট করে ; সেই জন্য পুনঃ হয় না। গুণে সর্ব্বোচ্চ স্থান অধিকার করিয়াছে। শিশি ১৷৷০ ৩ শিশি ৪৲

ফিভার-কিলার।

সকল প্রকার নূতন ও পুরাতন জ্বরের ... ঔষধ ; বিশেষতঃ ম্যালেরিয়া জ্বরের ব্রহ্মাস্ত্র। জ্বরে রোগীর যে অবস্থা ঘটুক না কেন ১ দিনে নিরাময় হয়। লক্ষ্য ২ রোগী পরীক্ষিত। ভারত-বাসীর স্বাস্থ্য উপযোগী বিশুদ্ধ উপাদানে প্রস্তুত। এরূপ আশু শান্তিকারক মহৌষধ অদ্যাপি আবিষ্কৃত হয় নাই। মাত্র ২ আউন্স শিশি ১৲। ৩ শিশি ২৷৷০

গোল ও কাইট।

সাধারণ হইতে দুঃসাধ্য ক্ষতরোগে ব্যবহার হয়। ৮ বটিকা ১৲

ডাক্তার জে, বি, রায়, ধন্বন্তরি, ই, এ, এস, পি। ৯২ নং হ্যারিসন রোড কলিকাতা।

...প্রেস, কলিকাতা।

[illegible]

২৭ — ০ — ১৫
১৫ — ১ — ৪

৪২ — ৪ — ১৮

[illegible]

सूचना-एकदम (१००) पंचांग खरीदनेवालोंको
५ पांच रुपयेमें देंगे. महसूल अलग.

सेठगंगाविष्णु श्रीकृष्णदास.

लक्ष्मीवेंकटेश्वर छापेखानेके मालिक.

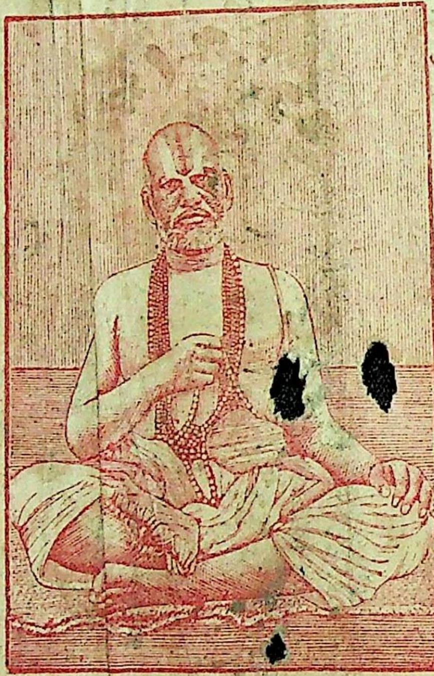

कल्याण-मुंबई.

जी. आय्. पी. रल्वे जंक्शन्.

२६०००—१-११-१०

भ ष्यफलचं द्रिका.

संवत्का हाल जाननेको प्रायः सबही इच्छा रखते हैं औ गर्जसे पंचांगको
रका हाल पंचांगमें संक्षिप्त लिख दिया है परन्तु विशेष हाल जनको यह पुस्तक बनाइ
साल किस माफिक निकलेगी इसमें क्या क्या हाल फलफूल, अन्न, तृणक
होगी तथा पृथ्वीपर कहां २ किस २ प्रकारकी संसारि टना रोग शोक लाभ हा
सुभिक्ष दुर्भिक्ष युद्ध शान्ति आदि होगी से प्रत्येक महीनेमें नहार स्फुट बातें इस पुस्तकमें लि
पढकर हरेक गृहस्थको प्रथमही सत हो जाना चाहिये व्योपारी पुरुषोंको तो अवश्य खरीद
सोचना चाहिये उक्त पुस्तक तारागढनिवासी ज्यो वित् पं० हरदेवशर्माने निर्माण
पंडितजीका कहा हुआ फलादेश बहु ता है इन्होंने ६६ व सं० ६७ की भ
पी उसमें लिखी बातें बहुधा हुई थ पुस्तकके मिलने पता-
ठिकाना-गंगाविष्णु
पुस्तक लक्ष्मीवेंकटेश्वर " प्रे

पुस्त नेका ठिकाना-
श्री-

गङ्गावि कृष्ण

'लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर छाप

कल्याण-मुंब

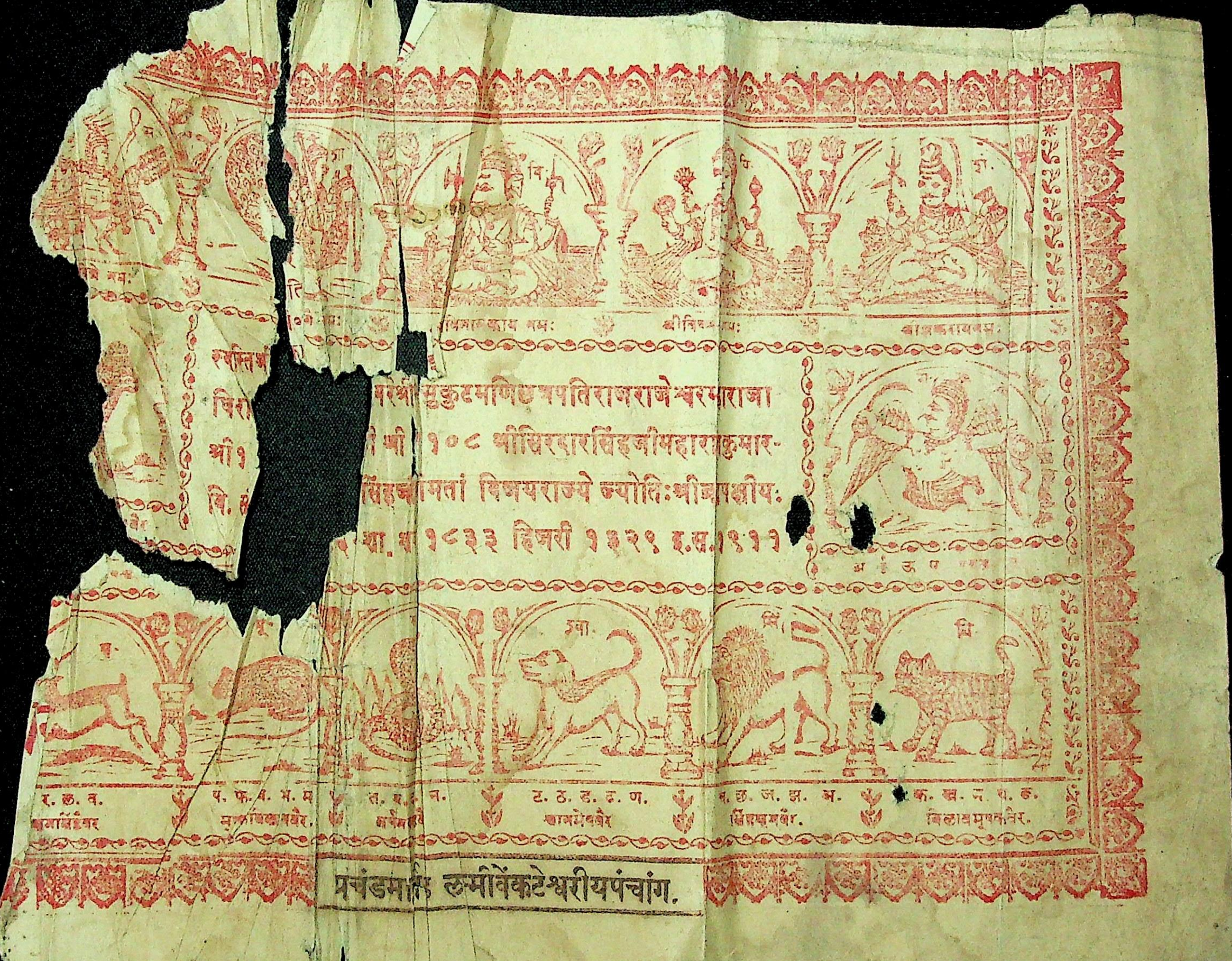
…परश्री मुकुटमणि… पतिराजराजेश्वरमहाराजा
…श्री १०८ श्रीसिरदारसिंहजीमहाराजकुमार-
…सिंहजी… मतां विजयराज्ये ज्योतिः श्री…
…शा. श. १८३३ हिजरी १३२९ इ.स. १९११
ट. ठ. ड. ढ. ण.
प्रचंडमार्तंड लक्ष्मीवेंकटेश्वरीयपंचांग.

[illegible]

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

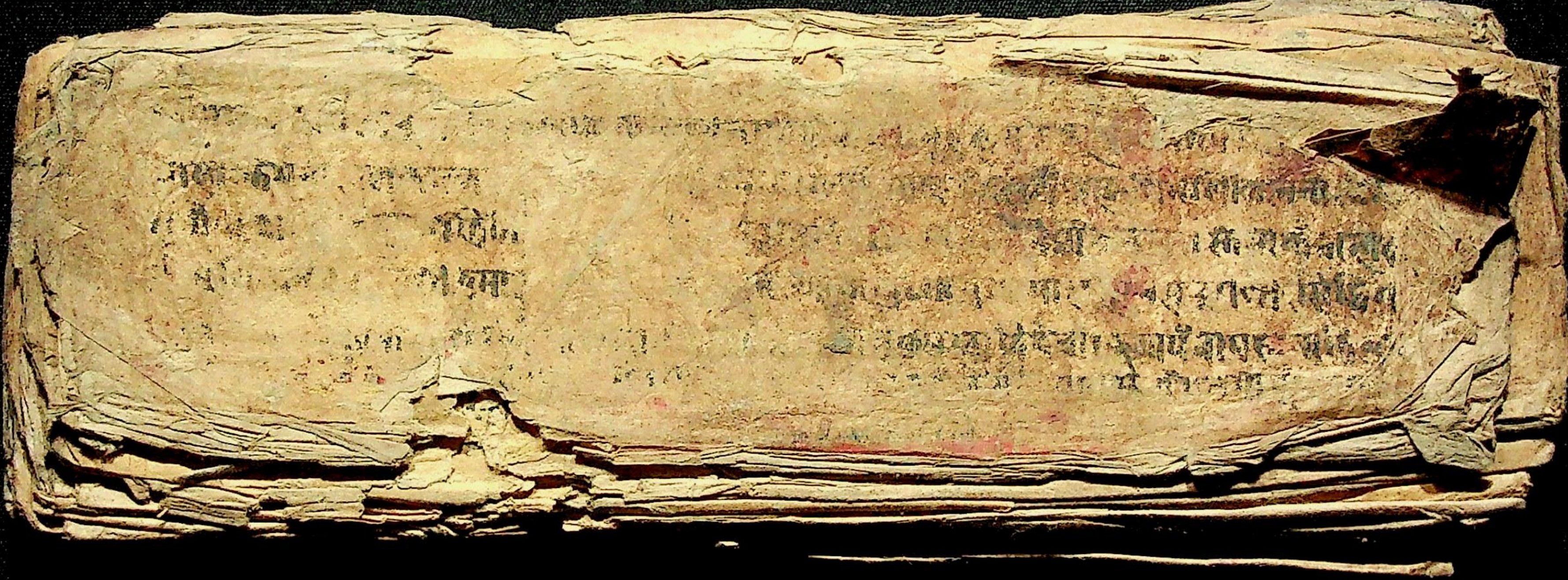

[illegible] नमः आर्यावलोकितेश्वराय बो

धिसत्वाय। माहासत्वाय माहाकारुणीकाय। तद्यथा ॐ [illegible]

[illegible] नकवाय। सर्व [illegible] नकवाय। सर्व [illegible]

[illegible] नाय। सर्व [illegible] नाय। [illegible] नमस्कृत्वा [illegible]

[illegible] वलोकितेश्वर [illegible] सर्व [illegible] माधन [illegible]

[illegible] सत्त्वानां पापमार्ग विशोधक ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

विमल [illegible] प्रिय ॥ बोधिसत्त्वः [illegible] कारुणिक [illegible] हृदयं [illegible] आर्यावलोकित [illegible]

[illegible] क्रूरकर्म [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] महावीर्य ॥ बल [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] म्वा । ना ला मल क्षन स्मा हा क्षव कृष्णुवस्तु यय [illegible]

कृष्णवर्णु कृयाल न निवी मनहा मिष्म ह ह जय कमि गा वन स्व व ॥ कृष्णुत

कम्य क्ष यविन अ ह हि व ल हलिपूल क हन स्व न । नानाय नयव नू प्र वय ष्म नि

हनील कौं ०६ म ल ह ल ना हल विष निर्जित । लोकस्य वाग विष नाम न क्ष षि

नाम नन्त मा ग ल हू नू स्व व स्म रू ल [illegible] ह ना ह ल । मा हा य ज्ञा ना ह म न ह वि वि स्म

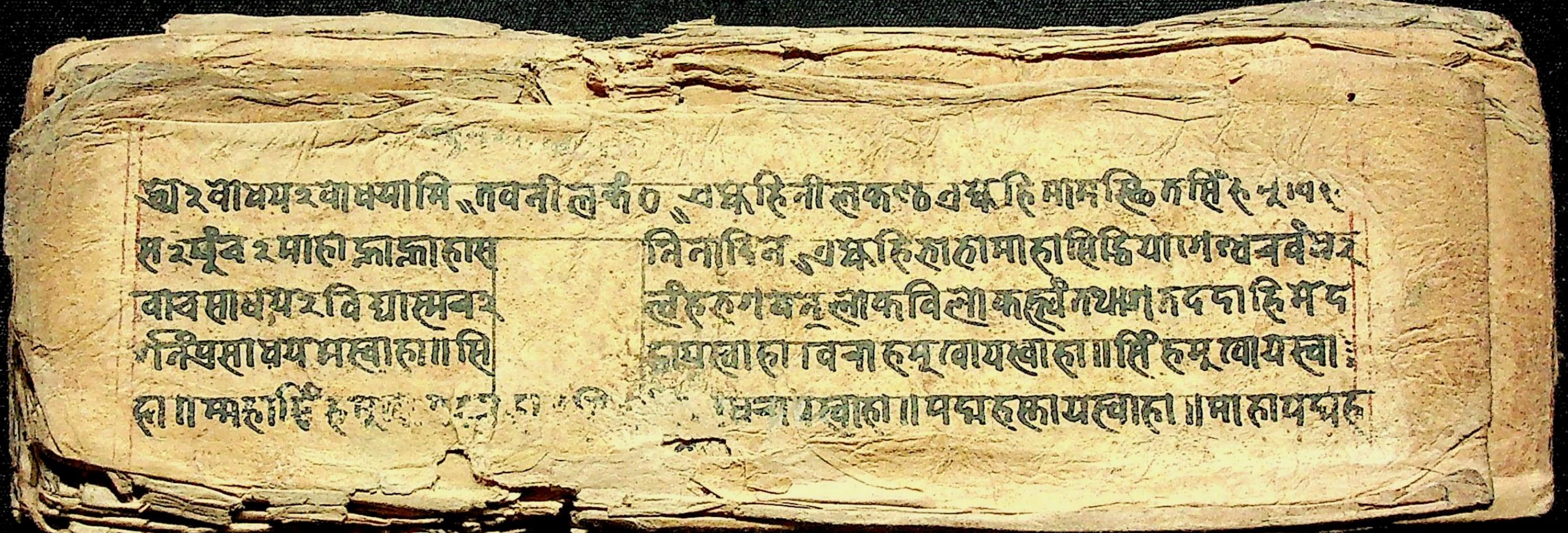

ाय स्वाहा ॥ वज्रकर [illegible] य स्वाहा ॥ कनकसर्प्पकृतयज्ञोपवीताय

स्वाहा ॥ महाकालमकुट धराय स्वाहा ॥ वज्रायुधधराय स्वाहा ॥ नीलवर्गद्द २

निर्म्मदनकराय स्वाहा ॥ भीषणकराय स्वाहा ॥ वामस्कन्धदण्डकिंकणीकः

जिनाय स्वाहा ॥ वामहस्त खट्वाङ्गधारिनी वाहनाय स्वाहा ॥ लोकेश्वराय स्वा

हा ॥ महाकालेश्वराय स्वाहा ॥ सर्व्वसिद्धेश्वराय स्वाहा ॥ वज्रधर्मी स्वाहा ॥ कृ [illegible]

[illegible] ॥ नमो भगवते आर्यावलोकितेश्वराय बोधिसत्त्वाय महासत्त्वाय
महाकारुणिकाय सिद्धि [illegible] मम कार्य सन्निहार ॥ आर्यावलोकितेश्वरस्यैतो
न्यथ वर्णासमाप्ता ॥ ॥ ॐ नमः श्रीभगवते आर्यावलोकितेश्वराय ॥ बोधिसत्त्वा
य महासत्त्वाय महाकारु णिकाय ॥ एवं मया श्रुत एकस्मिन्समये भगवान्
[illegible] विहरति स्म ॥ [illegible] विहरति स्म आराम [illegible] भगवान् आयुष्मा

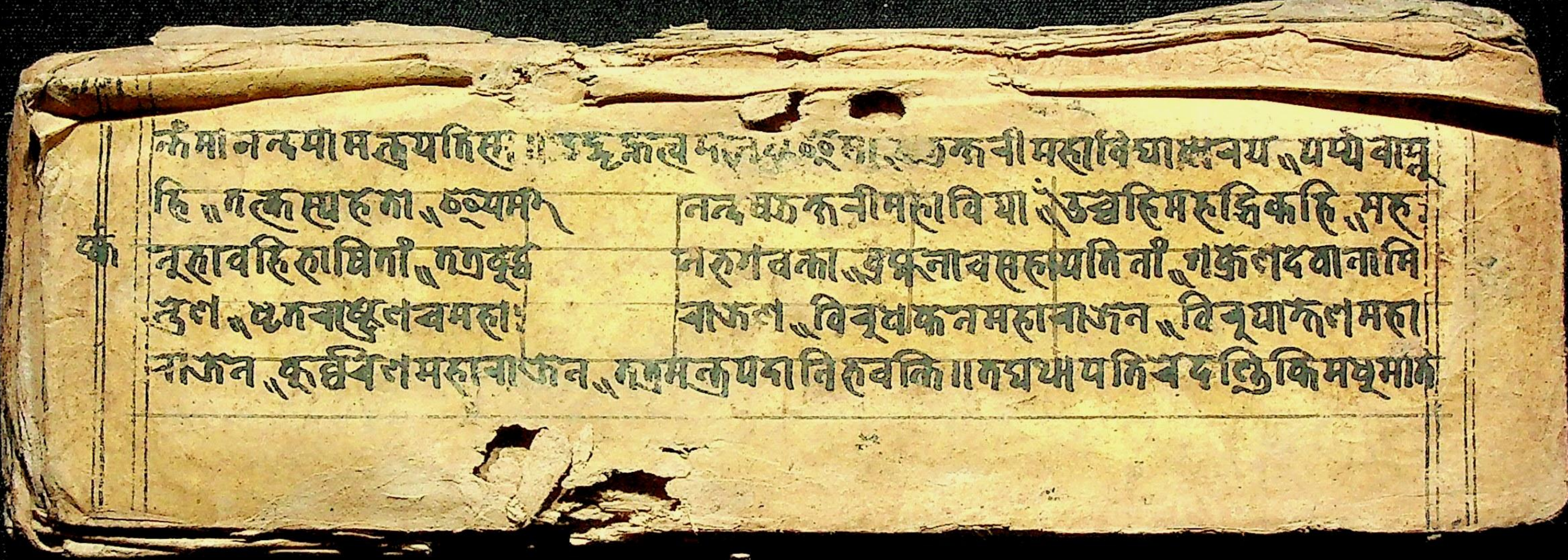

कृत्रकूप्रयमन । ०६ कल नात्रा । ०४ कत्वादिवसस्फुरयत्न । म अक्षिणानि लक्षणानि
वन्यनि । हृदवर्त्तुवर्त्तुन । नतीयनानि । अपनिमिकानूहेतावाधि मृत्वर्त्तगीति
दृत्रुपयन्के । स्मरा । स्मनि ति मननहिकत्विया ॥ आर्य्य सहस्रावर्त्ता नाम धारणी
समाप्तः ॥ ॐ नमः श्रीआ र्य्यावलोकितेश्वराय बोधिसत्वाय महासत्वाय ॥ त
द्यथा । ॐ चल २ चिलि २ चुलु २ कुलु २ मुलु २ हूँ हूँ हूँ हुलु हुलु हुलु हुलु हुलु पमहस्रायस्वाहा ॥

इति मारीचपदनाम धारणी समाप्ता ॥ ॐ नमो रत्नत्रयाय ॥ नमः आर्यज्ञा
महाघने देवावनञ्चूडा ज्ञायनंथगताय हिंसम्यकसंबुद्धाय । नमथ्थ । नमः
सर्व्वतथागतेभ्योर्हन्किये ८ सम्यकसंबुद्धेभ्य ८ नमः आर्यावलोकितेश्वराय बो
हृदय धिसत्वाय महासत्वाय ॥ महाकारुणिकाय । तद्यथा ॐ धर धर धिरि धिरि धुरु धुरु
इट्टे वट्टे चले चले प्रचले प्रचले कुसुमे कुसुमवरे इलि मिलि चिटि ज्वालमपनय स्वाहा ॥ महप्रत्येकला
कृष्णचन्द्रनामधाने

ई भीन ... हे ... श्री ॥ हस्तबाम स्यनिक यिवाठ॥ यऊँ महि मक्रपदाहि ॥ ठमालै

कृर्यानुह्नअपमिल्वा आ नन्द ये बाना कर्म्मविपाकै ॥ ॥ ऊँ दमबावद्

गबान्वात्मनाआयूष्माना नन्दा हमवैमहाविनाम ख्यानन्दनिमि ॥ ॥

आर्यघठञ्जवी महाविघ नाम अनगियवि हमाक ॥ ॥ गुरुमन्त्र ॥

ॐ नमश्री आर्य्यावलोकितेश्वराय बोधिसत्वाय महासत्वाय महाकारुनिकाय ॥

ह यथा ॐ त्रुट विशुद्धगर्भे ग्रहबाधि ... ोविशोधनी वलिगगनरा विशोधनी । विकृति विशोधनी
धनी सुप्रवरण विशोधनी कर्मावरण विशोधनी । हनह सर्वावरणानि पचह २
श्री ज्ञनकर्त्ताली । यथा प धारिणी । यथा विमल । ठठठठ हहहह ६ हूं फट्
मूर्त्ति सिद्धि लिखितं ॥ पठितमात्र क्लेशज्ञनकर्त्ताली । कर्मावरण ... यपवि
ग्रन्थयात् [illegible] ज स्वयमुबोधि नामसिद्धि निकाल मक्षरी समाप्त ॥

यस्मुल ‖ का[illegible] [illegible] गच्छ[illegible]मौषधकर्मी महाविद्या ‖ मूल हृदयानि । वार्वायघ्या[illegible]
मन्त्रिकविद्यानि ‖ सर्वर्वि [illegible]यानि ‖ कूकन सर्पूतवीजन ‖ वायिमूल्यम ‖ [illegible]
हन्याका वैनहन्याका ‖ [illegible]कहन्याका ‖ [illegible]पिककृपाका ‖ देव नाग यक्षन
[illegible]सनगकृतकिन्नर । महानसमनुष्या मनुष्याहन्यहन्यै [illegible] हन्या [illegible]
कृयम गहिकृनक कमहि[illegible] ‖ [illegible] ‖ [illegible] मन्त्रपद्मायमिकृ विद्यानि सफया

सा मूकायाल्ल व्यमन्तत्र मन्त्रपदाहन्तां [illegible] ॥ गधपन्भूक्तल॥ उक्रूकाकान॥ वि कर्कसि

न जवति॥ जमपति॥ नम बुद्धाय॥ भगवते त्रैकाहिककद्रुवस्य प्रतिघातायस

६ हाघन॥ महिकद्रुलप्रति वातावाधाय॥ हाघन॥ महिकद्रुलप्रतिघातायथय॥

हाघन॥ त्रव दवासिकद्रु मूद्रूकतिवा कस्य॥ मिन ठभूकिनाग स्य॥ दकना

गस्य॥ मूद्रवनाग स्य॥ [illegible] किकाभीगस्य॥ उदवन्द्रुवस्य॥ भूनाहिकस्य॥ विहूविकस्य॥ ना:

ॐ नमः श्रीसर्वज्ञाय ॥ नमो भगवते सर्वमानवसत्वप्रमथनायवज्रप्रमथाय ह्रिं कलम्पकीं वृ
ज्ञाय ॥ नमो भगवत्यै आ र्यवज्राग्रकपूव नाजाये ॥ एवं मया श्रुत एकस्मि
स्मिं समये भगवान्देवेषु: त्रयस्त्रिंशेषु विहरतिस्म । पाण्डुकम्बलशिला:
मीभूयस्त्वलुगञ्जी दवा: नामेन्द्रावम विक्रम्य सूर्यत्तुगञ्जि नय पताजित
सत्यनंसत्वमाञ्ज यनभगवो ह्नायमंकताउपसंक्रम्य भगवन्तमिनमवावत् ॥ ॐ ह

धकाउ

हैगवन्लमविक्रस्महूनलाजि ৪ पवाः नादवाम्भ्रायमिं [illegible] जिना ৪ पवाजिना [illegible]

३ [illegible]रिहैनवनूकथैप्रति यरूवीं ॥ हनवानाह ।उदूहीलदवल्द्र [illegible] एक

मूर्वानामखावलीमपनाह जिनीमया [illegible] वा विमलवहूनापवाजिना [illegible]

[illegible] नयागनस्पीं मिकाद्दू [illegible] पनरया विक्लवनलहैप्रकालिना ।नमानाहिजा

नामिवाग्र यं वा [illegible] वा ।नाम हर्षनतिमि [illegible] कना [illegible] हिकू लिका मक्षिकाय पीतीं

१

ॐ नमः श्री आर्य्यावलोकितेश्वराय बोधिसत्वाय महासत्वाय महाकारुणीकाय। तद्यथा

ॐ जय २ महाजयवाहिनि ... सर्व्वाधारिणि। कलल २ मल २ वल २ फलु २ किलि २ स

र्व्वकर्म्मावरणानि मम हन ... वति सर्व्वोपवहि। १ सर्व्वबुद्धावलोकित वज्र ... न

हुं हः जिव्हा काय मन ... विज्ञान विज्ञानानि। तद्यथा ॐ हन २ दह २ हन २ हन २

मतेन २ हन २ स्वाहा ॐ सर्व्वबुद्धाधिष्ठितमलोता। ॐ सर्व्वबुद्धावलोकित स्वाहा। ॐ नमः

र्षमणु ग र्ह्ण ह्ला हा ॥ जूहावलहावर्मावलाम निह्लाहा ॥ जूह्या धानत्या जूयमूत्र म ।

न ठ कल्प सहस्रे ॥ स विर्म कर्मावरनं एकवाचाभाषिताने ॥ पविशुद्धयेन कृ

श बुद्धसहस्राव ला पिनं ॥ कुशलमूलं हवति ॥ जातिपरिवर्तेन ॥ चक्रवर्ति

वार्थे र्वर्पा ॥ सप्तसहस्रैष मित हमाप्रमल का लवबुद्धसहस्रैय त्यमि । प्रमि

न सहस्राव र्हि कुर्वन । एक विं न [illegible] ब्रमन वा पि सत्व र्हं व्यालक्ष्मि । पविशुद्ध मूकू

अ

वा ॥ कल्कमभासोहन्गच्छन ॥ हन्गवाश्च जाग्रकस्थ्वां नामधावनीमयवाक्जिनाद्भृदयंहाधक
स्म ॥ तद्यथा ॥ ॐ नमाभगवत्यै आर्याय ॥ ॐ ध्व जाग्रकस्थू कुजयप्र्यविजय २ जयवाहि
निर्ईक्रनिघ्रहं कल्पिवृहै जनि ताक्क यय २ कम्कम्प २ भोहय २ हगवति जयवाहनि
जयालक्ति भयय २ भ्रमय २ ह स्य २ गस्य २ कूं २ ह २ ल भू २ लं वाददि जिनत्रवज्रवज्रि
वज्रदेहवज्रकुंज ज्ञाति त्रूपलवज्र नन कक वव मुद्राक्ष वि लि वज्र २ भीहर्षप्र स

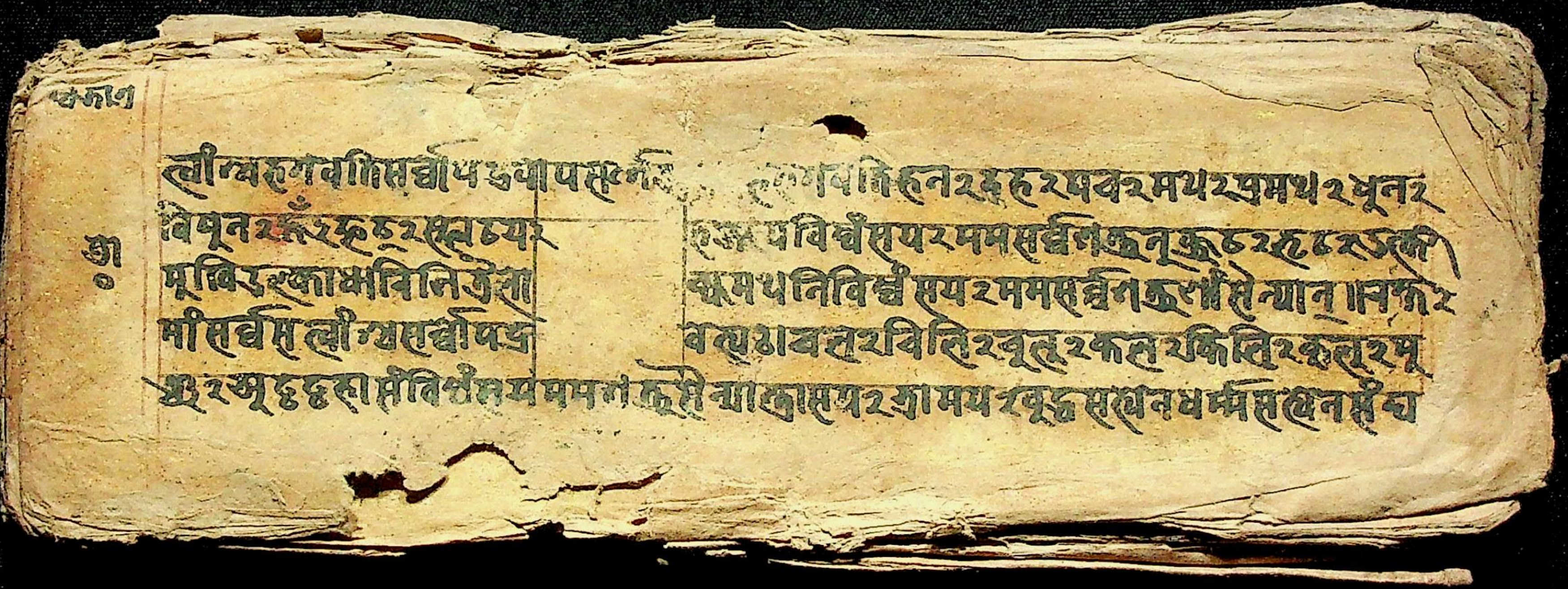

अत्रश्राव [illegible] विनाद [illegible] ग्रहवायनपत्रिष्यानसर्वदक्रयाहविष्यति

ष्यजात्रेवार्क८०वावश्याध [illegible] पितस्म।म [illegible] ना।जासूबपूर्नुमा।भीसर्दषीवर्ग

कवाकिग्रीसूपभावलीह खापूवत०क्रिलार्हयंन्ददाफितवष०कि।नकूसन्य

विजाययभिमीगर्ल्येयविर्दै यापनासलजीलर्म्भर्मस्यतिताहविष्यति [illegible] न्दि

ॐदमधवकुगबानाह्रूमनाक्षुगश्रादवन्दु०सवतावनीपर्वकुगवमाहाषितमस्यनन्दनीति

पंचरक्ष

॥ [illegible] ॥ आर्य्यसजाग्रभवलीह्माफ ॥ [illegible] ॥ ॐ नमः श्री [illegible] मूलयाथः

नतायार्हते सम्यक्संबुद्धा-य । तद्यथा । ॐ भगवति मुद्रणि हिद्ध महासिद्ध, समक

दानके, माकलि, मुक्ते वि-मुक्ते, माकलि, विमाकलि, अमले, विमले, निर्म्म

ले, [illegible] दनिबन्धे-स्फुटकारि, [illegible], हिन [illegible] हिनयागर्भे

सर्वाशमा [illegible] परिपूरणि स्वाहा ॥ [illegible] श्री भगवती भगवत्, लि [illegible], लि

सत्वेन सत्वेभ्या। न्न त त्रे न सत्वादि निसत्वेँ मा तिक्रमथ वृद्ध धर्म हिंस्य सत्वे मा तिक्रमथ

सत्व वादि हत्वेँमा तिक्रमः य। लीँवा द नि कुरु २ कुरु धापय २ बुद्ध मानय २ विक्रमा

नय २ बन्धु हृत्वेमानय २ द्रौला काधि पति मानय २ सर्व्व देवा न्मानय २ सर्व्वय

क्षवा कास कुम्भाण्ड महान गन्धीला नय २ विध्वंसय २ मम सर्व्व ग्र हे भ्यो ना मी

सर्व्व सत्वांश्च रक्ष २ च न्द्राग्रय २ वेग २ वेँ गपय २ कुलु २ कुलु २ पुष्प मा लि नि ध क्षान्ति २

धना

विहिं२ विढिं२ हकूटिमूवि पवसेन्नकूसातासा दनकवि हन२हिलि२हलूर धं२ह२वि
ज्ञा न२मानिजम्मूवजवूडवि लाकिमनक२मीहर्वसिलीध्यमंहसन्तवसर्वनथा
ए नमावलाकिमखाहा।। नवाजयलासा हमखाहा।।वन्द्राकविमलखाहा ११
सर्वथहनगाथामीक नूनिखाहा।।वन्दु२मीहर्वसिलीध्यमंहन्तं सर्वह
मयेहलाका।। [illegible] ।।कूपीमाद वन्दुधफा एकयूनानामभावलीजूपवाक्षिणा

पयनुस [illegible] ॐ श्री स्वकाठिमहृस्नानजाति स्मनाहति घाजि। हर्म्यसिं, नाहिनक्षौक

जतमति, नाजावक्रुनहीह | वति। दिनादिन जापा कूमनुमायँपा यँपविङ्कयँन

कति। जुस्याथनस्था स्वहा | वनजाति स्मनानामथावनीहना कथा ॐ ॥

ॐ नमो भगवते नमः | मार्हतहस्य स्वं बुद्धाय। नयथ्य ॐ हृद्ग स्वाहा, मावनि

माक्तलि, मूर्क, विमूर्क, जू नलविमल, जुगुल, पञ्च ह्र, मौंनल्य, हिनल्यहिनल्यानर्ह॥

श्रीवसु

सर्वत्रापनि हम ह्या हा ॥ ॐ मी धानर्णी धनयक वावय न लि थक लि था पय नसवनु

ता ती नि कस्त्र कोटिहि ह प्रालि नि स्म वा ह वलि । नवनव नि क स्य कोटि सहस्रो ।

ग्रि लि वा जावजव क्लि हवि : थ्य लि वत्रु मीय थन ॐ सर्व व्याधि निर्मुक्ता हवि थ्यनि

रूपवान ह्यो थ न श्व धप्रत्रा । वक ३ा जा नि स्मना धाम धावनी हम्म क ॥

ॐ नम: [illegible] नमो ह गहल वेनावनप्र ह क रुना जायनधानमाय: हनस:

मः श्रीबुद्धाय ॥ तद्यथा ॐ ठु ष्म २ मथ २ गाक २ गाक २ समानाय ठ अनालम्ब, अलम्ब

यसावर्हि मलमर्क, निर्वा बन्ध, निराकुल, निर्वाण, सर्वबुद्धाधिष्ठानाधिष्ठि

त स्वाहा ॥ विपावनस्यनाम धारणी समाप्त ॥ ❀ ॥ ॐ नमो भगवते अक्षोभ्याय

तथागतायार्हते सम्यक्सं बुद्धाय । तद्यथा ॐ कंकनि २ रोचनि २ त्रोटनि २ त्रास

नि २ प्रतिहन २ सर्वकर्मपरंपराणि मे स्वाहा ॥ ॥ अक्षोभ्यहृदयनाम धारणी समाप्त

पंचरक्ष

ॐ नमो भगवते अनन्तमुखप्रतिहतराजाय तथागतायार्हते सम्यक्संबुद्धाय तद्यथा। ॐ वन्ने २

अ महानदनदर्षं हव स्वाहा। अनन्तमुखं हव नाम धारणी समाप्ता॥ ॥

क ॐ नमो भगवते मञ्जुमित्राय तथागतायार्हते सम्यक्संबुद्धाय। तद्यथा॥ ॐ जुमे २

जूमनी हूव जूमनमहेव जूमनमहे वजूमननि सिद्ध जूमजनमज जूमनक्रो ४

जूमनमहेमिति जूमनतलकिकिव जूमन तहलु दिवन सर्वोयसिपन सर्वकर्मा

कृत्यं करिष्ये [illegible] आर्यगाहस्य नाम धारणी समाप्तः ॥ ॥ ॐ नमो भगवते अमोघ

सिद्धये तथागतायार्हते सम्य क्सम्बुद्धाय तद्यथा ॐ सिद्धे सुसिद्धे पचम सिद्धे सर्वार्थ

सिद्धे स्वाहा ॥ [illegible] अमोघसिद्धस्य नाम धारणी समाप्तः ॥ ॐ [illegible]

[illegible] समाप्तः ॥ ॐ नमो भगव ते सर्वदुर्गतिपरिशोधनराजाय तथागतायार्हते सम्य

क्सम्बुद्धाय तद्यथा ॐ शोधनि शोधनि सर्वपाप विशोधनि शुद्धे विशुद्धे सर्वपापविशुद्धे स्वाहा ॥ ॐ [illegible]

आर्यता

॥ ॐ नमो भगवत्यै आर्यतारायै ॥ नमो रत्नत्रयाय ॥ नमः श्री आर्यावलोकितेश्वराय बोधि-
श्री सत्वाय महासत्वाय महाकारु- णिकाय ॥ तद्यथा ॐ तारे तुत्तारे तुरे स्वाहा ॥ सर्व-
६ दुष्टप्रदुष्टानां मम कृते जं- भय स्तम्भय मोहय बन्धय विध्वंसय हुं हुं हुं फट् १८
फट् फट् सर्वदुष्टान् स्तम्भनि स्वाहा ॥ आर्यतारानामावली समाप्ता ॥
ये धर्मा हेतुप्रभवा हेतुं तेषां तथागतो ह्यवदत् तेषां च यो निरोध एवंवादी महाश्रमणः ॥

ॐ नमो रत्न [illegible] प्रणिहिताय ॥ एवं मया श्रुतम् एकस्मिन्समये भगवान् ॥ महा

उसवृनि बलकू [illegible] व वि [illegible] हरति स्म ॥ तदा [illegible] सर्व [illegible] वि [illegible] संघा [illegible]

म ॥ नमो बुद्धाय नमो धर्मा [illegible] य नमः संघाय ॥ नमः सर्वतथागतानां [illegible]

सर्वबुद्ध [illegible] धर्मा [illegible] ॥ ॐ विपुलगर्भे ॥ विमल [illegible]

ॐ विपुल विमले ॥ विमलगर्भे ॥ [illegible] गर्भे ॥ [illegible] गगन ॥ [illegible] धनी ॥

सर्वपापविमोचनी । हुरु २ पवति ॥ मंगलविचालिनी ॥ गगनी लि २ मिमि २ मिमिली गमनि २

ग्रहगणविध्वंसनी हिलि २ गद्धि २ णहि २ गमनि २ गंध २ छुनु २ गुहु २ गुहु २ छुनु लिव

हे ॥ हुलु हली २ चुलु चुली २ चुलु २ वसु २ सुविमल २ जयविजय ॥ सर्वहृदयविशोधक सर्वसः १४

हिलि वल्गुनि ॥ लि लि २ हिलि २ लिनी गिति २ धि वि २ मम कार्यं लि सर्वसत्त्व प्रम

थनि ॥ सर्व २ सर्वमन्त्रान्समनेहय ॥ सर्वपुद्गलस्य सर्वव्याधिरक्ष ॥ ति २ विनि २ धिनि २ वि

CC-0. In Public Domain. Sri Aurobindo Library, Pondicherry

नकावलले॥ विलाधनि॥ विविधावलनवीनातनि॥ मूवी २ मूवि २ मूली २ किविमिवि २
कमव॥ विमव॥ जयविजय जयावह॥ अपवनि। विलासवनि॥ हणवनि॥ नक्षम
कुटमालाधविनावरूविवि ववििवितवणधावेलि॥ हणवनि महाविद्यादेवी॥ व
कर मीर्सर्वसत्वानवि॥ स र्वपापविलधनि॥ हुलु हुलु २ वक्ष २ मी सर्वसत्वानं
वायानत्राणनवयनानगवलभनयवासवानाविमावय॥ सर्व २ स्वाहा ४ व॥ २ स्वनि

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

श्री

वन्दिनी २ वंश वशि सर्वदुष्ट निवारणि ॥ वीर्यवाहिनी । हुरु २ मुरु २ चुरु २ तुरु २ आयुधारे

निनी ॥ सकलबलप्रमथनि ॥ सर्वदेवगणपूजिते ॥ चिलि २ चिलि २ समन्तावलोकि

ते ॥ प्रह २ प्रभ २ सर्वपापविशुद्धे ॥ सर्वपापविशोधनी ॥ धुरु २ धर

णीधरे ॥ वर २ सुमु २ सुरु २ मनालय ॥ सर्वदुष्टान् ॥ भूतभयशासता ॥ श्रीवपुधर ॥

जयकमल ॥ क्षिणी २ वर २ वरदे कुशे ॥ ॐ पद्मविशुद्धे शोधय २ शुद्धे हर २ हर २ हि १०

CC-0 In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

दवर

वीरगुरु २ मैनल विशुद्ध पवित्रमूर्ति ॥ केशनी २ पन २ कवी ह्रजिश्वल ॥ सम का...
नमूप्रह विशुद्ध ॥ समका ग्रहा विनावहाहृद्रुदकल २ सर्वदेवगणसमा...
लि ॥ सत्यव्रत कुं ह्रिदांन व २ नावय २ मां सर्व ह्रत्वानांवना न विलाकित ल
ह २ ह्रव २ ह्रा गुरु २ तुनू २ ह्रि नि २ किति २ कुनि २ सर्वग्रहहृदकुणीपि मेल ॥ मूर २
मूव २ गण्व २ मूह्रानीन न ॥ नागविलाकितवेला लग २ हन वकिजुक्ष महादानूगहप

CC-0. In Public Domain. Sri Aurobindo Library, Pondicherry

गु

स्य ॥ सर्वत्रसर्वे नानौदिसौं वध्यन वकग्रामा वकजयाग कश्यन ॥ वज्रकालाविश्रुद्धन ॥

गुविरहगव ॥ ॥ नकृहूँ ... गा धनी ॥ क्लूकिहूँ पूनिणी क्रव २ अल २ काल निर

वल्लुद्दव ॥ समकन ॥ ... दिन्यादकन ॥ सूमनवनिलि ॥ अहिसिविलुमां स्वा २ १६

मौसर्वक्रलिदाविणी ॥ व ... लरखुलवनि ॥ जय २ विजय २ जयन्तु सर्वत्र सर्वका

लें सिद्धान्तुमञ्च्यविघासाधयमञ्जलैघाच्यविघ्नान् ॥ जय २ सिद्ध २ बुद्ध २ पूरय

आर्षौ विद्याद्भन॥ जया व विजय कलि॥ जयवति॥ तिक्ष्णवतिसमयमनुपालय॥ स
र्वं तथागतहृदयावलो: कयमां॥ सर्वविघ्नावर्ण सत्वानांवा ह्म महादारूणतय
त्य॥ सवन॥ प्रसन्न॥ सर्वज्ञि: दाचिलें ध निलम्नका कार्वं मङ्गलं विशुद्ध॥ विमल
विगतमल॥ सर्वमीनलप विशुद्ध॥ सर्वमंगल विलोचनी॥ किनी॥ सर्वपाप
विशुद्ध॥ मलविगत जयवति। जयवति॥ जैनाकामि क्षिति स्वाहा॥ इति तथागतामृ

[...]हि विन स्वाहा ॥ सर्वविघ्नगण हृदय त्रुट स्वाहा ॥ सर्वदेवता[...]पूजित स्वाहा ॥ सर्वतथाग
हृदयाधिष्ठित स्वाहा ॥ सर्व तथागत समय सिद्ध स्वाहा ॥ इन्द्र इन्द्रवति इन्द्रव्य
लोकित स्वाहा ॥ [...] ब्रह्म [...]मित स्वाहा ॥ विष्णु नमस्कृताय स्वाहा ॥ महेश्वरवं १८
दित पूजिताय स्वाहा ॥ वज्र धर वज्रपाणि बलवीर्याधिष्ठित स्वाहा ॥ धृतराष्ट्राय
स्वाहा ॥ विरूढकाय स्वाहा ॥ विरूपाक्षाय स्वाहा ॥ वैश्रमणाय स्वाहा ॥ चतुर्महाराज नम

स्कन्दाय स्वाहा ॥ यमाय स्वाहा ॥ यमदूतिकाय स्वाहा ॥ वरुणाय स्वाहा ॥ मयूराय स्वाहा ॥
महाकालाय स्वाहा ॥ ज्जु- ...णाय स्वाहा ॥ वासुकये स्वाहा ॥ नागविष्टिकिनाय स्वा-
हा ॥ देवगणे[illegible]भ्यः स्वाहा ॥ नागगणेभ्यः स्वाहा ॥ यक्षगणेभ्यः स्वाहा ॥ राक्ष-
सगणेभ्यः स्वाहा ॥ गन्धर्व- गणेभ्यः स्वाहा ॥ असुरगणेभ्यः स्वाहा ॥ गरुडग-
णेभ्यः स्वाहा ॥ किन्नरगणेभ्यः स्वाहा ॥ महोरगगणेभ्यः स्वाहा ॥ मनुष्यगणेभ्यः

स्वाहा ॥ अमनुष्येभ्यः स्वाहा ॥ सर्वग्रहेभ्यः स्वाहा ॥ सर्वभूतेभ्यः स्वाहा ॥ सर्वप्रेतेभ्य
पु ः स्वाहा ॥ सर्वपिशाचेभ्यः हा ॥ सर्वापस्मारेभ्यः स्वाहा ॥ सर्वकुम्भाण्डेभ्यः स्
स्वाहा ॥ सर्वपूतनेभ्यः स्वा हा ॥ सर्वकटपूतनेभ्यः स्वाहा ॥ सर्वदुष्टप्रदुष्टेभ्यः २०
स्वाहा ॥ ॐ धुरु २ स्वाहा ॥ ॐ तुरु २ स्वाहा ॥ ॐ कुरु २ स्वाहा ॥ ॐ चुरु २ स्वाहा ॥ ॐ मुरु २
स्वाहा ॥ ॐ हन २ सर्वशत्रून् स्वाहा ॥ दह २ सर्वदुष्टान् स्वाहा ॥ पच २ सर्वप्रत्यर्थिकप्रत्यमित्रा

म[illegible] ॥ [illegible] ॥ सर्वभक्षिणी तर्वर्षीणी [illegible] लाय सर्वदुष्टविलनीनां स्वाहा ॥ कलिनि
यन्त्र[illegible]ा ॥ एक[illegible] गायस्वाहा : हा ॥ द्विफकलि गायस्वाहा ॥ वज्रकालायस्वाहा ॥ म
मन्कज्वालायस्वाहा ॥ मा ९ निहन्त्रायस्वाहा ॥ पूर्णहन्त्रायस्वाहा ॥ कालान्तस्वाहा ॥
महाकालायस्वाहा ॥ मा ७ मन्त्रायस्वाहा ॥ यक्षिणीनां स्वाहा ॥ वाकुलीनां स्वाहा ॥
प्रेतपिशाचानां स्वाहा ॥ सर्वडाकिनीनां स्वाहा ॥ आकाशमातॄनां स्वाहा ॥ सन्दुजवासिनी

ग्नि

ध
ए

ग्निस्वाहा॥ नाग्निबलानां स्वाहा ॥ दिवसबलानां स्वाहा॥ क्रिहिक्ष्मावलानां स्वाहा ॥ दलाबलानां
स्वाहा॥ जूबलाबलानां स्वाहा॥ गर्कहवध स्वाहा॥ ग क्रसिंथवली ठठ स्वाहा॥
हुनु२ स्वाहा॥ हुं स्वाहा॥ हूं स्वाहा॥ फु स्वाहा॥ स्फुय स्वाहा॥ ठठ स्वाहा॥ कुरुंदल २१
हा॥ चिलि२ स्वाहा॥ धवलि स्वाहा॥ जलनी स्वाहा॥ अग्निसिवाहा॥ ॐ आवा दुष्टाः
हा॥ चिलि२ [illegible] २ मिलि२ स्वाहा॥ मिलि२ स्वाहा॥ क्षिप२ स्वाहा॥ वं ध्वं२ स्वाहा॥ भी

मार्दं२धस्वाहा ॥ मङ्कलीं वध्यै स्वाहा ॥ सर्वगणकु हुं कुरु २ स्वाहा ॥ जीं हय २ स्वाहा ॥ स्हीं हय २
स्वाहा ॥ छिन्द २ स्वाहा ॥ छिन्द २ स्वाहा ॥ जीं हय २ स्वाहा ॥ स्हीं हय स्वाहा ॥ माह
य २ स्वाहा ॥ मालिनि कुञ्ज: स्वाहा ॥ ह्र्यों विंशु विशु हुं स्वाहा ॥ बीज २ [illegible]
स्वाहा ॥ २ध्मायनि स्वाहा ॥ विं२ध्मायनि स्वाहा ॥ एहि हं स्वाहा ॥ नन्दकेतु २ स्वाहा
निवत्य २ स्वाहा ॥ नीं कालि स्वाहा ॥ भक्तिकः लि स्वाहा ॥ पृश्निकलि स्वाहा ॥ बलवर्द्धिनी

डाकिन

स्वाहा ॥ बलवर्द्धनकालि स्वाहा ॥ श्री कालि स्वाहा ॥ श्री वर्द्धनकरी स्वाहा ॥ श्री कालीनि स्वाहा

थू मृवि स्वाहा ॥ नमः चि स्वाहा । ममनुकी स्वाहा ॥ व नवनि स्वाहा ॥ ॐ सर्वस्थानगतमूर्त्ते

प्रवलविनकरूपसमग्रन्तु ॐ मल ... नि सर्वपापं विच्छिद्य वन्तु ममसर्वमूला २२

नींच स्वाहा ॥ ॐ मूलि २ धिः मूलि २ धनि वतिव नरूपवलि हयविनकरूपहल

नी. वाधि २ वाधय २ वृद्धि सीरसर्वतथानकरूदयकृष्ट स्वाहा ॥ ॐ मूलि २ मूलिवसन्तु हिरि

...नुमों, स्वै ... र, सर्वतथागता ॥ सर्वविद्याधिपतिक्रमहावजकवज्रमुद्रामुद्रिते ॥
सर्वतथागतहृदयाधिष्ठि तकर्म स्वाहा ॥ श्री ०८ ॥ आर्यमहाप्रतिसराया प्रथ
मकल्पः समाप्तः ॥ ॥ ॐ नमो [illegible] वत्यै आर्यमहासाहस्रप्रमर्दन्यै ॥ ॥
एवं मया श्रुतमेकस्मिन्समय भगवान् ॥ [illegible] विहरति स्म ॥ [illegible]
[illegible] लोकनाय [illegible] हिम ॥ [illegible] ॥ [illegible], [illegible], [illegible] ॥

(४६.)

पंभार ८

वव, वावन, वाविन, वाविन, हहल, हमहमन्दवचल, वमवह्निनी स्वाहा ॥ मू अकुम

र्वे मललनीव, सर्वग्रहत्याम् ममाकम्य, महावा जयनाम्नाव लने मध्यो मियकन

वस्वाहा ॥ कर्मोदलु ग्रलोध्द घामि, विघाभक्ष नि ष्णिती ग कथ्या निनाम्ह भू, ली २२

ह्योयथ्यर्द ॥ कनि थैं, हान दं, हुयथ्य, जायकर्णिहनद, हावाएवाफ, हं सण

मिनि, मानिनी नीनिहिंनि, श्रीकुलयिकुलक्षास ॥ हहंहलहलं हहीं ॥ स्वदनी वस

CC-0. In Public Domain. Sri Aurobindo Library, Pondicherry

यवनि, हंगिन, नयरबमनि, वँदानि, यहल्पे, बलाब्वलस्वाहा॥ ॐ मीपालिनवविघ्न,
नस्मिन काल, उद्धालमू: स्याय च्यदं॥ खढ७२ विविढ२ विमल२ लिनववल
वलवनि, वन्द्धवनलनसूभि ननिघाक्षस्वाहा॥ नानागच्छनथयूष्टि, निधूनाह
र्वयापकाश्या॥ नयाक्षा। हूम२ कावहि, वलति, उक्किनी जवव, गलप, हावी:
री, भनि, उन्न किस्वाहा॥ क्षवनिस्वाहा॥ उक्षवनिस्वाहा॥ गन्धर्वस्वाहा॥ पलप

निह्नता॥ सर्वकार्येषु गङ्कडनी ह्वाल॥ तत्रमन्त्रपमनायाकि, ॐ हुं सववर्नर्धयम॥
स्वाघथ्यदं॥ तू कम्या। विं कंमय, रुतघाम शुद्धंगम, दहमी ध्मर, धवधव
दथीनिनिधम, वृवूम॥ रवाखमानंणमर्वंद्वपल, हविमहनहानीनि ह्वाल।
मानिमानि ह्दन, हुणवंग पंच महावक्र हृयानि हौंयिकानि॥ स्वाघथ्य दं॥
महाहाहस्मप्रमर्द्दनी हूं॥ महामायूनी, महाभीमवमी, महाप्रनिहस्वा महामंत्रानुस्ता:

वलीप्रति ॥ स्वाहा हुमालिङ्गे नागिवैव नि हीं ॥ ममसर्वसत्वानांच स्वाहा ॥ ।
आर्य्य महामायूरी भगवती वि द्याराज्ञी ॥ हिर्णिमिञ्जाना मम्भाव नीहमाफा ॥ ...
ॐ नमो भगवत्यै महामायूर्यै ॥ मकर्षजीवनिदवी ॥ हुमस्तलनिबाची ॥ वि घानाहि ।
ह्मामाती ॥ ममसर्वसत्वमाभिर्है नमो बुद्धाय नमो धर्म्माय नमः संघाय ॥ तद्यथा ॥ ॐ
ह्रि विहि कि हि हि हि मिहि नि ॥ त्राहि त्राहि सर्वत ॥ हर्विति ॥ बहु हि ॥ पहि ॥ पिमा विनी ॥

वर्षनी ॥ आवाहनी ॥ उच्चाटिनी ॥ त्रनमव ॥ निवि२मनथमि निरमनथमिम२हूम२ क्रूंह्रिमि
ह्रि ॥ विलघवचपव ॥ हुलु२ जुम्भमल्वि ॥ कालि कालि कला लिमहा कालि ॥ प्रकी
लुकानि ॥ हुलु२व हुलु२ हुलु२ व हुलु२ काना ईवा प ईवा ॥ हुम ईवा ॥ पावाला २२
वलाया ॥ पविवलाया ॥ पिङ्गु पिङ्गु ॥ हिलि हिलि हिलि हिलि हिलि हिलि हिलि हिलि ॥
हिलि हिलि हिलि ॥ १० ॥ किलि किलि किलि किलि किलि किलि किलि किलि किलि किलि किलि

॥ १० ॥वृलवृलवृलवृलवृलवृलवृलवृलवृलवृल॥ १० ॥मृरूमृरूमृरूमृ
रूमृरूमृरूमृरूमृरूमृरूमृ रू॥ १० ॥मृलमृलमृलमृलमृलमृलमृलमृल
मृलमृल॥ १० ॥ रूरूरूरूरूरूरूरूरूरू॥ १० ॥वावावावावा
वावावावावा॥ १० ॥ पापापापापापापापापापा॥ १० ॥जालजाल
जालजालजालजालजालजालजालजाल॥ १० ॥दमदमनि, तपतपनि, जलक

भद्रामा

लनि पवपवनि ॥ हूं हूं हि गर्जनि वर्षनि स्फोटनि तपनि तापनि पचनि पाचनि हारिणि
कानि कम्पनि ॥ मर्द्दनि मलि मिलि कर्म्मफलि मकलि हाकलि डकलि संकलि क
खनि खवलि संकलि कालि हूं म हूं हूं हि ॥ कुरुम भालाया बलाया ॥ पनिक २८
लाया ॥ वर्षन्तु देव समन्तेन हिलि किलि सिलि स्वाहा ॥ नमो बुद्धाय नमो धर्म्माय नमः संघा
य ॥ नमो भगवते आर्य सूर्यगर्भाय ॥ तद्यथा ॥ हुरु हुरु हुरु हुरु ॥ ७ ॥ नाग तत तत ॥

यं वलललं ॥ हूयरविजरथ [illegible] र हूं वजिनिवजिनि । अमलेमला मला । हुं तिमिती
तितिमला हुं तितितितिमल [illegible] हुं लिमिले तितिलिमिले । हुं लिलिलिलिमिले । इयं हृदं
वा । माहमामू [illegible] हा वयला विमला हुं फिलि र हि फिलि र नमाबुद्धानां चि
लिकिसि [illegible] दाहि का [illegible] नमाहमा । प्रातकानां । वज्रगुदवहमकन । [illegible] हृदि
[illegible] हृन माबुद्धानां स्वाहा ॥ [illegible] ॥ हिलि हिलि हिलि हिलि ॥ ६ ॥ मिति मिति मिति मि:

हुलु हुलु हुलु हुलु हुलु हुलु हुलु हुलु हुलु हुलु हुलु हुलु हुलु ॥ १० ॥ २

तिमि तिमि तिमि तिमि तिमि तिमि तिमि तिमि ॥ १० ॥ हुलु हुलु हुलु हुलु हुलु हुलु हुलु हुलु
थ हुलु हुलु ॥ १० ॥ विठि विठि विठि विठि विठि विठि विठि विठि विठि वि
अ ठि ॥ १० ॥ हिकि हि कि हिकि हिकि ॥ ४ ॥ नदवनठ ॥ वकंरनालरव २०
बरहुलरवल स्वृनू स्वाहा ॥ ... ज्ञानी स्वाहा ॥ अहिंमनी स्वाहा ॥ मैत्री पस्यवा
पिसत्वाय स्वाहा ॥ सर्वबुद्ध बोधिसत्वानां स्वाहा ॥ जूनामिनी नीं स्वाहा ॥ नकदामिनी

स्वाहा ॥ आनापन्नानां स्वाहा ॥ सम्यग्गतानां स्वाहा ॥ सम्यक्प्रतिपन्नानां स्वाहा ॥ ब्रह्मणे स्वा

हा ॥ इन्द्राय स्वाहा ॥ ब्रह्म [illegible] हा ॥ ईशानाय स्वाहा ॥ वायवे स्वाहा ॥ अग्ने

य स्वाहा ॥ वरुणाय स्वाहा ॥ यमाय स्वाहा ॥ उपेन्द्राय स्वाहा ॥ वैश्रमणाय स्वाहा ॥

धनाध्यक्षाय स्वाहा ॥ गन्धर्वा धिपतये स्वाहा ॥ विरूढकाय स्वाहा ॥ कुम्भाण्डाधिपत

ये स्वाहा ॥ विरूपाक्षाय नागाधिपतये स्वाहा ॥ देवानां स्वाहा ॥ नागानां स्वाहा ॥ असुरा:

णीं स्वाहा॥ मनुष्यानीं स्वाहा॥ गरुडानीं स्वाहा॥ गन्धर्वानीं स्वाहा॥ किन्नरानीं स्वाहा॥ महोर
थ गनीं स्वाहा॥ यक्षणीं स्वाहा॥ राक्षसानीं स्वाहा॥ प्रेतानीं स्वाहा॥ पिशाचानीं स्वा
ड हा॥ भूतानीं स्वाहा॥ कुम्भाण्डनीं स्वाहा॥ पूतनानीं स्वाहा॥ कटपूतनानीं स्वाहा॥ २५
स्कंधनी स्वाहा॥ अपस्मानीं स्वाहा॥ उन्मादानीं स्वाहा॥ छायानीं स्वाहा॥ पूत
स्मानानीं स्वाहा॥ ब्रह्मरूपिण्या स्वाहा॥ भूतानीं स्वाहा॥ नक्षत्राणीं स्वाहा॥ ग्रहानीं स्वाहा॥

ष्ठा तिष्ठायै स्वाहा ॥ अपिवर्तीयै स्वाहा ॥ सिद्धव्रतायै स्वाहा ॥ सिद्धविद्यायै स्वाहा ॥ ओवीर्यस्वा

हा ॥ भैक्षनीय स्वाहा ॥ ओं पुण्यीय स्वाहा ॥ अमृतायै स्वाहा ॥ अहनिय स्वाहा ॥

कुम्भीय स्वाहा ॥ वायविय स्वाहा ॥ अग्निकिय स्वाहा ॥ गंधलिय स्वाहा ॥ अमृत

कीय स्वाहा ॥ वज्रलिय स्वाहा ॥ मातेनिय स्वाहा ॥ नानन्दमाय स्वाहा ॥ अनू

रुद्रध्याय स्वाहा ॥ मानलिय स्वाहा ॥ महामानलिय स्वाहा ॥ पकजरीय स्वाहा ॥ मा८

शा द्राम:

निरुद्राय स्वाहा ॥ पूर्णरुद्राय स्वाहा ॥ समन्तरुद्राय स्वाहा ॥ महासमन्तरुद्राय स्वाहा ॥ स

प मयाय स्वाहा ॥ महासमयाय स्वाहा ॥ भृकिंगणाय स्वाहा ॥ महाभृकिंगणाय स्वाहा

उ शीलवज्रेय स्वाहा ॥ महाशीलवज्रेय स्वाहा ॥ दण्डधाराय स्वाहा ॥ महादण्ड २८

धराय स्वाहा ॥ मूविलिन्दाय स्वाहा ॥ महामूविलिन्दाय स्वाहा ॥ जयन्तिय

स्वाहा ॥ शान्तिय स्वाहा ॥ पुष्टिय स्वाहा ॥ तुष्टश्रीअजय स्वाहा ॥ अपराजिताय स्वाहा ॥

स्वस्त्य ब्रह्मणे स्वाहा ॥ मयूरक्रान्ताय स्वाहा ॥ महाबलये स्वाहा ॥ मन्त्रपदानी स्वा
हा ॥ महामयूरी विद्याराज्ञी स्वाहा ॥ मयूरक्रान्ताय स्वाहा ॥ आर्य्य महामा
यूरी विद्याराज्ञी भगवती समाप्ता ॥ ॥ ये धर्म्मा हेतुप्रभवा
हेतुन्तेषां तथागतो ह्यवदत् तेषां च यो निरोध एवं वादी महाश्रमणः ॥
देयधर्म्मोयं प्रवरमहायानयायिन्याः ...

ली नाम्र पालका नॉ म्रयानि का नाॅ व दिर्द्धुव तुं ॥ अर्थ अहिताय म्रस्वोय स हविष्य कि ॥
तद्यथा ॥ ॐ भरहैं भवरैम हिंसावत र्वैम ॥ सासदासि ॥ उम्रला ॥ उकजीम ॥
तु उम्रवीना ॥ नमवीना ॥ वि हिं ठिकातनरविमा ॥ कनरविना ॥ ॐ न्द्रा ॐ न्द्र ३०
किम्रमा ॥ हैसा हैसकिमम ॐ नमानि ववभनि वक्र मनि सर्वार्थ साधनि पन
पार्थ साधनि ॥ अप्रतिहते ॥ ॐ न्द्रा नाजा ॥ प्रमावाजा ॥ वन्रू लोनाजा ॥ मनुस्सीनाजा

वासुकिनाजा॥ पमदनिनाजा॥ तक्षकमहापनिनाजा॥ कूरुणवानधर्म्मस्वामिनाजा॥
अनूहेनालोकानुकंपका यकींकुर्वन्तु ॐ॥ परिजानं पवित्र हं पविवा लनं॥
सान्ति स्वस्त्ययनं॥ दत्तुप विलयं॥ डाकुपविहानं विषहूवरीं विघ्ना हनं॥
ष्टीमावन्धयचलीवपक्षु कुर्वन्तुजीवन्तुवर्षंडा कंपपस्यन्तुसनदा शर्कं॥ नघय्म
कंर्षपर्ध॥ हनमलि॥ धनमकि॥ नलमकि॥ लन्कमकि॥ कलमकि॥ अनुमकि॥ हुहूं २२ हं २
लि २

ालीपत्र

वूनु२

वूनुयवूनु२मगि॥ गुमिवं कुकानिक्ष॥ जुहिसँनाविलामलस॥ कुलिक्षुन॥ कुल॥

ल लिवल॥ जयवति॥ गल नाति। वूनुनाति। नागवन्धनि। विमाहनि। मालाहि

७ न॥ भूलुस॥ पलुस॥ कयू न॥ कलुमनि॥ गुनगमस्लमनि॥ धनालिंगस॥ वल २

महावनमहावलावनाकि मस्तूयकुवनुवीनापवानयालिकजयमायाहिनी

वूनुंकुनु२नुयर२वूनुस्थलिविंभूमनि। भूनिधनवनस्यविधनविधमनिविक्षमूलि॥

विनाशनि निर्बंधनी मोहनी विमोहनी ॥ हांघनी विध्वंसनी ॥ हूं कीलनी ॥ हूं क्षिण्डनी ॥ सा
धु गगनमान ॥ गगनस्मान ॥ हन२ खं भूमभि । हिनीश्चविनि रक्षत २ चिरि गि ल ॥ नमो
बुद्धानां स्वाहा ॥ ० ॥ भावल । पूनमहानी नवमी नामविधानाक्षी ॥ एकानव हीनमि
नमीचा नुकासमा बुद्ध रण । वड्डि ३ हाधिनाहाधिषा क्र व पिद्धापनमसिद्धा ॥ सि
ज्यपाक्षमाहर्व द वगन्म नी ना अका नक्षवीह नाग नूत्रा कि न्ववामहानगा दिहिठवेंकिा

॥ श्रीमत

सर्वक्लिनन्तुरापविनाशस्व हवन्तु ॥ सर्वसत्त्वानां च नित्यमारोग्य सर्वदा ॥ सर्वथा प्रसर्वसत्त्व-

त्वानां रक्षावरणगुप्तिं कुर्वन्तु स्वाहा ॥ ९ आर्यमहाशीतवतीनामविद्याराज्ञी समाप्ता ।

ल वतुर्थमन्त्रस्वधावनीसमा प्ता ॥ ९ ॥ ॐ नमो भगवत्यै आर्यमहामन्त्रानुसा ३२

छि प्तिरिक्षे थामन्त्रावतःसमाप्ता नावूषाकं मामन्त्रं यनस्म ॥ एकस्मिन् समये भगवान् सा

नीमन्त्रपदानि तापर्कम्सं ॥ ॐ इमान्यपथा ॥ विहरति स्म विहरवनर२ कूटागारशालायां महता

आज्ञापयति ॥ सुष्ठु र २ सुष्ठु र २ विघातिष्ठतु ॥ निर्गच्छतु २ निर्गच्छतु २ आवृच्छ प्रविशति ॥

वृद्धा लोकानुकंपक त्रवमा ज्ञापयति ॥ हुमु २ हुमु २ हुलु २ हुलु २ हुमु २ हुमु

नुरा प्रविशति ॥ सनु २ सनु २ सनु २ मिनि २ मिनि २ मिवि २ मुनु मिनि २ सनु मिनि २ स

नु मिवि २ मुनु मिवि २ मनु नि ति २ ॥ विवि विवि विवि विवि विवि विवि ॥ १० ॥

ति मिवी २ मी विमी वि ति ॥ हहि मि निति प्रविसति ॥ मिवि हहिती ॥ ककी या २ ककी या २ क

कैवानी हि ॥ हुलील ॥ कर्कीची रकनी ॰ग हि ॥ विविविविविविविविविवि ॥ १० ॥
ल बहुसाची ॥ हुची हुची हुची हुची हुची हुचीम ८ ॥ सर्वाशापयति ॥ प्रवि॰
छ मिसर्वसलहि ॥ ध्यासय ॥ मैत्री विहावी करुणं विहावी उपकावि विहावी एकमलक्रुप ५३
दासिद्धाह सिद्धमथ किना दिना ॥ सर्वसीतव नानाविहला नाविहिदेमिल्य ॥ ॰ह
नना ध्यहमा नाम ॰ नर्थधर्म नसापि वजगमाथि नयापिव ॥ लक्ष्मि वकनलवृह ॥ सलिद

थामहस्कं काः ॥ स्वस्ति सर्वालिहताति ॥ सर्वकार्वं सिद्धमस्तु व यानुक्ष पुन्यनुत्तावन ॥ दवतानीम:

ता नव । मायार्थसमहिप्रगः ॥ सर्वा॰ श्रम समस्त्य तायाः ॥ स्वस्ति वाद्विपदकान्तु ॥ स्वस्ति

यान्तु चतुष्पद ॥ स्वस्ति यात्र जगी मार्गे ॥ स्वस्ति प्रस्थानमम्भूव ॥ स्वस्ति चोऽस्तु स्वस्ति द

वा ॥ स्वस्ति मध्यन्दिने स्वस्ति न ॥ सर्वत स्वस्ति वा हास्तु ॥ मा व श्री पाप मागमत ॥ सर्व स

त्वा सर्वप्राणा ॥ सर्वभूतानि केवला ॥ सर्वे वै सुखिन सन्तु नीरोगमया ॥ सर्वे भद्राणि पश्यन्तु

महामैत्री

सा कायेत्रायमाणम् ॥ यानि कृत्वा निकृमाणि यानि क्लि तानी हृमादर्थमा क...

ल मैत्री हत नं ब्रह्मादि सर्वाः चात्रेव वन कुर्वन्ति ॥ ...कि मत्र कृतानि हृत्वानु हाव

क न दुःखकानी ॥ दवत्रानु हाव न मङ्गलि कृष्णमाघाति ॥ ॥ सूर्य... ३४

कामक्रानु हानं श्रीयक्षव कान्ते कृमानश्री हृमाके ॥ ॥ यवना...

प्रतांचा हृत्र्यामर्यो न श्रगक्यम् ...वदया गर्बी नया वी ना यी ओ वीया दी मैत्रा एवम ॥ उक्तम्

महा २

मानमिकानाथनख्यामनका पाउकैना मथ्रूक्ममूमामनयघा ॥ ॐ माणिपि उँ मखुस्ना मवब्बव ॥
तिलूवनाथिमनर्वंछमाकाउघानवदीबूद्धिश मदाबूद्धिवीयमदावीनवीयवनिवमवतिगतूत
घ्यावनिश्लुवजथमावनिवृघावनाविनाघूतिश्यामामनमूनिदहूं ॥ वृक्षश्रमैयूव ॥
वमवृथ्रद्वमाद्वमयिक्नावकृश्मावृघूटयाकटयूटलासर्वउ ..... कयाघ्याथइमापिश्नवैव२
मव१ गृहूक्न२ यघ्न२ मावश्न क २ दव२ यथ२ मघ२ सवेहानीमवटयावामाहयशद्धिद्व२ ॥

सिद्धस्व बुद्ध्य२ विबोधय२ सर्व्वसत्कु सर्व्वनात्क्ष मादिमां मनुष्यामनुष्याणां। चव२ वेव२ संचाव

निवारय स्फुटय२ भञ्ज२ दलन२ सर्व्वसत्त्व सर्व्वबन्धनं मर्द्दन२ सर्व्वबाधां ...। मम२ मम

सर्व्वसत्वानाञ्च सर्व्वोपद्रवाय समोषयपापस्य स्वाहा॥ नित्यावबन्धस्त्वनसर्व्वपदनादिनिर्व्वाणं ३८

दर्शाम्भवा। ॐ नमः सर्व्वबुद्धबोधिसत्वेभ्यः। ॐ नमस्त्राणि नमः मायास्वस्तिगावः

[illegible] ... गावक्रोडश्रीमपा। शुद्ध विरुद्ध विम

य वज्रयानि श्वम्मस्यर्थ स्वाहा ॥ हूं त्रिवज्रयालि महारक्षा ॥ ॐ नमो भगवते सर्वदुःख
मनीभजावाजयतथागताय अर्हते सम्यक्सम्बुद्धाय ॥ तद्यथा ॥ ॐ ह्रूं ह्रूं २ मनाहन सर्वदुःखानमन यज
स्वाहा ॥ ॥ ३ ॥ ॐ नमो मञ्जुनाथाय ॥ ॐ नमो भगवते वज्र [illegible] कामाय ॥ तद्यथा ॥ ॐ
कृत २ भिन्द २ वन २ हन २ अमृते हूं हूं फट् २ स्वाहा ॥ अमृतरक्षा नाम धारणी ॥ ७ ॥
ॐ नमो भगवते सर्वपायदहनवज्राय तथागताय अर्हते सम्यक्सम्बुद्धाय ॥ तद्यथा ॥ ॐ वज्रे २ मह

वज्रस्तुवज्र स्वाहा॥ सर्व्वपापदहनभवती॥ ❀ ॥ॐ नमो भगवत्नैजयाय॥ तद्यथा॥ ॐ नमो बु

द्धाय॥ महाकारुणीकाय॥ सर्विकल्पहृदयाय॥ ॐ आः श्री [illegible] हा॥ स्वाहा॥ धर्म्मदातायार

वतनथानकर्त्तृ कुम्भन॥ ❀ ॥ॐ नमो श्रीविश्वमयतनये॥ त्रैलोक्यदयनायकस्य कायविर्ल ३

याय मकवलभागिनामनाय। सर्व्वसत्वानांकसार्विं॥ भूम्यिंकुरु॥ धर्माँकुरु॥ सर्व्विंकुरु॥

ॐ आः श्रीं हुं स्वाहा॥ ❀ ॥ॐ नमः कामसनामाकय य नस्वाः कल॥ सम्यक्षौकलः॥

ॐ नमः श्री [illegible] ॥ एवं मया श्रुतं [illegible] समये भगवान् श्रावस्त्यां विहरति स्म।
जेतवने ऽनाथपिण्डदस्य [illegible] नाम महता [illegible] सार्धं [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] माणि [illegible] नामसर्वा।
[illegible] उपसंक्रम्य भगवन्तः [illegible] एकान्ते [illegible] ॥ एकाकी [illegible]
नाम [illegible] ॥ [illegible] भगवन्नमः [illegible]

ॐ यच

शावाभूलहदहिगावाहि कुर्व्वीहि क्वशीबाडयासककावाडयालिकावा॥ तद्यथावाधनयिष्य:

ल गिलुल्सर्व्वकार्य्यालिकर विष्यामि॥ गोत्रादिकतादिवसजिकतोक्षनयिष्य

छ मिवाचयिष्यामि॥ तस्माहि ष्टनधान्याहिरण्यसुवर्ण्णहाजनञ्चअपयिष्यामि॥ ३२

ॐ नमो नलत्रयाय॥ ॐ न मामानितजायामहाप्रकृतनामकयसीकेले॥ ॐ

हिलि२ माणि हुडु हिलि२ माणि हुडुं किलि२ माणि हुडु किलि२ माणि हुडु॥ मिलि२ माणि

रुड्र ङ्गिङ्गि २ मानि रुड्र । [illegible] ङ्गि २ ह्रूह्रू मानि रुड्र ह्रूह्रू २ मानि रुड्र ङ्गिङ्गि मानि रुड्र
ङ्गिङ्गि २ मानि रुड्र ह्रूह्रू मानि रुड्र ह्रूह्रू मानि रुड्र ह्रू मानि रुड्र ह्रूह्रू २ मानि रुड्र । हूहू मानि रुड्र ।
हूहू २ मानि रुड्र स्ह्रूहू मानि रुड्र ह्रूहू २ मानि रुड्र । सर्वार्थ साधय स्वाहा ॥ तद्यथा ॥ यूनन स्रूयून
न स्ह्रू य स्ह्रू । न स्ह्रू म न स्ह्रू यू य क्षिविक्ष कावि स्मूर्णू सिर्द्ध रुड ङ्गिङ्गि २ स्वाहा ॥ ङ्गिङ्गि नि ष्क २
ङ्गि म नि ष्क । ङ्गि ङ्गि मा नि ष्क । स्वाहा ॥ मानि रुड्र ध्यानि ॥ ॥ ॐ नमो रत्नत्रय वैरूर्य ॥

प्रत्यनाज्ञाय स्फयागमनाया २ र्दं नसमर्श्री बुद्धाय ॥ नमथ ॥ ॐ नमो रत्न २ महारत्न यक्ष सुरत्न यक्ष ॥
स्वाहा ॥ ह्लोपधिसाधनम्खबलिम ॥ ॐ नमा वल्लकृयाय ॥ ॐ हूं हूं फट् नामधिजवल
फट् नागस्थाद नन्द्यस्नाय न फट् कानवसानाय फट् अपराजिताय बयवराजमाय फट् फट् कुलकुमः ३
याय फट् फट् त्राकनाक्षय हूं फट् फट् जोमनन्दवाय हूं फट् फट् ॥ आनन्दमस्थादनयनाय हूं फट् यतयिशि
चवितामकाय फट् ॥ ॐ हूं २ मायस २ मस्व २ सर्वविघ्नविनाशकाय फट् नित्यामवयधनाः

य स्वाहा ॥ ॐ नमो भगवते उष्णीषाय नमो रत्नत्रयाय सर्व्वदेवानां नम ॥ तद्यथा ॥ ॐ अन

न २ अमृत्वुन २ धम २ विध्वंद २ विध्वंस स्फो हर २ ताक्ष २ दाक्ष २ वज्रधर वंधवंधनी वज्रपा

णि हूं ॐ हूं ध्रां हूं २ स्वाहा ॥ ॐ वज्रपाणि वध्व वध्व वज्रपाणि सर्व्वविघ्नविनायका

न् हूं हूं ९ फट् २ मोम सर्व्वसत्वानां स्वाहा ॥ पूर्व्व गिरावाता दक्षिणे ॥ — ७१०० ॥

ॐ नमो सर्व्ववुद्धबोधिसत्वानां मूलमन्त्रदानकाश्यनकाम मनकामसर्व्वजीनामृसिमानि भावन

दामम ञ्झल्तुशूल्कदावष्ववमर्थंमममर्ढ्दा। श्चनैत ४ कत्रम्बवययग्रदाशूवव्शूममममम्हान

न्धध्म्रकर्याञ्जमदावीवायह्ना। मम २ भूमह्रमदावनदृ २ म घ्रवनाविकदद २ वजवजी। ३८

काय। ध्व २ ह्रं ह्रं मञुनमम वनायविक्रम। ह्रूं २ हुं २ मर्थनयथादि। ह्रंव २ अर्थ्यागिहूं॥

हूं स्वाहा॥ सूत्रवीवाविद्यामम ... दसिद्धि। ❀ ॥ ॐ नमः श्रीधर्मसिंहाय॥ ॐ

हृदिशक्तिम्ह ... जस्वाहा॥ ❀ ॥ ॐ नमो भगवत्यै आर्य म × श्री × महामायाविजय

मा॥ [illegible] यअतिरूपान [illegible] नमस्तेन महामायावज्रयमादिना॥ सन
सर्वतथागतस्नान स्नूपदा गन्छ२ सर्वजनतोन्हयँ [illegible] यन मभेषु त्रिशायति॥ साहय२ मम सर्व
सत्वानाञ्च सर्वदुःखान्॥ नन्दा२ मीं सर्वसत्वानां आयु सर्व्व कथा प्रदवस्या॥ स्वाहा॥ महामाया
भगवतीय स्वाहा॥ ॐ महिमत्सुनाधिष्ठानाधिष्ठित स्वाहा॥ ॐ वंसध्वव वह्विन युजिनाम्बस्वाहा॥
ॐ यमयालिगीयाय स्वाहा॥ ॐ सर्वदेवतानमस्कृताय स्वाहा॥ ॐ माहगल वह्विन युजिना॥

यस्वाहा॥ ॐ ऊयस्वाहा॥ ॐ वीजयस्वाहा॥ ॐ स्वाहा॥ ॐ अविविभ्रिमस्वाहा॥ ॐ अूयवा जि मस्वाह
ॐ मादनीयस्वाहा॥ ॐ स्मस्मनीय स्वाहा॥ ॐ जस्मनीयस्वाहा॥ ॐ जयक्रियस्वाहा॥ ॐ जासनीयस्
ॐ सर्वासंवदमनीयस्वाहा॥ ॐ मन॰ वर्वदिनयूजितायस्वाहा॥ ॐ मामनूयिनीयस्वाहा॥ ॐ ४०
मायावासियस्वाहा॥ ॐ चचस्वाहा॥ ॐ वूवूर्हूंर्हूं [illegible] दर्मयमयासवदानिमहामायाविः
ऊयवाह्निनीगृह्न २ गीश्र यानि [illegible] कस्मर्द्धकार्यीवानू २ र्हूंर्हूं दूदू स्मा

सा ॥ सं॰ ञमम्हमम्हवाति ॥ ❀ ॥ ॐ नमः श्री ह्वबजाय ॥ ह्वबजाय नमस्तुभ्यं माव

मसायुमद्दिनि ॥ नेमाकेवृलादेन्नं स्वहावत्तं ॥ बेम सयून ॥ स्तुविनर्यं कुगाद्द स्वायक्तु ॥

नेमाल्माख्यागिनी ॥ नमा या यमिता सूद्धे माव सूर्यं नमास्तुभ्य ॥ छ मधा कं जगद्द स्वजाग ॥

स्वयल्मान्कय ॥ भैविवृयध्याबक्ती ॥ स्मा ॥ ह भैनी ॥ नमस्तुभ्य ॥ मादाजीं नं जगद्दस्वजग

स्माल्ह्ममान्कयाभो विवृयध्यावक्ती ॥ स्मा ॥ द्वीबी नमास्तुभ्य ॥ मानाजीं मंजगद्दस्वजाग स्मा

नयग्रोधस्कन्धस्य। वज्रडाकिनीरूपधरानाथी नमो मूलवज्रडाकिन्यै नमः॥ नागार्जुनगृहस्थाजनाः
डागयलोकस्यः। यक्षवषयभषीरूपः। नमोस्तुयमडाकिन्यै नमः॥ समयूक्तासिकदवी। नमो
वविंशकस्य। नमो वज्रडाकिन्यै। दक्षिणे ओम्बिकनमः॥ • ॥ इति संक्षिप्त ४१
श्रीहेवज्रार्च्चनविधि॥ • ॥ॐ नमः श्रीहेरुकनाथेभ्यः॥ पूर्व्वोक्तविधानेन स्वहृदि
हूँ मध्यबीजं यथामन नयूपिनं ॥ नदवनजाम् अर्द्धेन्दुनालिवसिद्धविनौं तनेविनिः

यन्त्रीं हृदयी यीमन्व स्नंक्त वज्रं ओंकारमकृत्वय वीजं कां दजितेन वव दाय ह्मह्नतय वीं ॥
वामनद गुक मगुनूधर्वी । यमवतास न ह्म हावथस्था । गभाभूजी वस्य । हस्य छय यस्याविनाना
कुष्ठनक निष्किका नवं विश्वयय पथकृथ कनोमा वजलद्मना ॥ ः यं हृतुरि मूत्रा । यथा स्नमः
तुउय नूा ॐ स्वाहा ॥ ८ ० ७ ॥ इति हृत्कुटि मानाजाय आलिस ह्मय ॥ ८ ८ ८ ३ ३ ३ ॥
ॐ नमः श्री वज्रसत्वाय ॥ पूर्वाह्न विधान नय धाउ नह्नजस ॥ यर्क्का वंहत ह्नाह्नवं कन्या ॥

मियाख्यैस्फुवर्ण्ठमहाख्याहिं । मङ्गलन्तैं महादेवेउँ वज्रकायसंक्षं । अद्यामहादेवेउँ क्षयः
रोस्तिभगुकें । यज्ञेवृक्षयथा । लाला । मूल बन्ध कव कुर्यां । यत्यांशिदयदनेवतेरनाकतीकयं ।
हनकरमस्वकनस्वा । ॐ आः हूं अक्षरनं । अभिर्षेकावेधानननविल्लवज्रनिमूक्ष्यता ॥ मङ्ग ४२
ॐ हूं २ रूह २ स्वाहा ॥ ० ॥ इति श्रीवज्रहूंकारयोगसाधनवती समाप्ता ॥ ० ॥
अथ श्रीवाह्नयतागाङ्कुवाया न्ह श्री गनक्षनन नमांध्यानिना ॥ एवं वाडिमहत्प्रमन्त्र ॥ उत ॥

ॐ नमो मैत्रीयाय बोधिसत्वाय॥ नमो रत्नत्रये। भक्ष्मल यनथ्यन तायार्हते सम्यक्संबु

द्धाया॥ नमो मैत्रीयाय बोधि सत्वाय महासत्वाय महाकारुणिकाय। तद्यथा। ॐ मै

त्रि२ मैत्रि मैत्रय। हव २ महामैत्रावलोकित। कन२ महासमयसिद्धि। हन२

महा आभिमस्त्रु विन्दाम्ल न२ अस्माकं समयसिद्धि बोधि२ महाबोधि स्वाहा॥

ॐ मोहि२ महामोहि स्वाहा॥ मति२ स्मन स्वाहा॥ अस्माकं निश्यभगवन बोधिसत्व मात्र ९

सं ७।

भवलवावनवठ नस्त्रा श्रयनविकनहावनमाजनयकातेसम्यक्ंवाधिवहिसंक्र

ठस्यांके। कवसंमयास — स्वागवघयिनया। श्राकवसकृर्यामनूकिरायास

म्यर्क्षवाक्ष्ये॥ अंकुकियाः — ल्क्षनिमगालामपिश्रूणवंक्तिणक्षनीमयिकत्कुपू ४२

टेतियतिघातिनयनूत्व — यीसम्यक्ंकाक्षे श्राकवलयातिनयाता॥अक्षात्

वलमाहसकदाविदयायम्भमिनाहविघ्यातिनवायापमलनसियाक।नवमकुःकृता

फु ७

द्वयघघनेनादि व्यकल्यु सहस्रनाज्ञावक्रव लेप्याकविघ्या क्रिया। दनकुल हुंकर्म्मयपमसमल्ला
गता हविर्घ्यानि। यत्कोवि: आ श्वाथि तस्तान्मा तिद्य न्ति॥ नवमयाहेनव सर्वस
लाविस्म ह्वा। जुवस्यं मय याथि मस्तु निमर्ग्रुन सन्ना ज्याकुन नज हया। मह्ना
याभिनु हेनायी सम्म कैवा: क्षेवति॥ ॥ आर्य्यमंत्री यत्ता लिक्का नाम
भवती समाप्त॥ ॥ शुभमस्तु सर्वदा कल्याणमगीलम सदा काली ध्रुव

अमृप

स्तैर्नमस्करणं नित्यं आर्यवसुधारायै ॥ कल्याणि अनेन विधिना प्रतिदिवसमानसैः या ध्यायति वि

प धिवत्तेन सततं मर्थो ॥ पूर्वं कल्याणि सत्त्वं दृहस्तं वसुधारां सर्वलोकजननीं प्रणमाम ४०

क्ष मि त्वं कृत्या ॥ देवीं सर्वसिद्धि बहु महानिधानीं सर्वार्थकारां धनधान्यसमृद्धिहेतु ॥

दानाय देवीं अमृतामवितं स्वर्णकं तां धनाध्यक्ष वसुधारां धनना मा ॥ उत्तरवाच

सम्पद्यतेन लोकपाला दाविद्य ॥ २३ ॥ बहुवसुधारा कल्याणि श्री मा सौभाग्य रूपगुण पुष्ट ...

णवरणि सर्ह्वन्दवाशि तवया दह्मगत्नमामि ॥ यासैं मात्रु कूविषि हिंपत्रिय ण मा ना लक्ष्मी दवा
लिवि मूलीस्तगता यतागर्भि ॥ तान्मावलीं मकलसत्व हिनेदाविहलनाम्ह नमामिम
नय न्वहृधनना मां ॥ याम्ह मयक्षू विचस्मृमृतन्मुदृष्ठे दाविग्रहठ वेद्दविगैस्य
ननर्वभनर्ष्कल्य वकूसह गीं वहक्षनर्सह्नुं हक्मानमामि निवसाक्रगताहिताय
नं ताकवींवत्ल नि यानकाशीं वि वित्तवल प्रणि तामवर्धी । वलावर्की वलमर्थी वि वित्तर्कलम

वसुधा

मिर्व्याविसुधनसार्वा ॥ यावन्तुपालिसङ्ख्ला मवहायर्यनीं त्यागभवकन्सदय ले त्वनमू ध्वः

क ह कीं ॥ हां वार्ईहावव लगैः कृष्णहरू घिनीं गीमायन्ना मामि वसुव ह्विददां सनच

ह लधीं ॥ ० ॥ ॐ नमःश्रीवसुध नाय ॥ नमःश्रीं महादेवी सर्वहलार्थदायिनी ॥ नमः ४२

दिव्यरूपी वसुधारा नम स्तु ते ॥ एवं मया श्रुतम् एकस्मिन् समये भगवान्

कौशाम्ब्यां महानगर्यां विहरति स्म कण्टकीकमहावनखण्डे घोषिलारामे महता भि

कृसंघेन सार्द्धं पञ्चमात्रैर्भिक्षुसंघसतैः ॥ सर्व्वैरर्हद्भिः महाश्रावकैर्वसुंव्यथ(?) र्यथाभिमतैर्महा

सत्वैः सर्व्वबुद्धगुणसमन्वागतै धारणीप्रतिलब्धैः महाबलवेगप्राप्तैः मनवपर्व्वधिकेन वयनिर्व्वृतैः

पूर्व्व ॥ कृत ॥ सर्व्वदाविप्रद्रुत बोधिकुयपरि[illegible]मतैः नाम धर्मपर्यायं सूत्रान्तं भाषते स्म ॥

आदौ कल्याणं मध्ये कल्याणं पर्यवसाने कल्याणं स्वर्थं सुव्यञ्जनं केवलं परिपू

र्णं परिशुद्धं पर्यवदातं ब्रह्मचर्यं संप्रकाशयति स्म ॥ तेन खलु पुनः समयेन कौशीनी धीमहा

नगर्घो ॥ सूत्रद्धानामम्रहयानि॥ प्रतिवलकिस्म ॥ उघरमान्कन्दिया पम कमा नमाबद्ध पूजा॥

वकृहहिन्नावहहरलपवि फनसम्यनत्व॥ आद्धा महामाद्वै॥ तनवसपूल॥ समय

न ॥ यनहनदी ॥ सूनापहेजा कृ॥ उयमर्तु कम्पहगवनत॥ मादोगिवसावन्दित्वाह

गवकमनकशनसद्धेप दन्किसीकृहेकाकन्यमीदत॥ एकान्कनिघर्कृष

सूत्रद्धीनामम्रहयानिर्हगवकमनरघावत॥ पृच्छयम हैहगवन्कनथ्यगनमहन्कैसम्य

श्री वृद्धकविदवप्रदर्श ... भगवानवकाशं कुर्यान्मम प्रश्नव्याकरणाय ॥ एवमु

क्ते भगवान्सर्वनीवरणविष्कम्भि | मनस्त्वावरण पृच्छ त्वं कुलपुत्र यद्यदेवाकाङ्क्षसि

तं तत्प्रश्नव्याकरणेनाहं | ते मनसो तोषयिष्ये । एवमुक्ते सर्वनीवरणविष्कम्भी साधु

भगवन्निति भगवतः प्रत्यश्रौ | षीत् भगवन्तमेतदवोचत् ॥ कथं भगवन्कुलपुत्रो वा

कुलदुहिता वा दशविधा ... दशविधा भवति । ... भवति ॥

प्रति २

वमृश्र ।

अथ बलूलगवाजम न्ने वसृवन्दृण हयनिमकदवावन ॥ किमिनिर्त्वीण हयनिदनिद्र

फ णया ४पविप्रङ्नैप कुसि । प्रर्वैमूकसृवन्द्राण हयनिर्हिगवकमकदवावन ॥

अ दविडाहिं हगवन्दविडाहिं सृगन । वकृपूजावकृइहिन नावकृतयपनि फेन ४१

सीं पन ४ ।नहृणयत्रुलवा स्वर्मपर्म्यायीयनदविडमत्वाजूदविडा । वमू ४

वाभिना ग्व मत्वाजूवा विना । वमृ ४ावकृ धनभान्यावलहवर्त्रु काडकाथोंभवसा

सम्पन्ना ४ लवपू ॥ प्रिय [illegible] मना॥ दर्शनीया ध्व लवपू ४ दानयकया महादा
नपनाय ध्वजूर्ण न्य हस [illegible] नन भ न्य काल कार्श्यां गवा ध्व लवपू ४ मलिमू
क्विप बज्जू र्यलावनि [illegible] बाक नाकपू पवज कना सुमन व कलपम नाग सम्ह
लवपू ४ मूप किष्किन्ह ह [illegible] र्णपू त्र मान क दानिका दासीदासकर्म कन्ध्य
ध्वकं जनसीय पन्ना कृदम्वा लवपू ॥ ५ ॥ एवं मूक्र लगवा न्सर्वा भा पवि पूवक ला व्रक्ष स्वयल

सुवन्दुन्दहृपतिमनदवायत ॥ सूक्तिगरुणगहृतपूर्वमतीमध्यन्यसंत्यसपूकलपसूय

दासीहृनक्वासननतसम यनवकधवसागचनिर्घाघानामकथ्यगमाहैन्सम्य

ह्रींवृक्षालाकउदमादिर्ति माषवनसम्यन्न ऽसूगमालाकविदन्नहृव ऽमूनुमद ४८

म्यसानथि ऽनमस्ता दवाना ऽमनूषाणासवृक्षाहगवाकत्याक्तिकान्मयाकृल

वृतवहृपनानामयावनणी ऽत्वाउहै हीनाक्षविनावाक्विणादतिनायर्याविलाफाजूनूमादि

नाघनचये स्थ विक्रचल हँयकालिनाजूहमयालहिगङ्लपुत्रमीश्चव्याँ तथकाधिष्ठ्यन्को
यथ्यजूयाश्चनस्थाप्रश्नः दनङ्लपुत्रमानुष्यानविह०यङ्कि ॥ जूमानुष्यानवि
ह०यङ्कि ॥ देवानविह० ङ्कि ॥ नागनविह०यङ्कि ॥ यक्षानविह०यङ्कि ॥
असुरानविह०यङ्कि ॥ ग रुडानविह०यङ्कि ॥ किंनरानविह०यङ्कि ॥ प्रेता
नविह०यङ्कि ॥ पिशाचानविह०यङ्कि ॥ कुम्भाण्डानविह०यङ्कि ॥ डाकिनकान

वसञा

फु

विहठयन्ति ॥ अपस्मारान विहठयन्ति ॥ गन्धर्वान विहठयन्ति ॥ किन्नरान विहठयन्ति
महोरगान विहठयन्ति ॥ भूतान विहठयन्ति ॥ कटपूतनान विहठयन्ति ॥
सर्वग्रहान विहठयन्ति ॥ सर्वदेवान विहठयन्ति ॥ कृत्यिपाशान विहठयन्ति ४९
सर्वाहानान विहठयन्ति ॥ उर्वैसावत्स्यामाहाना ॥ कुलाहानाठ घताहानाठ प
शाहानाठ आर्कैक्षहानाठ मलाहाला ठ गन्धाहानाठ धूपाहानाठ दीपाहानाठ माल्या:

हाबा४। श्रूमूर्ला हाबा४। ओहा हाबा४। हृदा हा बा४। नवग्रहा हाबा४। नक्षा हाबा४। मान्मा हा
बा४। भर्ता हाबा४। अङ्कुशा हा बा४। मर्ज्जी हाबा४। बुधिबा हाबा४। तुङ्गा हाबा४। जी
वि तां हाबा ४। सर्वनिवि हे ० यक्षि ॥ अवैया वह्निश्च हाबा४। मृत्रा हाबा४। स्वान हा
बा४ सिं हानका हाबा ४। ध्री वा हाबा ४। क्लिन्ना हाबा ४। स्मान्दि, निका हाबा४। बान्
हाबा ४। लूष्मा हाबा४। रक्तिश्वा हा बा४। जुन्ट्किश्च हाबा४। गम्ना हाबा ४। गर्क्का हाबा४। म

नाम्

र्वेन विहरन्ति ॥ सम्वृता किन्यानविहरन्ति ॥ स्मशान विहरन्ति ॥ ज्ञानान विह

रन्ति ॥ हावनाहावा ४ नृपाहावा ३ गवाहावा ४ गन्धाहावा ॥ वसाहावा

७ स्पर्शहावा २ सुहृद्योहा वा ४ नानानृपाहावा ४ विनृपाहावा ४ अनन्त नृ १०

णोहावा ४ कामनृपाहावा वस्त्राहावा ४ वस्त्राहावा ४ अनृणुवाहावा ४ विवि

धाहावा ४ यावद्दृष्टि स्वाहावा ४ न विहरन्ति ॥ यावज्जीवना ४ हतवर्वै ना ४ अनृणवि

१५,४४२

…वनाथ पाताल वनाथ कुल वनाथ जल वनाथ यन वनाथ सर्व्वेन विहृ… यः किं ॥ एव

श्री मम सर्व्वसत्वानां ॐ मह… … हूं फट् … नाय … नाय … हन साय हूं २

… सर्व्वदुःखानां सर्व्व … लक्ष्मी मानय २ … धय य २ … कम्प य २ वन्ध य २ हन २ म… २

पच २ मन २ मानय २ सर्व्व … नागाय २ हूं २ फट् २ स्वाहा ॥ यस्य … कुल … सर्व्व

कुल … हि … कुल पू… श्री … यक … नाम मे धारनी … दय … हृदय …

वसुधा

७

तापूर्णगता । दक्षिमातृगता ॥ पश्चिमायां मनसा स्मृताऽनिवृत्तिकाख्याविता वागिता लि

ति ताञ्जनमादिता यावत्तं निवृत्त्यश्च विस्तरेण संप्रकाशिता । तस्य कुल पूरुष

कुलं हि तुर्यादीर्घमाक्रम र्थाय हितायसूत्रोच्य ॥ सूहि कायपाणमंहितायमह ३१

विद्याति । शान्त्यतीत्वमासद्ध वानामध्यवणीकथ्यमानगत्या ॥ ७ ॥ समाप्तां वृद्धा

ठाडमाबीस्तूर्णां शत्वा नमस्कृत्वा ज्ञानं कीयत । सर्वशक्षणकानां सर्वेषां चक्रपञ्चकषमा

५

नोसर्वबुद्धबोधिसत्वानांसर्वतथागता सर्वमुद्रा मन्त्र विद्याधरा सर्वपूजा हि ॥ पूजयन्त
पूर्ज्ञ वान्त्र हिवन्द्र र्वावालि ॥ तस्युदेवता अष्टसहस्त्र ॥ प्रमुदिता ॥ श्रीकिसामनस
मानावाबयमुं ॥ नदाहमव श्री र्योवसूय नाथ स्वयभवागहृ यन भान्य हिवन्यवर्ति
यानयियघ क्रि श्री व्योमय्य: गन ॥ मसनश्री व्योवृद्धपक्रूस्या ॥ श्री व्योधर्मजक्रूस्या
श्री व्योसंघपक्रूस्या ॥ श्री व्योसर्वश्रावकप्रत्येकवृद्धपक्रूस्या ॥ श्री व्योपंचकूलावहि नमूजा

वसु॰ ५२

मन्त्रविद्याधरवकाप्रकृत्या ॥ धीलोधर्मा दानकसाः यन ॥ ० ॥ ॐ नमो रत्नत्रयाय ॥ ध

ॐ नमो भगवत्या आर्यवसुध राये ॥ ॐ नमो भगवते श्रीवज्रधरसागरनिर्घोषा

य ॥ तथागतायार्हते सम्यक्सं बुद्धाय ॥ ॐ नमः सर्वतथागतेभ्यो र्हद्भ्यः अतीतानागतप्रत्युत्प ४२

न्नेभ्यः ॥ ॐ नमः कूर्मिकवर्म तथागतस्य ॥ ॐ नमो वज्रधरसागरगर्जितस्वरकथं ग

नत्ये ॥ अतृजनु गत्वा फरये विचिकथा दिल्ये ॥ श्मश्रूकुसुम निर्यादान यावमिताय निष्कृष्टुं लोकव

श्री

सुठाविपञ्चिमसकजहसाञ्जावमिलिन स्तथा विश्वकुप्रकृयाचेवकुकुञ्छन्दव लनवकत

कमूनतिलकायाकात्यप्रस्र नुलेनदि ठश्मक्कहिं हत्यवी यसमित्रयसत्यप्रतिकृयाः

समष्ठनुमनयनतनम ॐ भमनुपदाठ॥ सर्वसत्वाहिताविधानानिग्रव्याविठ

व वासनाञ्जु वमावकत्यः ॥ॐ नमो वसुधानानामधावर्णी विधानहस्रं प्रवक्ष्यामि

तथ्यानतकाविनहार्थमनुपमा न्यनुस्मवामि॥ तथथा॥ ॥ॐ कुं हुं श्री धन २धने स्व

थ्व गुरु क्रमानाम् कृत्यकायाद्वविधि [illegible] कोत्याव दनिसें माहनि मनम्हिसा यनि मना ॐ ध्यसा थनि सा

९ यनकर्कंनि ॥ कादह्काहा यनकाठीग्य सर्व्वनल वस्त्रा लीकावाहल स्मनि

त्रि यनथन्यपु ङ्हिं कनि [illegible] कात्य हि हेमाहनि । [illegible] कृत्य कागकाछाभनदाहनि ४२

वहत्यकर्मक्रमपह [illegible] बुद्धबुद्धसरण ॥ धर्म्मसरण ॥ संघसरण ॥ सर्व्वबुद्धबोधि

सत्वसरण बोधिप्रज्ञान सत्य सर्व्वदेव नक प्रत्येकबुद्धसरण ॥ ब्रह्मसरण ॥ विष्णुसरण ॥ रुद्र

सत्ये, लोकपालसत्ये। धनदधर्मा[illegible]। धर्मविहितरत्नसु[illegible] मणि मुक्ति वज्र वैडूर्य

शंख शिला प्रवाल[illegible]ं रूप्य कनक मरक[illegible]मना। इन्द्र नील कर्केतन

सर्वद्रव्यसमृद्धयथ[illegible] श्रीश्री हिमहस्तानीमाधिपती कात्यायनि ॥ एकाहि ह

नवनिवस्थनमानवनसी नवकुसत्यसत्यवादिनि ॥ ॐ वव [illegible] मूलू

ललललल ॥ ललललं ॥ हिरि २ मिरि २ सन २ संसन २ विड्ढहा। नक्का नक्कहगवनिव:

वसुधा

सुखं च मम सर्वसत्वानां च हृत्साधकानां मम ॥ हुं क्षगर्भे यपवि पूरय २ ऽह्रि ह विघ्नां सर्वबुद्धा

७ नां हृदयं च अष्टसमाक्षरयषि स्वाहा ॥ नमस्त्रैयध्विक [illegible] सर्वतथागतानां ॥ तद्यथा ॥ ॐ

क वसुधारायै नमः ॥ ॐ नमः रत्नत्रयाय ॥ ॐ नमो वज्रधराय ॥ महाकारुणिक ७८

[illegible] लवय आर्यसिमूर्णलय नमः पादपीठहीन हस्काय ॥ ॐ जम्भलकुलि खबला

[illegible] ध्वं २ हन २ दह २ पच २ मथ २ मारय २ गर्ज २ गर्जय २ विस्फर २ सर्वबि

[illegible] नी महाशान्तिश्रीबीजांक कवाय हूँ २ फट् स्वाहा ॥ ॐ सूक्ष्म निसृष्ट हूँ । फट्क्र
हूँ २ क्रायय २ हूँ आनय हा हमव निमाचाफ हूँ २ फट् स्वाहा ॥ ॐ वज्रयकहन हूँ
फट् स्वाहा ॥ ॐ आहविलम हाव ल हूँ स्वाहा ॥ ॐ आः ठ हूँ स्वाहा ॥ ॐ आठगितानय
त्र हूँ स्वाहा ॥ ॐ मणिपद्म हूँ स्वाहा ॥ ॐ वज्रधर्म हूँ स्वाहा ॥ ॐ सर्वविशुद्धिधर्म
णावज्रसिद्धि हूँ फट् स्वाहा ॥ ॐ सर्वतथागतज्ञानपाणीश्वर हूँ स्वाहा ॥ ॐ सर्वतथागतकव

वसुधा

य हूँ स्वाहा ॥ ॐ वज्र हूँ २ महावज्र हूँ श्रु सिद्धि मणि विजय स्वाहा ॥ ॐ बलवृक्ष वृन्द स्वाहा ॥

नमया । ॐ श्री सौम्य रूप स्वाहा ॥ ॐ श्री दिव्य रूप स्वाहा ॥ ॐ श्री दीर्घ रूप स्वाहा ॥

७ ॐ श्री वज्र रूप स्वाहा ॥ ॐ सौम्य रूप स्वाहा ॥ ॐ श्री लक्ष्म स्वाहा ॥ ॐ श्री रूप मकर स्वा

हा ॥ ॐ श्री रूप मोहन स्वाहा ॥ ॐ श्री रूप मणि स्वाहा ॥ ॐ श्री [illegible] रूप स्वाहा

ॐ श्री ज्ञान रूप स्वाहा ॥ ॐ श्री वज्र पाणि स्वाहा ॥ ॐ श्री वज्र [illegible] स्वाहा ॥ ॐ श्री

डस्वाहा ॥ ॐ श्री हहड स्वाहा ॥ ॐ श्री हृडमनी स्वाहा ॥ ॐ श्री सहृडमनी स्वाहा ॥ ॐ श्री मर्गलस्व

हा ॥ ॐ श्री हमर्गलस्वाहा ॥ ॐ श्री मर्गलमनि स्वाहा ॥ ॐ श्री हमर्गलमनी स्वाहा ॥

ॐ श्री आलय स्वाहा ॥ ॐ श्री बन्धु स्वाहा ॥ ॐ श्री हबन्धु स्वाहा ॥ ॐ श्री बन्धुमनि स्वा

हा ॥ ॐ श्री हबन्धुमनी स्वा हा ॥ ॐ श्री जूलजूल स्वाहा ॥ ॐ श्री जूमल स्वाहा ॥

ॐ श्री विमल स्वाहा ॥ ॐ श्री निर्म्मल स्वाहा ॥ ॐ श्री मललालनिय स्वाहा ॥ ॐ श्री बलबल स्व

वसुधा

हा ॥ ॐ श्री सुवल स्वाहा ॥ ॐ श्री सुवलयल स्वाहा ॥ ॐ श्री उत्पातनिवर्त स्वा ॐ श्री ऽहृदनि

स्वाहा ॥ ॐ श्री उत्पन्नानि स्वा हा ॥ ॐ श्री उत्पादनि स्वाहा ॥ ॐ श्री त्रियकवि[illegible]हा ॥

९ ॐ श्री प्रीतिकवि स्वाहा ॥ ॐ श्री त्रियक्षकवि स्वाहा ॥ ॐ श्री वंकनि स्वाहा ॥ ॐ श्री गु ५८

ध्र हिकवि स्वाहा ॥ ॐ श्री श्री [illegible] वि स्वाहा ॥ ॐ श्री कीर्त्तिकवि स्वाहा ॥ ॐ श्री लक्ष्मी [illegible]

वि स्वाहा ॥ ॐ श्री सत्यवति स्वाहा ॥ ॐ श्री नयावकि स्वाहा ॥ ॐ श्री धनकवि स्वाहा ॥ ॐ श्री

धनधान्यकरि स्वाहा ॥ ॐ श्री धनवति स्वाहा ॥ ॐ श्री धान्यवति [स्वा]हा ॥ ॐ श्री धनर स्वाहा ॥ २
ॐ श्री धनेश्वर्य्य स्वाहा ॥ ॐ श्री श्रीमति स्वाहा ॥ ॐ श्री ब्रह्मावमति स्वाहा ॥ ॐ श्री रत्नसु
हा ॥ ॐ श्री मृत्युपमर्द्दन स्वाहा ॥ ॐ श्री विनमन स्वाहा ॥ ॐ श्री विपुलन [स्वा]हा ॥ ॐ
श्री कृत्यमन स्वाहा ॥ ॐ श्री शुक्लयका स्वाहा ॥ ॐ श्री धनदमोक्षप्रद स्वा[हा] ॥ ॐ
श्री लक्ष्मीप्रद स्वाहा ॥ ॐ श्री सर्वमहाविप्रद स्वाहा ॥ ॐ श्री धनद धनद पूजि[त स्वा]हा ॥ ॐ श्री धू

जनीयस्वाहा ॥ ॐ श्री जूर्विनीयस्वाहा ॥ ॐ जूर्विनाक्षस्वाहा ॥ ॐ श्री जूननक्षस्वाहा ॥ ॐ श्री वि
७ ननक्षस्वाहा ॥ ॐ श्री जूननक्ष विननक्षस्वाहा ॥ ॐ श्री विनमक्षस्वाहा ॥ ॐ श्री विन्धक्ष
अ स्वाहा ॥ ॐ श्री विन्धकानिस्वा हा ॥ ॐ श्री विन्धकूपस्वाहा ॥ ॐ श्री विन्धर्विस्वाहा ॥ ॐ ६०
श्री क्षविगुडकूपस्वाहा ॥ ॐ श्री विगुडणीलस्वाहा ॥ ॐ श्री विकुलि विकुलिप
विकुलस्वाहा ॥ ॐ श्री विकुलिपस्वाहा ॥ ॐ श्री जूंकुलस्वाहा ॥ ॐ श्री मध्वीस्वाहा ॥

ॐ श्री प्रहंकुलस्वाहा ॥ ॐ श्री आमाधाक्षिंमाजः ४ हूं वं हाः ४ स्वाहा ॥ ॐ श्री ह्रूं स्थमीद्विप्रवलि
निस्वाहा ॥ ॐ श्री आकर्षलि स्वाहा ॥ ॐ श्री आगमनिस्वाहा ॥ ॐ श्री प्रवगनिस्वाहा
ॐ श्री विविमस्वाहा ॥ ॐ श्री वृवृमस्वाहा ॥ ॐ श्री धनधर्म्मस्वाहा ॥ ॐ श्री धिधिमस्वा
हा ॥ ॐ श्री धृधृमस्वाहा ॥ ॐ श्री वेवेमस्वाहा ॥ ॐ श्री वृवृमस्वाहा ॥ ॐ श्री नानर
स्वाहा ॥ ॐ श्री नानानरनावमतवृत्तविवृ नाव यर स्वाहा ॥ ॐ श्री नानयगुमी हनवानि

श्री २

वसुधा

७

वसुधाना नाम सर्वसत्वानांव स्वजनमनस्वाहा ॥ ॐ श्री भगवति ॐ श्री वसुधारायै स्वाहा ॥
ॐ श्री भगवति वसुधारा नाना सर्वतः श्री मम महाविभव वसुधा पिकवि स्वाहा ॥ ॐ
श्रीकल्पमहाकल्प स्वाहा ॥ ॐ वज्रापर्व स्वाहा ॥ ॐ श्री महावज्रायपर्व स्वाहा ॥ ॐ श्री
धावर्तनि स्वाहा ॥ ॐ श्री वर्तनि स्वाहा ॥ ॐ श्री निष्पादनि स्वाहा ॥ ॐ श्रीवि
सृष्टचरे स्वाहा ॥ ॐ श्री वसुधाचान्द्रे स्वाहा ॥ ॐ श्री वसुधा कृत्स्न स्वाहा ॥ ॐ श्री चन्द्रे स्व

५७

हा ॥ ॐ श्री ० र्क्के स्वाहा ॥ ॐ श्री त का स्वाहा ॥ ॐ श्री ङ र्क्के स्वाहा ॥ ॐ श्री ठ र्क्के स्वाहा ॥ ॐ श्री
वृर्क्के स्वाहा ॥ ॐ श्री ट र्क्के स्वाहा ॥ ॐ श्री प र्क्के स्वाहा ॥ ॐ श्री वर्धलि स्वाहा ॥ ॐ
श्री प्रवर्धलि स्वाहा ॥ ॐ श्री ड ब्मपनि म स्वाहा ॥ ॐ श्री कजयवस्मान व न क्षिव निर्घ
घनघ ग म सत्य मनूस्म र्व क्ष स्वाहा ॥ ॐ श्री सर्व धर्म सत्य मनूस्मन स्वाहा ॥ ॐ श्री स
विशिघ सत्य मनूस्मन स्वाहा ॥ ॐ श्री ट ट २ मम सपनि वा न स्य सर्व सत्वानी व सर्वांग ॥ घवि
ॐ श्री सर्व तथागत कल मनूस्मन २ स्वाहा ॥ ॐ श्री सर्व वृक्ष सत्य मनूस्मन २ स्वाहा ॥ २

ब्रह्या

८७ सूर्यकान्तममसर्वसत्वानां छन्दहेतुआकाशगनमा पृथिवीगनमा। जलगनमा स्कन्धगनीवा
सूर्यकीगगनमा हेमीगगं मास्वर्णगनमा, मणिगनीवा, पातालगनमा समुद्र
नमा, स्फटिकयागनमा, स वित्रगनमा, पद्मगगनमा, रत्नवणिवत्नधानभूमि ८२
नहेमलिमूर्तिवज्रवैडूर्य नीलमणिलापवात्रआगन्तुपकजनमवगगाद्धेमवग
लकर्कोठनयमानागं कुन्दनीलांलिशेवर्ण्णवजनमामलाहयअद्धमूलकीवादीनिव

ग्रैनयान्नीलि।

ऊनकथन थन्नवतुः षष्टिव्रीहि समन्धानि वममम सर्व्वसत्वानाञ्च कायू कामूक्षानानिः
वमसर्व्वपिक वणानिरुव रुवणिस्वाहा ॥ॐश्री ममयदिपूनयस्वाहा ॥ॐश्रीः
मङ्गलस्वाहा ॥ॐश्री सम मङ्गलस्वाहा ॥ॐश्रीमङ्गलमणिस्वाहा ॥ॐश्री सममङ्गल
मणिस्वाहा ॥ॐश्रीमान्ः मणिस्वाहा ॥ॐश्री महागुरुमणिस्वाहा ॥ॐश्रीमणि
स्वाहा ॥ॐश्रीमहार्थमणिस्वाहा ॥ॐश्रीब्रह्मा [illegible] स्वाहा ॥ॐश्रीरुद्रमणिस्वाहा ॥ॐश्रीअः

यमनि स्वाहा ॥ ॐ श्री विजयमनि स्वाहा ॥ ॐ [illegible] स्वाहा ॥ ॐ श्री शुद्धिगोमुखनक्षत्रमणि:
निमहामञ्जश्री स्वाहा ॥ ॐ श्री महारागाकमनि स्वाहा ॥ ॐ श्री महायोधिमनि स्वाहा ॥
ॐ श्री सर्वज्ञनवगंकवी: स्वाहा ॥ ॐ श्री सर्वदेशुनिक्षत्रनि स्वाहा ॥ ॐ श्री सर्वग ७०
मृविनागनिद्रूह्स्वा: हा ॥ ॐ श्री अनन्तगर्भसमयमनुस्मर स्वाहा ॥ ॐ श्री
हृदयमनुस्मर स्वाहा ॥ ॐ श्री हृदयहृदयमनुस्मर स्वाहा ॥ ॐ श्री स्वकायमनुस्मर स्वाहा ॥ ॐ श्री

मतिमनुस्मन स्वाहा ॥ ॐ श्री जम्भमनुस्मन स्वाहा ॥ ॐ श्री हर्षहस्त मनुस्मन स्वाहा ॥ ॐ श्री स

र्वंतथागतविनयमनुस्मः ... य स्वाहा ॥ ॐ श्री वसुधारन स्वाहा ॥ ॐ श्री वसुधा स्वाहा

ॐ श्री वसुधे स्वाहा ॥ ॐ श्री व ... सुमुखि स्वाहा ॥ ॐ श्री वसुधारन स्वाहा ॥ ॐ श्री सवसु

धे स्वाहा ॥ ॐ श्री वसुधेवि ... स्वाहा ॥ ॐ श्री वसुमतिश्रिय स्वाहा ॥ ॐ श्री वसुधारन

ी य स्वाहा ॥ ॐ श्री वसुमतिश्रिय स्वाहा ॥ ॐ श्री वसुधारन धनलिधानि वसुधारन नाः म

वसुधा

स्वाहा ॥ ॐ श्रीलक्ष्मीकवि स्वाहा ॥ ॐ श्रीलक्ष्मी निवासनीय स्वाहा ॥ ॐ श्री महालक्ष्मी रुक्
लमिकसनीय स्वाहा ॥ ॐ श्रीवसुन्धे स्वाहा ॥ ॐ श्री पद्मीकनि धनकनिधान्य
कविश्री स्वाहा ॥ ॐ श्रीवसु धनश्री स्वाहा ॥ ॐ श्री समयसिन्धा समयकनिसक ६१
समय स्वाहा ॥ ॐ श्रीधनध न्य समय श्रीकनि वसुन्धनिवसुन्धे स्वाहा ॥ ॐ श्रीव
सुधन स्वाहा ॥ ॐ श्रीवसुधान्य श्रीकिरणवति समय मनुस्मर हि हि कुरु मम स्वाहा ॥

सु
श्री

ॐ श्री वसुधारे धनधान्यवतीवरप्रदायै सर्वधनधान्यवस्त्रालंकारसर्वश्रीयादिहि २ सर्वोपकर
णे ३ मम सिद्धिं ददहि गभस्ति पूर्णिं विर्णीं सिद्धिं ३ दापय स्वाहा ॥ ॐ श्री धनधान्या
यवि स्मह सर्ववस्त्रालंकार सर्वोपकरण भनि धीमहत नाग्रीवह अवनीप्रया
दयायै स्वाहा ॥ ॐ श्री क्लीं ३ स्वाहा ॥ ॐ ल ३ स्वाहा ॥ ॐ क्रौं ३ स्वाहा ॥ ॐ स्वाहा ॥
ॐ श्री ह्रां ३ स्वाहा ॥ ॐ मानधाक्रवदद्गनागा मिनिनिमूनूल्य नानीडक्या धर्मसृत्यादनिडस्य

ब्रह्मा

बु
द्धि

ञ्चिनाक्षुडव्याणवृद्धिकनिद्दिलि २ कूलि २ कंण्ठ २ अुन क्षान कुहलवनि माविलंवम

मसर्वसत्वानाक्षु मनाव र्थं यानिपूनयदलाहाेदिन्हु ४ यथ्याेद कव्हान ४

पनिपूनयनिमहीयथ्य हाल्कैनीनमिनाविथमयनिस्मनमाक्षिकुकौकग ५२

नालिनमक्षिमिनं यथ्यान लिनाँगुनाजुञ्चायनिसर्वाे घथ्य थयथ्य महाय

धीनाँसर्वनागनाशयनि ॥ धनदावनूणथ्येवकूत्राथेवह्वनकथ्य । घथ्यवहनम

नानुगामिनी सिद्धिर्विकल्पयन्तु तत्कर्म्म संघ ॥ सर्व्वाप्ययकर्ष ॥ यथाकामं सिद्धान्कां मन्त्रमप

नीहा । तद्यथा ॥ ॐ छिंद २ भिंदि २ खुरु २ छुरु २ मुरु २ हुरु २ मुरु २ चुरु २ सर्व्ववि

दहि दह विध्यस्वाहा ॥ ॐ उच्छिन्नहि नव्य मूर्वर्द्धे ध्यन स्वाहा ॥ ॐ जुन्न पाताय

स्वाहा ॥ ॐ वह्न निध्यय स्वाहा ॥ ॐ वह्न ध्यन स्वाहा ॥ ॐ वह्न ध्यधिपतय स्वाहा ॥

ॐ वह्न ध्य स्वाहा ॥ ॐ नौध्नीय स्वाहा ॥ ॐ भ ध्यनीय स्वाहा ॥ ॐ हवरह स्वाहा ॥ ॐ रूं

इन्द्राय स्वाहा ॥ ॐ पाञ्चिकाय स्वाहा ॥ ॐ यमाय स्वाहा ॥ ॐ वरुणाय स्वाहा ॥ ॐ वैश्रवणाय
स्वाहा ॥ ॐ विरूपाक्षाय स्वा- हा ॥ ॐ विरूढकाय स्वाहा ॥ ॐ धृतराष्ट्राय स्वाहा ॥ ॐ
कुवेराय स्वाहा ॥ ॐ कृशाने: य स्वाहा ॥ ॐ नैरृत्ये स्वाहा ॥ ॐ वायव्ये स्वाहा ॥ ॐ ई-
शानाधिपतये स्वाहा ॥ ॐ भूनकाय स्वाहा ॥ ॐ कुलिशपालाय स्वाहा ॥ ॐ वासु-
किये स्वाहा ॥ ॐ शंखपालाय स्वाहा ॥ ॐ तक्षकाय स्वाहा ॥ ॐ महापद्मनागाधिपतये स्वाहा ५३

ॐ जम्भल जलेन्द्राय स्वाहा ॥ ॐ सूम्स्याधिपतये स्वाहा ॥ ॐ सूर्य्यग्रहाधिपतये स्वाहा ॥ ॐ
चन्द्रनक्षत्राधिपतये स्वाहा ॐ दिशि लोकपालाय स्वाहा ॥ ॐ विदिशि लोकपाला
य स्वाहा ॥ ॐ सर्व्वलोकपाले य स्वाहा ॥ ॐ सर्व्व धनधान्य सुवर्ण्णनिधानि मां देहि
ददापय स्वाहा ॥ ॐ वसुन्ध स्वाहा ॥ ॐ वसुधाधिपतये स्वाहा ॥ ॐ सर्व्वदेवाय नमः
स्वाहा ॥ ॐ सर्व्वयक्षाधिपतये स्वाहा ॥ ॐ सर्व्वग्रहाधिपतये नमः स्वाहा ॥ ॐ सर्व्व पिशाच

षस.धा

पि पतये नमः स्वाहा ॥ ॐ सर्व्वनागाधिपतये नमः स्वाहा ॥ ॐ सर्व्वक्षाधिपतये नमः स्वा
हा ॥ ॐ सर्व्वप्रेताधिपतये नमः स्वाहा ॥ ॐ सर्व्वभूताधिपतये नमः स्वाहा ॥ ॐ
सर्व्वमातृकाय नमः स्वाहा ॐ सर्व्वडाकिनीभ्यो नमः स्वाहा ॥ ॐ सर्व्वमहाकाला
य स्वाहा ॥ ॐ सर्व्वमातृनिभ्यो नमः स्वाहा ॥ ॐ सर्व्वहमिभ्यो नमः स्वाहा ॥ सर्व्वः
हृतनीभ्यो नमः स्वाहा ॥ ॐ सर्व्वपिशाचनीभ्यो नमः स्वाहा ॥ ॐ सर्व्वयक्षणीभ्यो नमः स्वाहा

पू

क

६४

नमः श्री मम सर्व्वसत्वानां च धनधान्याहर्त्तुं निधानानि मे ददायय स्वाहा ॥ ॐ जम्भल जलेन्द्र
य सर्व्वद्रव्यानि देहि मे ददा यय स्वाहा ॥ ॐ आर्य्यवसुश्रिकिर्त्ति श्रीवास हूं स्वाहा ॥ ॐ म
लिपद्म हूं स्वाहा ॥ ॐ वज्र पाणि सर्व्व वज्रधर हूं स्वाहा ॥ ॐ जम्भल जलेन्द्राय
हूं वं स्वाहा ॥ ॐ मालिनि द्राय स्वाहा ॥ ॐ पूर्ण्ण हृदयाय स्वाहा ॥ ॐ वैश्रवनाय स्व
हा ॥ ॐ धनदाय स्वाहा ॥ ॐ धनदमहाधनदाय स्वाहा ॥ ॐ नन्दादेवी नमः स्वाहा ॥ ॐ ह

नन्दादेवी नमः स्वाहा ॥ ॐ भद्रादेवी नमः स्वाहा ॥ ॐ सुभद्रादेवी नमः स्वाहा ॥ ॐ विविक्त
सर्वे हा ॥ ॐ कलि मालिनी ये स्वाहा ॥ ॐ जम्भल सर्वेन्द्राय स्वाहा ॥ ॐ जम्भल व
सुन्द्राय स्वाहा ॥ ॐ नमः श्री आर्य जम्भल जलेन्द्राय स्वाहा ॥ ॐ सर्व जम्भल जले
यहुँ स्वाहा ॥ ॐ जम्भल जलेन्द्राय स्वाहा ॥ ॐ गीं लेम्या हूनानन्ताभाय स्वाहा ॥ ॐ व
सुधन स्वाहा ॥ ॐ वसुधारिणीय स्वाहा ॥ ॐ श्री हूँ स्वाहा ॥ ॐ श्री वसुधाय स्वाहा ॥ ॐ उयं

कनिधन धान्यकभिंछी स्वाहा ॥ ॐ श्री ह्रूला देवी स्वाहा ॥ ॐ श्री लवादेवी स्वाहा ॥ ॐ वसुन्ध

रादेवी स्वाहा ॥ ॐ श्री वनूर्ण देवी स्वाहा ॥ ॐ श्री धनवती स्वाहा ॥ ॐ श्री धान्यवती स्वा

हा ॥ ॐ श्री श्रीमति स्वाहा ॥ ६ ॐ श्री चन्द्रमती स्वाहा ॥ ॐ श्री [illegible]मती स्वाहा ॥ ॐ श्री

[illegible]गुणवती स्वाहा ॥ ॐ श्री वसुधन स्वाहा ॥ ॐ श्री वसु स्वाहा ॥ ॐ श्री वसुन्धरे स्वा

हा ॥ ॐ श्री जम्भलजलेन्द्राय स्वाहा ॥ ॐ श्री कुरुकुल्ले स्वाहा ॥ ॐ श्री कनककेतवे स्वा

वस्था

कर्ष्यय स्वं ॐ श्री आकाशिनिमहावनम स्वाहा ॥ ॐ श्री गुह्यकादेवीनमः स्वाहा ॥ ॐ श्री मृत्युपदेवी

नमः स्वाहा ॥ ॐ श्री मनस्वनी देवी स्वाहा ॥ ॐ श्री चन्द्रकाकादेवी स्वाहा ॥ ॐ श्री धन

श्री दमहाधनदी स्वाहा ॥ ॐ प समहापङ्कजी स्वाहा ॥ ॐ विवि कुण्डलि कलि मालि ६५

नी स्वाहा ॥ ॐ पूर्णशुभपल्लवे स्वाहा ॥ ॐ श्री महावन्ननिधानयागकी स्वाहा ॥ ॐ स्वा

हा ॥ ॐ ज स्वाहा ॥ ॐ ह स्वाहा ॥ ॐ ल स्वाहा ॥ ॐ ज स्वाहा ॥ ॐ ल स्वाहा ॥ ॐ डा स्वाहा ॥ ॐ य

स्वाहा ॥ ॐ स्वाहा ॥ ॐ हूं स्वाहा ॥ ॐ वजसमाजः हूं वं हः ॥ ॐ हुं हूं सूं र स्वाहा ॥ ॐ आः हूं स्वा
हा ॥ ॐ ग्रगमममसर्वसत्वा नाथ धनधान्यसमृद्धिं निधानानि मादहि ददापय
य स्वाहा ॥ ॐ जम्भल जलें द्राय सर्वज्वालेहि मान्दापय स्वाहा ॥ ॐ हूं वस
हा ॥ ॐ स्वस्वाहा ॥ ॐ ... यस्वाहा ॥ ॐ ददाघोदिग्रहः स्वाहा ॥ इत्यादयक्र
मकाल्कितहस्मनूमा दयक्र ॥ ममक्रपदः स्थिप्रक्र ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॥ हूं हूं हूं हूं ॥

ननूभ

ॐ ऊँ ऊँ ऊँ ऊँ ॥ ॐ ऊँ ॥ कमानाथ्य धनन्दहि दन्तपयस्वाहा ॥ त्रमन्दयास्णवयोमहि

बृ यापवसका ।ि ऽभ पिमन्त्र यशानिमिश्वन्ति ॥ किंपूनत्रज्ञानिमुक्तिकत्यपूनूप

श्री त्रमार्गमहाहानन्दवामि ॥ न्नूपितम्मनावथीपविपूनवमि ॥ ॐ वऊकऊमहाव

जवमायपघठकठकरूँरह टावाहा ॥ ॐ श्रीयग्रीकविधनकविश्रान्यकविस्माणकी ७१

णकवीस्वाहा ॥ ॐ णीवनिश्रनायस्वाहा ॥ ॐ यमनिश्रनायस्वाहा ॥ ॐ मुनायकणीहवी

कूमा हूँ स्वाहा ॥ ॐ प्रान्याण नकामहूहा कामनतानि । मामा हर्म्मानी ग्रि तान्भूव यनि । सिद्ध्यन्तु
मक्रु यदानिलम्बया ॥ ॐ न   मान त्वत्र याय ॥ नमाद्द्वी धनहृहिगवहूश्चाना पानप २
धनन्थविनत्नुदहहतूरथे   नन्थविनत्नमदहिदया धम ॥ वत्नक्षाणनमहानिध
ननिधानकाञ्चिनगसहस्र   पशिवावत्राक्र हिहणंवकिवहूधानप्रविश्यममपूर्वी
ममहृदनैमत्त निधान पानयर हूर हूर हूँ हृदये णनिवासिनि स्वाहा ॥ ॐ निष्ठ्व

वसुधा

जाम्नेमाँऔँ हिँप्रमि रक्तवन्हि विन्नायस्वाहा ॥ अ[illegible]मन्त्र आॐ सुवर्णु भवाय स्वाहा ॥ जू
न्निमाधनमन्त्र ॥ ॐवजून ङ्गवस्वाहा ॥ [illegible]कमन्त्र ॥ ॐ अमाल कडपल्लपम
वृ ३ लिखस्वाहा ॥ ॐ बलधरव हन्पस ॐ हात्नि प्रमि हवजूलच निप्रमीक्षमविके ७८
स्वाहा ॥ उदकाहुनि मन्त्रेर्थ प्रयकमि ॥ ॐ जूमलाट लिटि लिनि स्वाहा ॥ काथक
ववत्रमन्त्रनय ॥ हूँर्यं हि फलसूत्रम्ह हयमाव सूर्याचाना मधानशी मन्त्रमर्दा ॥ जूस्वीं

धनवल्यां ब्रह्मवनवागर्हृ हिंक्रामवक्ता दयानस्त्रहवौसि ॥ पक्कफूलमूत्र ०॰ मानिवहृषावाना

मश्वनवीमक्रु पदानिकथ भकान्ता हिंता न्नू माक्की बृञ्चानां पूजौक्ष्म लाघहमाहानाँ

वर्कियनु । ननः ४ मिडाह्वहीति मस्याँदिति ०॰ पैंविघाधार्य्यनमहादिक्कूघमानाहव

ति । मस्मिनह्लतन्मछूक्षनपी ह्रिवनर्थी हार्[illegible]आपवनहवाणुन्दयापवनमणुछ्या

वहृधानाह्मवाति कांबापहन्मामूएमा ह्नुबाम[illegible]वन्दनमवकृनसींमणुलकींकलापूष्प

भ्ना ।

वसुधा

सूपन्नामा ल्पविलम्पनक्रू कुवीवनक्रू कुक्षज वरष्ठयमाकायक्ञोहिकेवलिनेवमविवि :
क्षमयया नेर्यथ्यालिहर्वेमूर्ख कृत्वा । धर्मिहालकन्ध्यापिमून ध्वजलहाकठमूनन्धी
पु न १ गुविवक्रुआक्लेमयू वासनापविहमूप्रविःथप्रतिमामद्यादिके समपयिली ६२
मेमयाँ हत्ये हल्यां दयवला यी. मूजयि लुवज्वकम वेत्नु समा दानना यावदवस
कलीनार्ति भानजीमविक्किन्न पा दहिं यक ॥ नस्यक्रमन सर्व सम्या हिर्लवकि । ननक्रुआकू
नू२

तयिदिवसयिंयमनरात्रि मखिनामयिल्वा। पून ८ पुष्प धूप गन्ध जल ल्हान ८ कुविनमत
वस्त्र पूजावस्त्रकवानीह्लल्वा ॥ शुहं ल्हाय नमनि दानं श्मनणी म विच्छिन्न मावर्ज्जयम
श्रीशिवानानि मकठ कुलपू श्रावा कुल ल्हहि माया महापुष्प माक्रयावसुखन्दूपा
दहं पनिपूनयनि ॥ सर्व्वध नमन्यहिं नध्यप्नवक्रु ८ मद्वीपकन्नरोध्या। सर्व्वा:
दुवाख्य नागपनि । ये ध्वाकन्ये वस्त्र यय धूप गन्ध जल ल्हान ८ कुविन स्वावतामयपानवः

वसुधा

हिंगा निचामिथाल वंलां वस्तु लाऊं कंवाबी ल्ला। घोष्टि काथल्लगहवा। पवकहपा गु

हल्छान काग कास्म भवबा वन्दनन वन्न प्रमण्ड लीकल्वा। हगवन ३ थीम दार्थी

वू वलाकिमगष्वनस्यानथागन लसर्द श्रावक प्रलकबुद्ध वाधिसत्वा नाम्हहामूज्जम १०

कुविघादवनायायाथ त्रगा: सथ्म विहर्दै उदाबान्तू जांफल्वा हस्तमा हिगम्हामव

हगवनी म्हावस्नृकवि लोत्या: दा दानपानि हिंगा सल्वाहंयगुद्ध या पवमगु द्दमापवमण्ड

व२ ...नवः

ड्याससिनिदानीं मिमीं भवनीभक्तमहानाउँ मकाहाना। अलिप दूनंनावेयन्ना। विष्किनना

वल्यिना। आवांथ्यिस्लव्येव ित्यभनसाडूकिलुल्याससर्वलुपहाने टमूजयना।

नथ्यँवदानपतिनपिनिय मेन सर्वमावचक। पाठ्का ल्यथमसक्काहवले

स्दिदानं। दघाना। ननठ्याः ननिस्कोलंवकि ॥ ननठ काशमातृया गठपनदसभ

वेंमहापूजूपमा। पावसूख्वावा मपमर्‍हि पनिपूवयमिसर्व धन धन्याहिलिस्पसव

पाः

वृत्मं

स्रे दिहि॰ सर्व्वीएकवल्गे ॥ सधो ॰ ॰ वना । गयकि । गनहिर्ल्वं॰ नहपगं सर्व्वप्रयत्लना

वृ दूस्त्रीक्षमीं॰ सूक्ष्मवा नाम श्रावशीं॑ श्रवयवावस॰ दशायश्रहर॰ पर्य्यवाक्नू हि

जी मचसूय॰ यविस्कवलसूस्रक गयकि । कमाहविय्यागिदीर्व्वनाक्रमर्थ्यथहिताय ८१

सूत्वायहः ॥ सैलमायर्श्री नायसूक्ति॰ नाप्यवकि ॥ गक॰ सा भूहगवन्निकिं॰ रुस्र

हमवकठ सूवलानाग्नहयगि हिनवगाश्विकिचा हिमीवसू श्रावानायश्रवशीं॰ र॰ त्ला

पुनि

हृष्टतुष्टउदग्रआत्मनाःप्रमुदितः कृताञ्जलिर्भो मनस्य काया लगवतन्त्वतया नियत्तकृत
कान्यपृच्छत्लाह गर्वकम ... कृत्वा स्व ... उद्धहीना भगवन्निर्य्यं वहू भमाना
मध्यनजीउद्धृहिताधानि ... नावाविनापर्य्यवाकानूभावि नाम न साहू पविवि
न्तिनायकस्य विकृतन ... ईप्रकाशचिद्धामीतिजुथतलोनमाक्रलहूवसु
स्यनामगहपतःपविद्धकोपा ... गसाहूत ... सूयावलहूवद्धानामगहपति

वसुधा

बुद्धि

हिंगवन्हमनकदाणसहः ॐ ब्र... ॥ द्वयेहगवन्त॥ प्यादेगिवसाहिवन्य हगवन्तंपल

॥ पूनवलोक्य हगवन्ता॥ किन्नाल्हन॥ ह प्रकान॥ प्रकर्मप्रसन्न हपाकिवह

हर्ष्ट्रविधिप्रकाकीत्यवि॥ सुःर्ष्ट्र सर्व धन धान्य नल्हमान सर्वाप्रकाचलेन्द्रः

काणकाष्ठानमनालिवय॥ विपूर्ष्ट्र निःस्वाव विसिनाहच्छ तुष्ट उद्य ब्रमा

हमना॥ प्रमूदित॥ श्री किसीमनस्य जान॥ पनिपू [illegible] नानिय॥ य विघ्नहमालकू

हि

१२

श्री

गलमूलमहस्रिरं दद्याकुक्तरगवकिंवसुभवानामथानवर्णं वतीविग्रमक्तनूपमे
नवैं ब्रह्मादवक्तूमानविठी॥ कौविक्रवाधिमत्वविक्रमूत्वादयाति॥ जूथमलत
मवानामूष्मकमानन्दमा मक्रयमसमा॥ गकुत्वमानन्दमुवलुसमरहपनि
गवैं पविपृर्णुसर्वधन भात्महमङ्ख्सर्वनत्वमवर्णुदिदिषि सर्वपकव
लो स्थमहाका॥ कामृभवानाविवपविपृर्णुनिपद्यत्रि॥ जूपवत्वायभ्यानान

वहुला ६४२

न्हाहगवकावनन्तैप्रतिष्ठायेन [illegible] श्री महालनणवीयनव हूवन्दस्य गृहपत निव॥

कृ णकेनापर्श्रीकन्यालोन्क नैप्रवि थाजाक्षीनायविपूर्ण्णं सर्व्वधन धान्य सम

ति ऊवनलसमर्द्व महाकाल काश्लणनवालिवपविपूर्ण्णत निष्ठाँ दुखुडदप्रज ग३

लमना ब्रसमूढिन ब्रीति लीमनस्य जाकायनहगवाके नापर्शकाके उपर्स

क्रष्याप्रष्यानानन्हाविस्मित ब्रीतिसी मनस्य जाकोहगवनब्रपादी गिवसाहिवन्म॥

का ॥ २

भगवन्तमेतदवोचत् ॥ का भगवानाह । ० कु० प्रज्ञापारमिता सर्वज्ञतानाम धारणीमहामहा

ज्ञा महाकाशाभ्यन्तराविनश्यानुत्तरि ० सर्वधर्मज्ञतया ज्ञानसमन्तज्ञानवांधाद

ध्यानन्तसर्वज्ञानामधारणीपारमि ० पञ्चमहाभूत ० कर्मारम्भगुणपाशविनाशनस्य

ध्यसत्त्वानामधर्मशीलवर्द्धिनी ० दुःखदीनाअविद्यावासनापर्य्यवाकानुन्

मादिनापवनसर्वविना [illegible] ॥ न ना नन्दवलमयमुंत्रैलोक्येश्वरमानवसत्त्वे

द्व क्षीष्व १

धा.क

बु
के

धानाम थानसीं थानथ... ह्म बावय ... दशाय कृ पर्थ्वीया बूहियनह्य थ्व विकृ नणसप्र

काणयगनकृविथ्याति ॥ बहू जनहिमायह्लू ल्वायसी कानूकृया यम हकाकृ

नकायह्वा थ्यायहिनायहू ल्वायदवानाविमनूथ्या जाक्ष्यसकूलपूतस्यानन्द १४

थंथनसीहकृनकापूकृन गाणु तिमातुगनाहविथ्याति । रुद्धहिना हृद्भूमथा ।

विंवाविनाविक्किना गूहगतापूजिनावहविथ्याति । यस्यकूलपूतस्यद्वाहिंकृहयनहवि

ना

षाति ॥ ञमन कस्य विकृ वा ४ सन्धर्ह्न कव कृजनहिताय बहुजनसुखाय लोकानुकम्पायै
महतो जनकायस्यार्थाय हिताय सुखाय देवानाञ्च मनुष्याणाञ्च नाहमानन्द तं
धर्म्मं समनुपश्यामि सदे वके लोके समारके सब्रह्मके सश्रमणब्राह्मणिका
यां प्रजायां सदेवमानुषा यीयङ्ङ्मां वि ग्राम न्वाथ्य कनिष्य कि ॥ अनि कमिष्य
नि वा ने कत्वाने वि प्रात । क्व केसमह गा न कृ घा नि षकता नानिन्द्र व सुक्षना नाम प्रभवसी

वहमा

न१ त्रिकी २

मन्त्रपदानि भिद्येतानि कीलकूणल मूलानां छिन्दि पथमानविद्धंसि ॥ कंठ पूर्णवोद:
यानि मूलकर्मानि हृद यगतानि ध्वंसि । वाचविध्वंसि ॥ पर्व्वं वाध्वंसि ॥
तत्कस्य हेतो अस्य सर्व्वतथा गतानामकतार्क्ष ॥ सर्व्वग्रहनक्षत्रहविनाः भूमि: ढ२
स्थिताः धनिनाम् हव मूडिता भुक्तानिताँ । अनुमादिताः प्रसन्नविना ब्रह्मकामर्वविलि
नाविनीतउत्कानि कलाज्ञावाविँ सूत्रव्यानादविज्ञानीसत्वानीनानासर्वव्याधिमविपी:

न१ हृंडकालिता२

वृहद्

ष्टितानां सर्व्वदुष्कृतयाय ऽतानामर्थ्यहितायहृत्वायसंतानयनिहलमयमामायवति ॥

आनन्दमाह ॥ ऽऽहीमा भगवद्भिर्येनवृत्यानानामर्थवलीअविमावाविमा

यर्थावाका ऽनुभादिमा मनहामृर्पविवि किमावसासृहगवद्भिति ॥ ऋयव

लामृष्मानानन्दऽऽलामा सनादक्षीगम्पक्षेनामैंगंकलादक्षिरक्रानूमरुलैंप

षिवाप्रतिक्तेयायनहनवाक्कनाक्ष्ललिंप्रवमयक्ताकनपटाहलाहणवर्कमवलाक्ष

नत्वा वलाग्रास्ति मौनःस्थमस्तापगा ॥ सुविकन्यादवसम्भयस ॥ सुलक्षणलसुसम्भ

काञ्चने । सूपूर्वसम्भिहरसु मत्रुली । नमाम्बु गथीवहत्क्षावसी सदा ॥ सुविकन्य

हृनवाम्बृशाबुद्ध वर्मीग्यवि कया सुविनाया हिपूर्ष नानीविपाकस्याय विकया

[illegible] जयवंधना ॥ यान भभीहलक्षा कवृद्वीवनमा स्तु

दता ॥ ॥ सूयाव स्त[illegible]नानन्द मे धर्म्मपद्यो यें हगवता किं नृक्कु लोदृष्टुंग्घ

ड्वग्र सूत्रे मना प्रभूत [illegible] मि सो मनसा ज्ञा नाहे [illegible] मतद्वा वद ॥ कानामा पीहगव
धर्मपर्याय पठकथं हगव [illegible] नया मातं धर्मपर्यायं । भगवानाह ॥ सुवर्ण्ण
? हपाठ पनि एक चित्त पि धनया सर्व्वयन धना हि [illegible] हू वर्णे नलिपान
मित्य पि धनया नत्र ॥ स र्व्वतधन मन प्रणाके पि मा [illegible] सुर्व्व तधन ना पि चि
तावसु धनाना मधा नली कस्य मित्य पि धनय ॥ ॥ ०॥ मवाव मह भगवानाह

९२

नमस्य

मनाज्ञायूष्मा नानन्दस्कन्दवाहि[illegible]समस्त्य बोधिसत्वां महासत्वा ऽसा सर्वविनीय यस्त्वदव

दू मानुषास्सवगन्धर्वश्च लो[illegible] वहगवक्ता क्षमिजमयेनकृ नकृति ॥ ॥

अ आर्यिहगवतीवहुश्चवाना मपावतीहस्मका ॥ यश्चमाहेडु ११

प्रज्ञापा ॥ हड्डमश्चीनयमान [illegible]हुवद बाक्यं विनयानीवाश्चि ॥ एवंवादीस्क्ता ऽम

यथाहर्षं नयमलिखितं साका ज्ञानालिकाय ॥ आदिषु हेमहर्ष वाहज्ञीयंमहर्कुले ॥ ॥

ॐ नमः श्रीभगवत्यै आर्यपञ्चरक्षाविद्यावल्यै ॥ एवंमया श्रुतम् एकस्मिन् समये भगवान्वज
भूविहरतिस्म ॥ सर्वभगवती धजमर्वञ्जूषिश्चायवजका ध्वहर्यं ककसा गदा हाघन
स्म ॥ भूस्था ॥ पंसूरधीरोहं दशिरवमूर्वरिर्पमिकलं सर्वतगयना जितं ॥ सर्वसत्व
विद्रापनकरं सर्वसत्वास दनकरं सर्वविघ्नछेदनकरं ॥ सर्वविद्यास्तंभनकरं
करं ॥ सर्वकर्मविध्वंसनकरं ॥ परकर्मविद्रावणकरं ॥ सर्वकामसाधनकरं ॥ सर्वग्रह

कतवि

विभाक्षणकरं ॥ सर्व्वहेलायकर्म्मशोकरं ॥ सर्व्वविघामन्त्रकर्म्मप्रशायनी । भूतिक्षानीहिद
करं । हिक्षानींमा । विनाशन करं सर्व्वकर्म्मपदं । सर्व्वसत्वानन्दकरं । मनिकिर्णी
पूर्णकरं ॥ सर्व्वसत्वानीलक्ष नकरं ॥ सर्व्वसत्वानींमाहनकरं । श्रीमन्त्रमदावली ॥८
पूर्णानुत्तायायमहोकमा लिङ्गप्रत्यहायन ॥ ॥ओं नमानतोकयाम ॥ ६
गमथा । ओं हुरु २ ज्वालय २ स्फुर २ धूर २ स्पुर २ धूर्णे २ घूर्णि पय २ सर्व्वसत्वानांविनेधपप रवींनाथ

य २ त्रन २ त्राणय २ भ्रम २ आमय २ सर्व्वहितानि कुरु २ सर्व्वकर्म्म क्षय २ सर्व्वदुःखानि जलय २ संघटय २
सर्व्वविघ्नान्कन २ हन २ दहय ॐ २ कट कट २ मट २ कजट २ वज्रहस्तनी लंब २ लुब २ जयस्व-
हा ॥ ॐ हर हर २ हुलु हुलु नि हुलु हुलु घुन २ हुलु हुलु नि ॥ हस हस कुरु २ वज्रविजयनि स्वाहा ॥ ॐ व
ज किलि किलि काय स्वाहा ॥ ॐ कट २ मट २ मा नयप्रमाठनाय स्वाहा ॥ ॐ वल २ नि
वल २ हन २ मन २ मा वमय २ वज्रविद्रावणाय स्वाहा ॥ ॐ छिन्द २ भिन्द २ महाकालि ति लि ति

वज्रवि

लाय स्वाहा ॥ ॐ वज्र२ क्रोधमहा किलि किलाय स्वाहा ॥ ॐ वज्र२ वज्र किलि किलाय स्वा
हा ॥ ॐ त्राणय वज्र किलि किलाय स्वाहा ॥ ॐ हन२ वज्रधराय स्वाहा ॥ ॐ वज्र
न२ वज्र प्रहंजनाय स्वाहा ॐ भिन्दि छिन्दि वज्रशृंखलि छिन्नवज्र ॥ महावज्र प्रभति: १९
हन वज्र छिन्दि वज्र भि: ॐ वज्राय स्वाहा ॥ ॐ हन२ विधि वि२ धून२ सर्व किलक
लवज्रे य स्वाहा ॥ नमः सर्व तथागताय हूँ हूँ स्वाहा ॥ ॐ नमः समन्त वज्राणां सर्व वत्

मार्द्दिय महाबले ॥ चण्डवज्रपाणिवज्रबले ॥ मण्डले नमाय भगवति वज्रमहाविमलेन सूभिन:
कलेर टिटिटिटि पिपिरि दह२ गर्जवति, सिलि२ वज्रे२ महाबले वज्रीकृत्वा हि
लाय स्वाहा। नमो वज्र... याय। नमश्चण्डवज्रपाणये महायक्षसेनापतये।
ॐ हन२ वज्र२ मथ२ वज्र धुन२ वज्र२ दह२ वज्र पच२ वज्र२ वन२ वज्र, आनय
वज्र, मानय२ वज्र, छिन्द२ वज्र२ भिन्द२ वज्र हूँ हूँ ॥ नमश्चण्डवज्रपाणये महाका:

रुद्रवि

अथ । ॐ ह्लूं स्तिं स्फुर २ वश्य २ ह्लीं २ स्तम्भ २ हूँ २ फट् ॥ इदयापत्तदर्थं मूलमन्त्रः ॥ ॥

१८० सर्व्वपापक्षयं कृत्वा सर्व्व- दुःखविनाशनं । मन्त्रा हि ॥ सर्व्वमन्त्रात्मको सर्व्वसिद्धीस-

मन्त्रं कलिकाले पशुमन्त्रैः यान्कृत्वा नश्यन्ति यद्भस्मान्तरं अलक्ष्मीं च पिदिनत्रयं ८०

स्य वर्वणीश्च पर्व्वां स्तुतोऽ कान्ताभि यजन इष्टा कृत्वा वश्यं उद्धेजनाय नास्ति

यं समर्थानां हृदयं व्याज्ञ नवभवत ॥ अहन्न कृतपीवा का का दाकृस्मश्रहा ॥ यामर्के यन्त्रा ।

नस्वप्रश कां कायोसम्भक्तिं नं नयस्तुल्लामगु विनाक्लो मर्वां सूग्नपूकमें । लस्वक्रुमसस्र
स्तुतिं मस्तीविं वृद्धलमवर्लं ॥ पुसन्लविनसूमनागु विलम्बु वलें क्वा तो । मनस
वैनद्दष्ठाउ पसर्भीस्तृदानुः लाअमें जस्यवजलनमाःक । समस्तासर्वमाव्नुयां । अ
यूक्ववर्द्धनपूर्थे स्तब्धयाये विमाम्नि मं । मालिसर्वेपः ञा हिंठवलोक्लनसंयन्द
नेठकजग्रब्किलपूल्वे ल्थ नलामायूजें काअक्नें च दैत्रवहैंनैंवायिगु विवस्रुणवासिंमं ।

[illegible]

एकविंशति लिखा लांवाला नष्टा ल्लेखमनं ॥ अथ [illegible] विद्रावणं ॥ मन्त्रोद्धार ॥ प्रत्याधिवंसदा
एवं प्रत्यादिना नमः हूँ वषट् [illegible] हूँ ॥ [illegible] ॥ ॐ पमथाव हृत्ण वानन्द आत्माति
[illegible] सि नम स्वाहा [illegible] ॥ ॥ [illegible] विद्रावण हृदयमन्त्र [illegible] मा ६७
स्वा ॥ ॥ [illegible] मदाव या ॥ यथ [illegible] वा हृ [illegible] कथ्यगण [illegible]
[illegible] वशानिना धीजव [illegible] महा [illegible] भण ॥ [illegible] ॥ [illegible] सर्वदा ॥

ॐ नमो भगवत्या आर्य्यगणपतिहृदयायै ॥ एवं मया श्रुतमेकस्मिन् समये भगवान् राजगृहे विहर
ति स्म ॥ गृध्रकूटपर्वते महता भिक्षुसंघेन सार्द्धमर्द्धत्रयोदशभिर्भिक्षुशतैः संबहुलैः
श्च बोधिसत्वैर्महासत्वैः ॥ तेन खलु पुनः समयेन भगवानानन्दमामन्त्रयते स्म ॥ यः
कश्चिदानन्द इमानि गणपतिहृदयानि धारयिष्यन्ति वाचयिष्यन्ति पर्यवाप्स्यन्ति ॥
तस्यं च सर्व्वकार्य्याणि सिद्धानि भविष्यन्ति ॥ तद्यथा ॥ ॐ नमोस्तुते महागणपतये ॥ ॐ गः गः गः गः

गः गः गः गः ॥ ॐ गणपतये स्वाहा ॥ ॐ गणाधिपतय स्वाहा ॥ ॐ गणेश्वराय स्वाहा ॥ ॐ गणपति:
पूजिताय स्वाहा ॥ ॐ कट २ मगः दर २ विदर २ हन २ गृह्ण २ धव २ क्षोभ २ जम्भ २ स्तम्भ २ माद २
दह २ पचि २ दापय २ धनादि सिद्धिम प्रयच्छ ॥ ॐ नमास्तु गणमहाकूटवरदनाय स्वाहा ॥ ८२
ॐ अमृतविन्दुशिरसि विक्रम: हस समागच्छति ॥ महाहृदय महापराक्रम महाहस्ति पति
नीय प्रसाददायय स्वाहा ॥ ॐ नमास्तु गणमहागणपतये ॥ ॐ गः गः गः गः गः गः गः गः ॥ ॐ ग

णपतये स्वाहा ॥ ॐ गणाधिपतये स्वाहा ॥ ॐ गणेश्वराय स्वाहा ॥ ॐ गणपति पूजिताय स्वाहा ॥
ॐ कूं स्वाहा ॥ ॐ सूं स्वा हा ॥ ॐ मूं स्वाहा ॥ ॐ हूं स्वाहा ॥ ॐ नमा नमः स्वः
हा ॥ ॐ दमानन्द गणपतिं दयं यः कश्चि कुलपुत्रो वा कुलदुहिता वा हिस्मया ति:
स्त्रीवा डया सकावा डयाः सिकावाय कश्चि कार्य्यमारम्भ ॥ मन्त्रसाधनं वा छित्र व ल:
पूजा वा नाडकू लगमनं वा दगाक्षगमनं वा अक्षधनं वा गनपूजानां गणपति पूजां कृत्वा आर्य्य:

गणपतिहृदयं सप्तवारानुश्रावयितव्यं ॥ तस्य सर्वकार्य्याणि सिध्यन्त्यसंशयः ॥ सर्व
कार्य्याणि सकलि कलहवि कारठं वविग्रहविवादेषु नित्यं समनुश्रावयितव्यं सर्वपूर्व
मर्वमंगलानि भवन्ति स्त्रिकाव मूपस्थाय सप्तवारानुश्रावयितव्यं ॥ महाराजो गच्छ
भवति ॥ राजकुलमनुप्रवि जारविषाणि ॥ तृनि भवानविषय्यंनि । न चास्य कश्चिदेवम्
वनानुप्रवेशो अनवनागंगवशो अनवनार्थप्राप्तिर्भविष्यति । न चास्य कश्चिद्विघ्नं करिष्यति ॥

ॐ गों जगों ज्ञानि स्वभावं सर्व्वं करिष्यति ॥ ॥ ॐ इदमवोचद्भगवानात्तमनास्ते च भिक्षवास्ते
च बोधिसत्वा महासत्वा सा च सर्व्वावती पर्षत्स देवमानुषासुरगरुडकिन्नर
गन्धर्वश्च लोका भगवतो भाषितमभ्यनन्दन्निति ॥ ॥ आर्य्यगणपतिहृ
दया नाम धारणी समाप्ता ॥ ॥ ये धर्म्मा हेतुप्रभवा हेतुन्तेषान्तथागतो ह्य
वदत्तेषाञ्च यो निरोध एवंवादी महाश्रमणः ॥ ॥ शुभमस्तु सर्व्वजगतामिति ॥ ॥

ॐ नमो भगवत्या आर्य्योष्णीषविजयायै ॥ एवम्मया श्रुतमेकस्मिं समये भगवान् सुखावत्यां धर्म्म:
संगीतिमहानुस्मृ प्रासादे: भवनविहरति स्म ॥ सुखावतीस्थितो भगवान्नमिताय:
कथगता आर्य्यावलोकित श्वरो अनेकबोधिसत्वामहासत्वैः आमन्त्रयते स्म ॥ स १४
किं कुलपुत्र दुःखितानां : त्वानां नानाव्याधिपरिपीडितानां अल्पायुःक्षयसंमर्थयहिता
य सुखाय यं दूष्मां सर्व्वतथागता उष्णीषविजया नाम धारणीं धारयन्तु वाचयन्तु देशयन्तु पर्य्यवाप्नुयाः

तयस्य श्चविक्रयस्य संप्रकाशयतु । दीर्घायुष्कानामप्यायषयति ॥ अथ खल्व सर्थ्व तथाकिनस्थावा

धिमस्वामहासत्वं ङ्काया सनाथ कां ह्मणाः अधिति धूतं ल्वा मंगवन्तमगदवांवन ॥

दशायतु हगवान्सर्व्वतथा गता ष्णीषविजया नाम धारणी न्दशायतु सुगत ॥ अ:

धवलगवान्सर्व्वतनीय र्धन्सम ज्ञल्लं अस्वनाक समन्कावनाकिनविया नाम स:

माधिसमायद्यविमां सर्व्वतथागतोष्णीषविजया नाम धारणी मन्त्रपदानि स्मापञ्चस्म ॥ ॥

ॐ नमो भगवते सर्व्वत्रैलोक्यप्रतिविशिष्टाय बुद्धाय ते नमः तद्यथा ॐ भ्रूं भ्रूं भ्रूं शोधय २ विशो
धय २ असमसमन्तावभास स्फरणगतिगगनस्वभावविशुद्धे उष्णीषविजयाय:
विशुद्धे । अभिषिञ्चन्तु मां: सर्व्वतथागताः सुगतवरवचनामृताभिषेकैर्महामुद्रा
मन्त्रपदैः ॐ आहर २ आह: र आयुःसन्धारणि शोधय २ विशोधय २ गगनस्वभा:
वविशुद्धे । उष्णीषविजयायविशुद्धे । सहस्ररश्मिसंचोदिते सर्व्वतथागतावलोकिनि:

षषावमिताय विपूरनि । सर्व्वतथागतमातृदशाभूमिप्रतिष्ठित । सर्व्वतथागतहृदयाधिष्ठाना
धिष्ठित । ॐ मुद्रे २ महामुद्रे वज्रकाय संहतन परिशुद्ध सर्व्वकर्म्मावरणविशुद्ध ।
प्रतिनिवर्त्तनाय विशुद्ध स र्व्वतथागतसमयाधिष्ठानाधिष्ठित ॐ मुनि २ महामुनि
विमुनि महाविमुनि । मति २ महामति । ममति सुमति तथताभूतकोटिपरिशुद्धे ।
विस्फुटबुद्धिशुद्ध ॐ हे हे । जयजय । विजय २ स्मर २ स्फारय २ स्फुर २ स्फुरय २ सर्व्वबुद्धाधिष्ठाना

ष्ठित । ॐ शुद्ध २ बुद्ध २ वज्र २ महावज्र । सुवज्र । वज्रगर्भ । जयगर्भ । विजयगर्भ । वज्रज्वालाग
र्भ । वज्रोद्भव । वज्रसम्भव । व ज्रसम्भव । वज्र । वज्रिणी वज्रं भवतु ममशरीरं सर्वस
त्त्वानां च कायविशुद्धिः भवतु मम सर्व्वगात्रविशुद्धिश्च सर्व्वतथागतहृदयाधि: ८०
ष्ठानाधिष्ठित । सर्व्वतथागता श्च समाश्वासयन्तु । ॐ बुद्ध २ बोधय २ विबोधय २ मोचय २
विमोचय २ शोधय २ विशोधय २ समन्ता मोचय २ समन्तरश्मिपरिशुद्धे । सर्व्वतथागतहृदयाधि

स्थानाधिष्ठित । ओं मणि २ महामणि महामुद्रामन्त्रपदैः स्वाहा ॥ ❀ यंगा कुलपुत्र सर्व्वतथाग
ताध्यष्ठिविजयानामधारणी महामुद्रापदनिवारणीयविजामघनासनोलिखिता
हृर्दयपत्रवाअन्यत्रवाविशे वामध्यस्थकुम्भमाश्रित्यसंस्थाप्यमण्डलमुद्रामहावांयुजाकः
ध्वाप्रदक्षिणीसहस्रंकर्त्तः व्यं । यस्थाविद्यवानव्रयतः स्तवज्ञपत्रनामालिखित्वाः
धर्म्मध्यात्वगात्रे सर्व्वपापनाशनु धर्म्मध्यात्वस्थातसनवा । आदमत्विकावाकावरितिलासप्रेकविंशति

श्री

व कुष्ठ व्याधि भिक्षु गन्धो वा मद्गु भ्रं सं पृथ्वी ... यदा का पुष्प धूप दीप गन्ध नैवेद्यादिक सर्व्व पूजा:

भिः पूजयन्तु ॥ इमां सर्व्वतः धर्म्मगण्डीं विजया नाम धारणीं वाचयन्तु ॥ अष्टम्यां द्वाद

शन्यै ... सर्व्वधिकं पूजयन्तु । यस्यैव वृत्तः यदि भिक्षुः पञ्चधातु नाशं विमुच्यति । दानं दा

यं । सप्ताहेनायुः सप्तमासायुः पञ्चत्वमिष्यति । सप्तमासायुः सप्तवर्षाणि जीवति ॥

यस्मायुः ... जीवति । ... मासे ... जीवति । महाकाल ... विमुक्ता भवति । ... वायुः सप्तकल्प भवति ॥ ६१

॥ ॥ इदमवोचद्भगवानात्तमनास्ते च भिक्षवः सा च सर्वावती पर्षत्सदेवमानुषासुरगरुडग-
न्धर्वश्च लोको भगवतो भाषि- तमभ्यनन्दन्निति ॥ ॥ आर्यसर्वतथागतोष्णीषवि-
जयानाम धारणी समाप्ता ॥ ॥ ये धर्मा हेतुप्रभवा हेतुन्तेषान्तथागतो ह्यवदत्तेषाञ्च
॥ ॥ ॐ नमो भगवत्यै आर्यप्रज्ञापारमितायै ॥ एवम्मया श्रुतमेकस्मिं समये भ-
गवान्राजगृहे विहरति स्म ॥ गृध्रकूटे पर्वते महता भिक्षुसंघेन सार्द्धं महता च बोधिसत्वसंघेन ग-

प्र॰पा

नखलु समयेन भगवान्गम्भीरावसम्बोधन्नाम समाधिं समापन्नः। तस्मिन्समयेन च आर्य्यावलो
कितेश्वरो बोधिसत्वो महासत्वः गम्भीरायां प्रज्ञापारमितायां चर्य्यां चरमाणो व्यवलोकय
ति स्म॥ पञ्चस्कन्धांश्च स्वभावशून्यान् व्यवलोकयति स्म॥ अथायुष्मान् शारिपुत्रो बु ४४
द्धानुभावेन आर्य्यावलोकितेश्वरं बोधिसत्वं महासत्वमेतदवोचत्। ॐ आर्य्यावलोकि
तेश्वर यः कुलपुत्रो वा कुलदुहिता वा गम्भीरायां प्रज्ञापारमितायां चर्य्यां चर्तुकामेन कथं व्यवलो:

कथयितव्यं ॥ ॥ अवलोकितेश्वर आह ॥ यश्चच्छारिपुत्र कुलपुत्रो वा कुलदुहिता वा गम्भीरायां प्रज्ञापार
मितायां चर्य्यां चर्त्तुकामस्ते नैवं व्यवलोकितव्यं ॥ रूपं शून्यं शून्यतैव रूपं रू
पान्न पृथक् शून्यता शून्यताया न पृथग्रू पं । एवं वेदनासंज्ञासंस्कारा विज्ञानानि शून्यता । एवं शा
रिपुत्र सर्व्वधर्म्माः शून्याः स्वल क्षणा ॥ अनुत्पन्नाः अनिरुद्धा अमला विमलाः अनूनाः
अपरिपूर्णाः तस्माच्छारिपुत्र शून्यतायां न रूपं न वेदना न संज्ञा न संस्कारा न विज्ञानेन च

रुः न श्रोत्रं न घ्राणं न जिह्वा न कायं न मनो न रूपं न शब्दो न गन्धो न रसो न स्प्रष्टव्यं। न धर्म्मः न चक्ष-
र्धातुर्यावन्न धर्म्मधातुः या वन्नाविद्या क्षयो यावज्जरामरणं क्षयो न दुःखं न समुदयो न नि- ८९
रोधः न मार्ग्गो न ज्ञानं न प्राप्तिः नाप्राप्तिः तस्माच्छारिपुत्र अप्राप्तित्वाद्बोधिस-
त्वाः प्रज्ञापारमितामाश्रित्य विहरत्यचित्तावरणः चित्तावरणनास्तित्वादत्रस्तो विपर्य्या-
सातिक्रान्तो निष्ठानिर्वाणः त्र्यध्वव्यवस्थिताः सर्वबुद्धैः प्रज्ञापारमितामाश्रित्यानुत्तरायाः स

ष्य सम्बा क्षेमङ्करि संबुद्धा । तस्माज्ज्ञातव्यं प्रज्ञापारमितामन्त्रा । महाविद्यामन्त्रा । अनुत्तरमन्त्रा । असम
मामन्त्रा असमसमामन्त्रा । सर्व दुःखप्रशमनामन्त्राः सत्यममिथ्यात्वात् प्रज्ञापारमितायु:
क्तामन्त्रः ॥ तद्यथा । ॐ गते गते: पारगते पारसंगते बोधि स्वाहा ॥ एवं शारिपुत्र गम्भीरा
यां प्रज्ञापारमितायां शिक्षितव्यं: बोधिसत्वेन महासत्वेन । अथ खलु भगवान् समाधिव्युत्था
य आर्य्यावलोकितेश्वरेन बोधिसत्वेन महासत्वेन साधुकारमदात् । साधु साधु कुलपुत्र एवमेतत् ।

गम्भीरायां प्रज्ञापारमितायान्निर्दिष्टं तदनुमोद्यं सर्व्वतथागतैरिति ॥ ॥ इदमवोचद्भगवानात्-
त्तमना आयुष्माञ्छारिपुत्रश्चार्य्यावलोकितश्च बोधिसत्वो महासत्वः सा च सर्व्वाव-
ती पर्षत्सदेवमानुषासुरगरुडगन्धर्वश्च लोको भगवतो भाषितमभ्यनन्दन्निति
॥ ॥ आर्य्यश्रीस्वल्पाक्षरिणिका प्रज्ञापारमिता नाम धारणी समाप्तमिति ॥ ॥
ये धर्म्मा हेतुप्रभवा हेतुन्तेषान्तथागतो ह्यवदत्तेषाञ्च यो निरोध एवंवादी महाश्रमणः ॥ ॥ शुभम् ॥

ॐ नमो भगवत्या आर्य्यमारीचीदेवताये ॥ एवं मया श्रुतम एकस्मिं समये भगवां श्रावस्त्यां विहरति:

स्म ॥ जेतवने ऽनाथपिण्डदः स्यारामे महता भिक्षुसंघेन सार्द्धं अर्द्धत्रयोदशभिर्भि

क्षुशतैः सर्वबहुलैश्च बोधि: सत्वैर्म्महासत्वैः । तत्र खलु भगवान् भिक्षूनामन्त्रयते:

स्म । अस्ति भिक्षवो मारीची वि: नाम देवता सा सूर्य्यचन्द्रमसोः पुरतो ऽनुगच्छति स्म ॥:

सा न दृश्यते न गृह्यते न बध्यते न बध्यते न विनिबध्यते न मथ्यते न मक्ष्यते न दह्यते न मुह्यते न दण्ड्यते न

गस्त्रम्रूयगच्छामि । याचि नस्थाहि स्कवासाबीविनामयदवगायानामंआनामि । साचि नद्यथागनदस्कगन

४ वध्मगननि वृध्मगनमस्याम नमूस्कगनदण्ड्यगनमुण्ड्यगनदस्कगनगस्त्रम्रूयगच्छामि श्री

गु नस्याहि स्कवासाबीविदवगा यानामआनामि । सूहमचि नद्यथागनदस्कगनवध्मनमूग्य

नमूस्कनदस्कनदण्ड्यनमूण्ड्य नगस्त्रम्रूयगच्छामि । ॐमानिमकुयदानिरुवक्ति ॥ नद्यथा ॥

ॐ यमकम्मासि यनाक्रुमसिउदयमसिवेनमसि अर्क्कमसिमर्क्कमसि वनमसिगुल्ममसिवीवयमसिम :

हावीरवरमसि सिद्धान्तमसि स्वाहा ॥ ॐ मारी ... द वनमां पथे मां रक्ष रक्ष उत्पथे मां रक्ष रक्ष जले स्थ
ले मां रक्ष रक्ष ध्वज नकुलगा मां रक्ष रक्ष हस्तिभयात् मां रक्ष रक्ष चौरभयात् मां रक्ष रक्ष अग्नि
भयात् मां रक्ष रक्ष उदकभयात् मां रक्ष रक्ष सर्वप्रत्यर्थिकमित्रभयात् मां रक्ष रक्ष आकुलवृश्चिक
कुलवृश्चिकगवृश्चिकगवृ सिंहगामवक व्याघ्रगामवक नागगामवक सर्वगामव
क ॥ कथय ॥ ॐ अ ला ला ला लामस्थ गा सत्वमूर्च्छित वकः मम मम सपरिवारस्य सर्वसत्वानां च सर्वभयात्

हूं हूं फट् स्वाहा ॥ ॥ नमो वज्रसत्त्वाय ॥ नमो भगवत्या आर्यमारीच्यै देवतायै ॥ तस्या हृदयमावर्त-
यिष्यामि ॥ तद्यथा ॐ वत्तालि व लाहमुखि सर्वदुष्टप्रदुष्टानां बन्धमुखं बन्ध स्वाहा ॥ ॐ
मारीचि वनन्तवत्तालि वदः लि वराहि वराहमुखि सर्वदुष्टानां बन्धमुखं बन्ध स्वाहा
॥ ॥ इदमवोचद्भगवान् आत्तमनसस्ते च भिक्षवः सा च सर्वावती पर्षत् सदे-
वमानुषासुरगरुडगन्धर्वश्च लोको भगवतो भाषितमभ्यनन्दन्निति ॥ ॥ आर्यमारीचिहृदय

नमश्च वतो समश्च ॥ ॥ये धर्म्मा हेतुप्रभवा हेतुन्तेषान्तथागतो ह्यवदत् तेषाञ्च यो निरोध एवंवादी महा

श्रमणः ॥ ॐ नमो भगवत्यै आर्य्यप्रज्ञापारमितायै ॥ नमो बुद्धा

याय ॥ नमो बुद्धाय नमः धर्म्माय नमः संघाय ॥ वज्रधराय नमः पद्मधराय न

मः कर्म्मधराय नमः सर्व प्रज्ञानां नमः सर्व्वमायाविधुरकानां नमः नमो नमः

ग्राणां नमो बोधिसत्वानां ॥ नमो सर्वप्रत्येकबुद्धानां ॥ अथ ॥ ॐ बुद्धे स्वरे इह यमस मर स्वप्र मरः

पञ्चरक्षा

ह्रीं त्रुट २ त्रोटय २ मद २ मादय २ मर्द्द २ मर्द्दय २ घातय २ मम सर्व्वसत्वानां च । सर्व्वविघ्नान्छिन्द २ :

छिन्द २ सर्व्वविघ्नान्नाशय: २ नाशनं कुरु २ मम सपरिवारस्य । सर्व्वसत्वानां च का:

श्री र्य्यं कुरु य २ सर्व्वपापानि स परिवारस्य । शाकं २ शाकं २ दापय २ द्रुतं दर्शयात्मानं १०२

मम वशीकुरु २ सर्व्वसत्वाः नां च । सर्व्वनक्षत्रग्रहयोजानि वारय २ मम वशिकुरु :

शं कुरु २ महामाय प्रमाथय २ सर्व्वदुष्टान्नाशय २ सर्व्वपापानि मम सपरिवारस्य सर्व्वसत्वां :

ॐ वज्र २ खड्ग नि २ शूल २ वज्र २ मक्र २ मुष २ भुंख २ ढवाल २ गदा हव उअडठ नयाम:
प पुव २ युवय २ कगव: तिमनावथं ममसयविवावस्य सर्व्वसत्वानांव सर्व्वः
तथ्यगताधिष्ठानाधिष्ठित: समय स्वाहा ॥ ॐ स्वाहा ॥ हूँ स्वाहा ॥ ह्रीं स्वाहा ॥ धू २ स्वा:
हा ॥ धी २ स्वाहा ॥ ॐ आः दित्याय स्वाहा ॥ सोमाय स्वाहा ॥ अंगाराय स्वाहा ॥:
वुधाय स्वाहा ॥ वृहस्पटये स्वाहा ॥ शुक्राय स्वाहा ॥ शनिश्चराय स्वाहा ॥ राहवे स्वाहा ॥:

कनकं स्वाहा ॥ ॐ वज्रधात्वाय स्वाहा ॥ ॐ यमधात्वाय स्वाहा ॥ ॐ कुमाराय स्वाहा ॥ सर्व्वप्रेतानां स्वा
हा ॥ सर्व्वनक्षत्रानां स्वा हा ॥ सर्व्वपिशाचानां स्वाहा ॥ डाकिनीनां स्वाहा ॥
ॐ सर्व्वविघ्नान्तकृत् हूं हूं फट् स्वाहा ॥ ॥ [illegible] आ स्मवारुद्विष्यति ॥
॥ ॥ ॐ दशभावक गगनाकृ मनाकृ वृहिन्नध्या बोधिसत्वामदास
त्वासाय सर्व्वविनीयघस्तदमानुषामवनमनुज म्वर्द्धस्थलोका रुगवदनासोभिगम

ॐ सर्व्व तथागतानां स्वाहा ॥ ॐ सर्व्वविघ्नान् हूं हूं फट् फट् स्वाहा ॥ ॥ ॐ ह्नि गरुमा तक्तानाम
ध्वजाग्रीसमाप्त ॥ ॥ ॐ नमो भगवते आर्य्यपर्यवनकाये ॥ अमृतमन्त्रपदा ॥
सिद्धा ॥ सर्व्वकर्म्मकरा ॥ ॥ ॐ अमृतवर वर प्रवर विशुद्धे हूं फट् स्वाहा ॥
ॐ अमृतविलोकिनि गर्भे संरक्षणि आकर्षणि हूं २ फट् २ स्वाहा ॥ अमृतवाजितहृ
दय ॥ ॐ विमल विपुल जयवल अमृत हूं २ फट् २ स्वाहा ॥ ॐ हर २ संहर २ ॐ हूं द्रिपवल

मस्तुम्

विंग्रधनिहूँ रहूहूरखूबलखाहा ॥ॐ मालिधनिबसित [illegible] नकारमीहूँ र

हहस्वाहा ॥ उपहूदयविशि [illegible] ॥ॐ नमोभगवत्यआर्य [illegible] ॥ॐ [illegible]

[illegible] भिक्षमयहनवान [illegible] लोवविगगनगलसूर्प [illegible] वैरक [illegible]

[illegible] नवनवृहमहामञ्जुलम [illegible] ज्ञुत्रिहूवलिस ॥ सूर्य [illegible] धिसत [illegible] न [illegible]

मणवत्भगवान बोधिसत्वीनामन्त्रेऋमस्म ॥ॐ नद्रचीसूर्यकुलपूरा [illegible] मीबतम्मूलं

सभावनीं ॥ सर्वजगद्धितं च मम्बोधेन यत्वेदं संसारं तत्रसत्वानां यामकाश्चित्स्वचोन्यसत्व
समारत्नसर्व सत्वसमता ॥ प्रमिसंविदितत्वम अयथ मकाश्चित्लोके तत्र
कोरुवसीयत्तिम्हत्वानूत्तव सात्वकुसर्वसत्वसा [illegible] ष्ठायत्वम
विद्यापकर्मवित्र गलीकर्म वचनं ॥ तमाहृदप्रकिदा [illegible] या प्रतिद
नया ।यानिवधमावकर्म्मातिति मात्रुवं ॥ पविज्ञातानानुह [illegible] त्या ॥ सन्यम

ता

गा क

किंचिद्भवत्याव निर्म सा हितं कुशलमूलं लाकिं सं लाधा हनं दानं तु वन्तु ॥ सर्व्वसत्वान

मनुत्तर ज्ञानं हलंयावम् विमुक्ति ४ सा तुवन्तु सर्व्वसत्वविमोक्षाय ॥ पावमनु

त्तसंसार निर्वाण वायुक्तिष्ठ ता ॥ [illegible]था ॥ ॐ कमर्रक्तानेर दमर दानेर रहुरहु

रुदेवन्दुरसवन्दुरवन्दाक चलेस्वन्दवकि । ओकावकिय ऽेवकित्र स्कव तिसर्व्व

क्लेशविऽसधवनिसर्व्वोथसाधनिसर्व्वानिथप्रसमनि सर्व्वपापदिऽसधनिवाविऽसय

नि मनः हीं [illegible] वनि स्वाहा ॥ यः कश्चित् कुलपुत्रो वा कुलदुहिता वा ॥ इमां वसुधारी नाम
धारणी [illegible] धा१ दिनव प्रवर्त्तयिष्यति स सर्व्वकर्म्मावरणानि क्षप
यित्वा क्षि [illegible] र्व्वा: सम्य [illegible] बुद्धा वाधिमसिसं हास्यन्ति ॥ ॥
इदमवोचद्भगवानात्तम ना स्ते च बोधिसत्वा महासत्वा भगवतो भाषितमभ्य
नन्दन्निति ॥ [illegible] ॥ आर्य्यवसुधारी नाम धारणी समाप्ता ॥ [illegible] ॥ शुभमस्तु ॥

श्रीनानाना

॥ ॐ नमो श्रीनागनागुरुत्तम नरोत्तमहि ऽसम्यक्संबुद्धाय ॥ नमो मुनिन्द्राय तथागतायार्हते सम्यक्संबुद्धाय ॥ तद्यथा ॥ ॐ मावि ॥ [illegible] भूषणाकृत ॥ बुद्धवति ॥ बुद्धहासिनि ॥ स

श्री र्व्वधर्म्म स्वभाव [illegible] लनि ॥ बुद्धि २ महा [illegible] ॥ वीर महावीर ॥ वीरवती ॥ भगवति ॥ १७

भगवति भगवति ॥ ॐ [illegible] भगवति ॥ पूजावलाकिम ॥ मुनि २ नमो महामुनि हूं

[illegible] बुद्धधर्म्मसंघ [illegible] ॥ सर्व्वमङ्गलाम् [illegible] ॥ [illegible] सर्व्व [illegible]

जानन्तीम्य ॥ इष्टविर्लोनू बंध २ कव २ क्रू २ ग्रस २ मार्व २ हूं जर २ दह २ पच २ मथ २ सर्व्वबुद्धानां वचन
मात्मयु २ छिन्द २ भिन्द २ कुरु २ विधापय २ सर्व्वमकु सर्व्वनाकसादीनां ॥ मनुष्यामनुष्यानुवन २
बंध २ सर्व्वकारनिकावपहू० य २ गर्ज्ज २ तर्ज्ज २ हन २ सर्व्वनक्रून सर्व्वपवमन्त्रान् सर्व्वप
वज्रभाननहन हनसर्व्ववाः क्रु २ मम सर्व्वसत्वानांच ॥ सर्व्वोपद्रवापर्गे ॥ सा यासः
स्पहस्वाः । नि वीविपकृगा सर्व्वपकना कसवि नाभवा दया ॥ आफनग नैप्रपलामेन
वकवानपापा हगन ॥ सपविवानस्यनक्तोकुनूम ॥ आफनग नसहस्रालपति । पति नमात्रेण स
र्व्वयक्षनाकेसा मीनां ॥ बंधयति । सर्व्वजनस्य प्रियो भवति । दिने दिने गन्धवावानुद्यावयन

सुनीमा

ह्रि २

॥श्लोकत्रयं॥ब्लाति॥ज्जूंजनः ह्रिमंसुजुम्नि णीमंजयंमु आधांहिलुमानयानयन्यमि॥नविया
लुवन्ति॥विलुंकृजायनसर्वे शान्भनुप्रहीयन्त ।क्षाविनमात्रलजातिस्मथालुवमि
१६ नैलभकवार्ढंस्विजय्या॥ लिनाप्रकृयनलिनावर्हिंभयनयमि॥वहुविषीर ९८
नन्दवाणीन्ना नयुन्ति॥मः वीवकुठिकांश्रोवाने॥विजय्या॥मूलप्रन्तिप्य॥नग
नालिप्रविभेलनयदिकमिनस्मरुन॥ ॥आर्य्यहर्मांभनामधारनीसमाप्ता॥

ॐ नमः श्रीसर्वज्ञाय ॥ नमो भगवते सर्वमारबलप्रमथनाय तथागतायार्हते सम्यक्संबुद्धाय

नमो भगवत्यै आर्यग्रहमा तृकायै । एवम्मया श्रुतमेकस्मिन्समये भगवान्

देवपुत्रपर्षदि विहर ति स्म । यावत्कम्बलशिलायां । अथ खलु गङ्गादेवा

नामिन्द्रायमन्वितनाम्ना न्द्रलजिनः प्रवादिनः सूत्यव तावमालोयनतम

वीक्षमानो प्रसंक्रान्तो ऽपसीकम्य भगवन्तमिदमवोचत् ॥ ॐ हो ह हं गत न्वमविक्रमाम्बल

श्रीउ

जि । प्रव्राजितो देवत्रायस्त्रिंशा स्वर्गे जिता । प्रव्राजितास्तु कास्ता हि हि भगवन् कथं प्रव्रजितस्य फलं यी॥

॥ भगवानाह ॥ उपालि शृणु वन्द्य प्रव्रजित एकस्मिं नाम समये प्रव्रजितो ॥ मम

पूर्वे वा धिमतल्पेन नापश्य क्षितिना धर्म ज्ञात्वा गत स्वर्गे कि का रुद्र रूप वचसा विस्त

वण संप्रकाशिता । तस्माना क्षितिना नामिता शय्यां वा रूप रूपा । नाम हर्षेण निमित्तं

उत्कण्ठा हि कृत्वा काम हि कायपीडा म्वा । तत्क्षणमासा भगवन् ॥ भगवानाह प्रव्रजिता एकस्मिं:

९१

नामक्षावलीमयवाजिताहृदयंस। ५नसम॥ नगपथ्य॥ ॥ॐ नमो भगवत्याय॥ ॐ नमो॥

श्मशानकश्मक्षजयजयश्रविजय२ जयवाहिनि शंकिनि चक्रिणि अजितेअपराजिते हृं२

परमाहृष्यरूहणवतिजय वाहिनिजयाहिनि मथ२ प्रमथ२ हस२ प्रस२ हृं२ हुलु

घूर्लीमादनि दिनवक्र वक्रवक्रदीर्घवक्र कुंजरमुखि मुसलवक्रा त्रिशूलवज्र

कावक्रमुद्राधारिणि निनक्र२ मां सर्वसत्वांश्च रक्षणवतिसर्वापसर्गेभ्यः स्वा॥ हृहृगवतिहनर२दह२

ध.मा. ७

वह २ मथय २ प्रमथय २ धुन २ विधुन २ हुं २ स्फुट २ स्फुटय २ स्फोटय २ विध्वंसय २ मम सर्वाङ्गानि

अ: कुट २ हुट २ स्फोमूर्च्छि ड स्वाहा विलिख लाक्षमय नि विध्वंसय २ मम सर्वाङ्गानि

नि मे न्यान ॥ नमः २ मो सर्व सर्वान्ध सर्वापद्रवता ४ बल २ विलि २ चूलु २ फल २ १००

किलि २ कुलु २ मस्फ २ अू ह हहा हूं विध्वंसय मम न कुसे न्या का सय २ आमय २ वङ्क

सयन धर्म्मा सयन सर्व्व सयन सत्य वादि सयन सत्य वादि नि सत्यं भानि जमथ वृद्धयनं

हूँ घ सर्व्व मारि क्रमय सत्यवादि सर्व्वं मारिक्रमय। त्वम्वा दविकृत २ कुलयय २ कुरुमान
य २ विकुमानयय २ चन्द्रसूर्य | मानय २ त्रैलोक्याधिपति मानय २ सर्व्वदेवान्मानय २
सर्व्वपन्नगान्त्सकूष्माण्डान | दानवमहीनानय २ त्रिधंहय २ मम सर्व्वंगंककोमान
मीं सर्व्व सत्वां वश्वनयर २ चन्द्रा | स्वय २ वसी २ वसीयय २ कुलु २ बुलु २ धूपमालिनि
धर स्वाहा २ विडि २ हूं कु मी मूर्ति पवसे नयकूलीला सादन काविलव २ हिलि हिलि २ कुल २ धं २ ह २

हीं ध्यसर्व्वेमानिक्रमयसत्यवादि सर्व्वे मानिक्रामय। तम्या दविकूठ २ कूठयय २ कूडमान
य २ विक्कु मानय २ वन्द्रहर्य्ये मानम्य २ शे सा क्षा विचयतिमानय २ सर्व्वे देवान्मानयर
सर्व्वेपक्रवान्तसकूक्षा[illegible] हनगदीनानय २ विधंसय २ मम सर्व्वेगक्रो[illegible]मान
मींसर्व्वेसत्वी[illegible]वनक्र २ वक्ता क्षय २ [illegible] वगीं २ वगीं यय २ कूल २ वूल २ पूष्यमालिनि
धर्ष्वणि २ विति २ हूकू मीमूर्व्वि पक्षे [illegible]कूलोत्सादन कावि[illegible] हिलि हिलि २ कूल २ धं २ हे २

ग्रहमात्र

विलरमसिजम्बूधजकृञ्जविलाक्षिमत्रमरमोंसर्वसत्वोंॐमंह्रूनोंवसर्व्वनथमगदावल्ला

किमस्वाहा ॥ कुलनाजप्रः हासाहमस्वाहा ॥ ...केविमनस्वाहा ॥ सर्वग्रहन

ग्रु नताथ्यसीकनूनिस्वाहा ॥ नक्षमोंसर्वसत्वोंॐमंह्रूमंसर्वहृयपलठस्वाहा ॥ १०१

० ॥ ॥ ॐपैसादवनु ...थकपूनानामधानिदीजूपम्वाजिगा । यकुक

त्र विघ्नकुवाकलहवाविवादवाविग्रहवायनपाठिप्यामसर्वत्रनयाहविघ्नमिधजा ५

एवं वाक्य वाव्य्याश्च यि प्यतव्या । मनुष्या ना सूत्र पुत्र प्रार्थी सर्व्वधीन प्राकृत्या नि
श्रीसूपयश्च नीरुत्ला पूजन   ऽस्य हित्वा हृदयं ददाहिनव ऽभि । नान्ये नोत्पद्यमय
मिमीं नत्यं पवित्रं पापनाश   गृहीत लक्ष्मी तैलकायि मा वृद्धिष्यति ॥ ॥
ऽइदमवोचद्भगवान् आत्तमन   नास्ते च भिक्षवः सा च सर्वावती पर्षद्भगवतो भाषितमभ्य
नन्दन्निति ॥ ॥ आर्य[illegible]नाम धारणी समाप्ता ॥ ॥ शुभमस्तु सर्वदा

पञ्चर

॥ ॐ नमः [illegible] पञ्च सर्वनीतापे [illegible] नमः पावन [illegible] पाय ॥ नमो भूमि मातामह [illegible] नमः

य [illegible] सम्पूर्ण वृद्धाय ॥ [illegible] कि न्यथाय यथा विसत्वाय महासत्वा

यमहा का [illegible] निकाय ॥ ॥ [illegible] यवादि सत्वाय महासत्वाय [illegible] १०२

साप [illegible] मुनिकाय ॥ वामन [illegible] नमस्या [illegible] मन ॥ [illegible]

विपञ्च [illegible] वि ॥ प्राणपञ्च भावि लि ॥ यानि कानि [illegible] यात्तु [illegible] यानि का [illegible]

महामाया ॥ याकश्चिद्धीनया ॥ एकपिदेस्यद्वा । यश्चविद्यामाला ॥ यैकवि [illegible] मिश्चाह्याष्ठएकवि
द्यद्वा । एकाविद्यसमः ४ हंवश्चावाडह्य मन्क । सर्वादि । नानिसवाश्च ४ सर्वति [illegible] नगत्रवा । त्यम्ऽक । [illegible]
यान्तिन । कृदननमत्वन ॥   [illegible] ४ [illegible] ४ मान [illegible]
कालिधिमिमृकयदे ॥ मेमम   वेह [illegible] ॥ पविक्षाधीकृत्य ॥ पविश्रंकृत्य
एविद्याचनंकृत्य २ श्चानिख   [illegible] अविहानंकृत्य ॥ गत्युपविहानंकृत्य
विषहू [illegible] कृत्य [illegible] विषनाशनंकृत्य ॥ सूदि [illegible] विहाषंकृत्य ॥ उदकपविहानंकृत्य ॥ [illegible]
कंदनंकृत्य ॥ [illegible] नावंवंकृत्य ॥ [illegible] लीवन्धंकृत्य ॥ [illegible] ॥ ॐ नमः [illegible] नमः [illegible]

गर्सीहय भुंत्वहूं । सूल्यस्थानमामनरस्मास्सनरगामप्रगम । उपगम । सर्व्वक्रीडानुपगम ।
अ सर्व्वकालमृत्युनूयसमसर्व्व नक्षत्रग्रहानूपसम । सर्व्वउपद्रवानूपसम । हसावति
१०० पिशाचि पर्णशवरि विघ्न विघ्नन स्तम्भन मूल स्वाहा ॥ ॐ अमि निनधावि । वैठे १०२
लिः मातंगि पूर्णे स्वाहा ॐ ज्रीं कुरु कुरु सर्व्वज्वर । पर्णशवरि स्वाहा ॥ ॐ नमः
सर्व्वशवरानां महाशवरानां हूं भगवति पिशाचि । पर्णशवरि स्वाहा ॥ ॐ पिशाचि पर्णशवरि
ह्रीँ हुं हुँ हूँ फट् पिशाचि स्वाहा ॥ ॥ आर्य्यपर्णशवरी महामायाविद्याधारिणीनामधारणी समाप्तः ॥

॥ ॐ नमो आर्य्य श्रीकुमारभूताय तथागताय वोधिसत्वाय महासत्वाय महाकारुणिका
य॥ तद्यथा॥ ॐ वज्र, वि रजे शुद्धे विशुद्धे, शोधनि विशोधनि, शोधय
य, विशोधय, ॐ मले, विम्मले, निर्म्मले, जयवाहिनी हूं स्वाहा हूं ह ह
स्वाहा॥ आर्य्य मञ्जुश्रीनामधारणी समाप्त॥ ॥ ॐ नमो बुद्धाय॥
नमः सर्वमंगलसिद्धि भूतकृतराजाय तथागतायार्हते सम्यक्सम्बुद्धाय॥ तद्यथा

ॐ नमः [illegible] सर्वमंगल [illegible] [illegible] ॥ [illegible] लाहा [illegible] ॥

पु सर्वमंगलनामधारनीस [illegible] माप्त ॥ [illegible] नामधारनी [illegible] ॥

पार्हिकलमण्डल [illegible] दाय ॥ [illegible] धर्म विनायकलामि १०४

क नमः सर्वमंगलधारिनी [illegible] [illegible] ॥ [illegible]

नामधारनीसमाप्त ॥ [illegible] ॥ [illegible] सर्वमंगल [illegible] मंगल [illegible]

ॐ नमः श्रीलोकनाथाय ॥ श्रीघनःप्रमहगणबकनमः ॥ एवं मया श्रुतम् एकस्मिन्समयभ

गवान्पाताललक्षपर्वते विह रति स्म । आर्यावलोकितेश्वरस्य सुखवने । अनेकग

लगनमालवमध्यकाशेः कोटिभूककन्या नागकन्या सहस्रलक्षनमहत्तालिङ्कु

सं घन सार्द्धं भूक्षादश सिद्धि कुसहस्रैर्नवनवतिहिम्वयाधिसहस्र कोटीनियुतश

तसहस्रैः ॥ अनेकेन्द्र शुद्धावासकायिकदेवपुत्रकोटिनियुतशतसहस्रैः ॥ पवित्रैः पु

श्रीमावं

नस्कृतं श्रीघनसमद्रत्नवज्रकृत्कारिकाम्दवपूतानधिकृत्य षमन्त्रणयमिस्म ॥ अथ खल्वा

अ ७८ र्य्यविलोकितेश्वरो बोधिसत्वो महासत्व उत्थायासनादेकांशमुत्तरासंगं कृ

त्वा दक्षिणं जानुमण्डलं पृथिव्यां प्रतिष्ठाप्य येन भगवांस्तेनाञ्जलिं कृत्वा प्रण १०२

म्य प्रहसितवदनो भूत्वा भगवन्तमेतदवोचत्। शृणु मम भगवन्नमाचक्ष्या॰

गनार्जनामस्तदयं यत्न या पूर्वमकनवाकिक स्वविलोकिताय्यालोकधातो लाकन्दना

जस्यगभानकस्यासकान्हृहीनंयनमुहनस्वनीष्यवदेवमूग्रप्रमूबोनिवह्रलिगुह्याव

सभायिकदेवमूत्रडमूबो स्यनेकदेवपूत्रगनसहस्रालिहमादाचिनान्यनूक्र

वासीसमाश्रं।मा।श्री।श्रूसं: माहक्षानवृक्षडमूबोनिवमसादनसमाधिमनसह

प्रानियाणिलक्षानि।ख्यसिं ष्यमूनहगवन्यूयिवी अदहा।हृदमसाच्यपागहृदयं

प्रवचन।वादिकवीकन्वीसक्रसिंन्यूष्यवीप्रदन।ह्रीष्यनमहष्यस्वप्रकायिकप्रमूत्वे

अ॒मा॰ ५

निर्यादकादवधूत्रभनमस्त्रहस्त्राणि लिक्वा वनन्तुक्षयस्तस्यन्ति। ये गृहलभपकालगवनस्थाये
अ॒ बीप्रदक्षोहविष्यन्ति। यत्र दममाघयागहृदयंप्रवर्तिष्यन्ति। अनुभकवूद्धवीः
श्री हितिमूलभनमहत्स्रावथाः विमक्तूर्णलम्भूलाकृहगवन्हलाहविष्यन्ति। य०॰ १०६
दमपाघयागहृदयं ॰ग्रेः ष्यन्ति। य॰ ० कल्पिक्रूगवांकिलिअपकावीत्यान्सर्वपापा
सा द॰ पायधर्म्मसमावर्त्ती अप्यर्थपचादक॰ ॰ हृदम्म्प्रतिक्षयकाअ॰ अपूर्वीवीपचायव॰ ॰ सर्व

बुद्धबोधिसत्वार्य्यश्रावकप्रत्येकबुद्धप्रतिग्रहपकश्चसर्वत्रिप्रतिसीवंनकृत्तायसर्वांसीवच:
मायप्रनमस्त्येवनाबकृगव नाउकायवासकायनंहेवजत्मनिनत्कर्मविकेघ:
तिपनिकृयंनक्कनीवाकी हवनि।अकाहिकनकृवनघाहिकनवाआहिमः
नवाव्यानुर्थिकनवाकृयले वैहस्काहिकनवाकृवन।पूजितंकृलननवादनकपूर्ल
नवानासानकृलननवादकाघ्रकृलननवांसिद्धकाभकृलननवानाहृकृलननवाहृदयनकृलननवा।

स्वप्ना

ऽ दवनक्मूलनवापार्श्वे ग्वलनवा कहिगू लनवा कुंप्रकोगंग्वलनवा जूलाग्रहणीगूल

स्वू नवा जूगोसायलवा हस्तपं — दवंदनपार्श्व निराबू जावा ा विलाहकविग्रकृष्ण वि

जा वर्षिकाटिकमहनन्दवसा — हलिमिंगलग्रहप्विश्ट ध्वायसान्काबोदेवनोर्यं १०१

क्कुलायकूलोवेधवन्चनगा — तनगजेनाहलागावा नेवा सर्कः गाहगवनक्का

यपोतयावाक्षिहेयीतयावा ॥ स्वप्नदर्शनन वान कर्म्मपरिकूर्यंगक्कलियवाविदानं

नस्कानि । ज्ञानवशेन सत्वानां नानाधिमुक्तिकानां । यदि हे भगवन् व्रतसमुपादानं दृष्ट्वा लाभा

वर्द्धमानायां श्रद्धेनाधिप देवमनुष्यममाचयाण हृदयं श्रोष्यन्ति । ऽह्रदीप

ष्यन्ति । मानयिष्यन्ति वाद यिष्यन्ति लिविष्यन्ति लि वोपयिष्यन्ति पर्यवाप्स्य

तिसूत्रपाठं सत्वानां आव विष्यन्ति ऽभूत्वाक्षिप्य निगतानान्यां सत्वानां

कर्तृपूजाक्षिक्वा कर्तृजापं दास्यन्ति । ००मानि च मकुयकानि चिन्तयिष्यन्ति । सूत्र

निष्क्रियताः। अनुत्पत्तताः। अविकल्पतानभ असंभवताः। अविनिर्गमताः। अकल्पताः।
निःस्वपताः। समविनाशि नीपताः। विवर्द्धितपंचस्कन्धताः। अनन्तमाणव
शानुस्मृतिभावयितव्या। न दर्शनं दर्शनादि अप्राकृतसहसं संभूतदर्शनीकावि
द्यति। अप्रत्ययदर्शनाविक विद्यति। पिपासा। यावत्तूष्णीकाभिविनिर्गतत्वात्
ल्यापयितव्या इति किं बहुना हरणवन्नम्यानपहार्द्धयावाभ्यामद्यति। हाभिनिर्यानतवापत्वात्

स्याबाऽस्वग्यनहृनुनाबाऽग्रथान्ति। क्रूनवाम्हगवन्यल्ति ननार्श्चवला। कि र्म न्मवस्यानू
लाँवननकर्षीकर्गुपूछन्हि॥ लासगवानियन्हिध्यान्हि॥ नघश्रपिनामस्हगव
न्काल्पिदपपूर्नूस्थन्दन॥ ल्वाकर्पूरन्वाकरू विकीबाअूडूथापबिलाध्याङि
लायींवायिध्वाशूत्मानस पमन। नन्वनस्वन्हनसाकर्पूरनस्पकरू विका॥
याल्बेवंहबाति। अनना हमाकूऋ ४ पविहा छिनाबा। नश्वनी॥ छिकमिथ्याति। जूपिवहू

गन्धर्वनगरसदृशः । एवमेव भगवन्निदं मदीयममात्मभावः । हृदयं च ॥ कश्चिद्भिक्षुर्ग्लानः सौं ... पापम
लौ । यावत्तावत्पापमथ नापि सूक्ष्मयति श्री भगवन् स्वर्ग के सत्वानां ... एवं कुशलहृ
अ ० ७ दुःखविपाके । यत्पापमात्मक तस्य कर्मविन हिताय हविष्यन्ति शील समाधिप्रज्ञा १०७
पूर्वसम्बोधिन ध्यानसीन निष्क्रमभवकर्मणि यद्भवकाशि भगवन् कुशलमूलं वाक्कृत
इति ... हि ... दा हि ... ली वाड्याम ... वाड्पा ... काय ... वाकाशि ... ॥ अ

माघपाणि हृदयमुद्दिश्य ऊं क्रां क्ष्मां मूर्धवासं कुर्यात् । स्फवानानमाघपाणि हृदयमना
स्तापन ३ यं विंवर्तिः पनः ॥ ह्री एगं दन्हष्ट्र वधमी विनमिनतू र्मीशा ३ प्रतिकी कि ॥ न
वा ३ । कनमविंगा निर्यद्रू न ॥ ग्रा ॥ गम स्था स्य कायन त्यत्स्यन्का । ड त्यन्ना ॥ स्था स्य
नागम ३ कर्मदर्तनिमी ॥ र्द्रु धनमं या स्य न्कि । हि श्वमना ॥ क्रू स कुन्यात्र स्यहविष्य
नि । वहरूनप्रियं स्याहविष्य नि ऊं फ लिस्या ४ थं प्रगिताक्रू स्था स्य हविष्य कि । ड त्यन्ना ॥ स्था

स्वायँ नयोवाऽप्रतिमाय्यंकि। अग्निनानद ष्कनानाद नजियनकनवाजागक्रोनि मनस्

य्यपहर्नुकर्मानकाध्वासय हीनाहविष्याकेनानतिग्निदकहर्यं हविष्यति नः

वानदहिहर्यंहविष्याति। सकावायानमाच्येयागतदयनहस्मादकंवापस्मिन १०

य्यस्मिन्विदिनवडर्ध्वय्यर्क तस्यदन्मादागय्यभासर्वोपद्रवाउपन्न मिवीति। म

वंकाजासवाडाजायहर्नुगक्नूवन्कि। सर्वसत्वानां च प्रियावहविष्यन्कि मनस्नामध्यस

विष्याति । नवाह्यगछुरमं हविष्याति । उत्पलन्त्रासूत्रगछुरयं गीर्खे प्रस मैण्या सूपा ॥ गीनवा
सूपमनुष्यहयं हविष्याति । नवकाः बोदहयं नवजाकिनीहयं नवासूपा शीवा ४ कृ
ष्णपकृष्णहविष्यानि ना नानविष्यनन गफूल कार्लकविष्याति । देवता
स्वास्यसननससिनंचक्रा वनन गुरु फपयुक्तासूनि । पत्रपत्रायपत्रसूमनगण
ताविरहितध्यहविष्याति मैत्री करुणा मुदिता पेक्षा या ॥ ० ॥ भविंग तिनतूवैहो ४ प्रकि द

८३

कौड्रिनवा । सूपवान श्रेयसर्मान्युतिलप्यातकमभानश्चो । मनलकालसूर्यविलाक्रि

सू तस्यवहि कृस्वपलसैम् वैदनोनैवाम्यति । सूवनकालैंकविघ्यतिनकाक

गी दष्ठितरविध्यतिनहस्रवि कूर्पकविध्यतिनयाँविम्हयेनाद्वाबप्रसावन्नमस्व ।१।

७ नूष्ठकालैंकविघ्यतिहूव हिजालनिरविघ्यति । ना ष्वमूव ठकालैंकविघ्य

तिमनलकालर्हमायपतिहानश्चासाहविघ्यति । पफ्वामयवृद्ध गफयालियिस्तस्माय

यदि हि विपश्यति । आर्य विना हि न गच्छति विपश्यति कल्याणमित्र ॥ दिने दिने कालं गच्छति ना
न विवर्द्धते ॥ मध्यमा सपलाङ्कुशकेन कलङ्कुन संकाव क्रमा क्षिद्धि वि
[illegible] येनाश्च नद्य षष्ठ ॥ आर्य बामाघपाग कदपो धर्मपर्याय ॥ सर्वसत्वानां
बलावलंकृता त्वाश्च आवषित वा ॥ आवार्य मूर्च्छितं करोति व्या ॥ यस्मात् छिगतमलम
म्प्याप्याय नमावाधिसत्वा हर्षकि । सत्वानामर्थं करनं लोन बोधि ॥ आम्या न बाधिसत्वाः

नांगतानांवगच्छन्ति । बोधिसत्वानग्रक्ता सत्त्व उपायऽत्रलोकेषु मौ सत्वानामर्थेकर
र्वन्तिबुद्धा भगवन्तः । सुभूति: हन्वानन्तज्ञानीयापन्वहमिमंहृदयं तथागतस्य
पूर्वतः कौशिप्यवतहस्तीं पर्युदामर्थायहितायसूलापानायषविद्याप्रकाशि ११२
र्तौ । अथावत्सुहगवाना: र्यावता किं तस्यवं बोधिसत्वं महासत्वमनद्वाव
ता । सोषत्वं ज्ञसत्वप्रत्ययानीकालेमन्यसी । अनुमोदितं तथागतनयास्विमकाल

पाश्चिमवाधिसत्वयानिकानांयेन्द्रकार्यार्थिकविघ्यामि ॥ अथ खल्वार्य्यावलोकितेश्वरो
बोधिसत्वोऽनिमिषनय नाहत्वा हगवन्तमतदवोचत् । स्तु भगवन्सर्वबो
धिसत्वनमस्कृतमिदं वि भाकमूत्रमञ्जुलंकृजनद्विाययवहुजनसत्वाय
सात्कानूकंपायै महताज न कायस्याथीय हितायसत्वाय ॥ ॥
ॐ नमस्तुम्भानूनमप्रतिक्षिन्तये ॥ नमः सर्वबुद्धबोधिसत्वेभ्य ॥ नमः प्रत्येकबुद्धार्य

भवकल्पेषु ल्योःह्नी। तानानागतप्रत्युत्पन्नेभ्यः नमः सम्यग्गतानां । नमः सम्यक्प्रति
त्पन्नानां । नमः श्मानवर्त्ती पूजाय महाम कल्याय नमः आर्य्यमैत्रीयप्रमुखेभ्यो म
हाबोधिसत्त्वेभ्यः नमः सूप्रतिबिम्बितजनेवल्लभवाजप्रमुखेभ्यः सर्वतथाग ११२
तेभ्यो हेक्यः सम्यक्सम्बु द्धेभ्यो भगवद्भ्यः नमः वज्रकुले वज्रकुल प्रहारविनायक
वर्जिताय तथागतायनमः ह्रीँ हवि क्रौं ङिल बाजायतनाथनामय ऽ आर्य्यावलोकित

रायतथागताय । नमः सुप्रतिष्ठितमणिकूटराजाय तथागताय । नमः समन्तरश्म्यु
द्गतश्रीकूटराजाय तथाग ताय । नमो विपश्यिने तथागताय । नमः शिखि
नेतथागताय नमो विश्वभु वे तथागताय । नमः क्रकुच्छन्दाय तथागताय । नमः
कनकमुनये तथागता य । नमः काश्यपाय तथागताय । नमः शाक्यमुन
ये तथागतायार्हते सम्यक्सम्बुद्धाय । तद्यथा ॐ मुने २ महामुनये स्वाहा । ॐ मुने २ महामु

मयनकरमोसर्वविहत्तोविसर्वयापत्रभसमनल्तोता । नमः सुप्रतिष्ठितकीर्त्तिनलाद्मयाय

अ नथागताय । नमः समन्तं वहास्वविजितसर्वश्रमाद्रियतथागताय । नमः

जि नुकसनुसजत्रियतथागताय । नमःन सुप्रहासहस्यवराजायतथागताय । ११४

क नमः प्रक्रिहलहेयघना जायतथागताय । नमो विस्वाकरणश्रीनतथागता

य । नमो बुद्धाय नमो धर्म्माय । नमः संघाय । नमः श्रीतानागतप्रत्युत्पन्नलोवुद्धय

हृन्वह्युहा। तद्यथा स्मृतिवर्द्धनि। मतिवर्द्धनि। गतिवर्द्धनि। धृतिवर्द्धनि। प्रज्ञावर्द्धनि।
पुण्यिज्ञानवर्द्धनि। ध्यानव: र्द्धनि। समर्थवर्द्धनि। समाधिवर्द्धनि। सर्वबोधिपक्ष
धर्म्मवर्द्धनि। सकलबुद्ध धर्म्मपरिपूरणि स्वाहा। नमो रत्नत्रयाय॥ नः
मआर्य्यावलोकितेश्वरा यबोधिसत्वाय महासत्वाय महाकारुणिकाय:
नमो महास्थामप्राप्ताय बोधिसत्वाय॰ नमस्कृत्वा इदमार्य्यावलोकितेश्वर
महासत्वाय

सुप्राघ

मूर्ध्वोर्मीर्मभगा घपा गमा जनाम हृदयं तथा गम हं मूलेतावि सं महल्यें सर्व्वपद्मेहिमि
सु दानीमानर्हिपि व्यामि श्यः: न्क्रु भमन्त्रप्रदा ३ सर्व्वकार्याणि। सर्व्वसत्वश्च मम पह
प्रा र्वमहत्वानींविकाहवन्क्रु॥ मघय्य । ॐ चन २ चिलि २ खुरु २ मन २ मिनि २ मनु २ ११८
तू महाकायूलिकस्वाहा ॥ हीं ०ष्ण धनमन्त्र ४ ॐ मन २ हिलि २ हुलु २ खुरु २ चिलि
चिलि २ मिलि २ लिलि २ महापद्मभस्वाहा॥ विध्यामातानमन्त्रः ५ ॐ कल २ किलि २

हुलु २ महाक्रुद्धसत्त्वाय स्वाहा । दन्ताहिंसाघ्न मन्त्र ॐ कुरु २ धर २ मथ २ कल २
किलि २ कुलु २ महापद्म क्रुद्धसत्त्वाय स्वाहा । तथागतमन्त्र ॐ कर २ किरि २
हुलु २ मल २ लयम प्राप्ताय स्वाहा ॥ निवर्तन मन्त्र ॐ विलु २ सविल २ विवल २
उर्ध्व २ हन २ हिलि २ हुलु २ तव २ किलि २ हुलु २ अक्षहि महाकारुणिक स्वाहा ॥
नुपकर्षण मन्त्र ॐ महापद्म यवि वग धन २ धिवि २ धुनु २ गव २ सव २ वन २ पन २ वन २

कुलाघ

मथ २ लथ २ हुव २ हा हा ही ही हू हू ओं कालब्रह्म वण मथ व २ धिधि हु २ भू २ ज्वाव २ मथ २ खथ २

मथ २ वथ २ हुथ २ व लिंग गसहूम्ब्र युनि माङ्गि गणवी कवा २ णप २ साम २ खम २

हणव स्वामा हिलिय मथ वहूण रूवव ब्रम्ह वाम्वू मिधनदक्ष विदव गणा वर्ज्जिन ।।१८

ववता स्वाहा ।। उपाहन: स्वा नमक्रा घत्ती कालनन्थपूथ्य थूपक्व धजपता क्ष

वाहिदीपमक्रुध्या हून २ खू २ भू २ धू २ हन क्षमाव कूदवाम वविष्कु धनदवा पग्निस्वा

कु
गो
ग्र

षिनायकबहुविविधवधधन ॥ देवतानक्षत्रमन्त्र ३। धन २ धिनि २ धुनु २ नन २ थन २ च
न २ पन २ लन २ हन २ यन २ सन २ वन २ वनपाय स्वाहा । साधकस्यन्तिबननमन्त्र ३।
समन्तावलोकित विलो १ किन लोकभ्यन्नमहेश्वर त्रिभुवनेश्वर सर्वमन्त्रसम
लैकुणावलोकितेश्वर मू रु २ मुरु २ मुय २ मुरु २ हन करु २ मां सर्वसत्वानां च सर्व
भयेभ्य ३ सर्वोपद्रवेभ्य ३ सर्वोपसर्गेभ्य ३ सर्वग्रहेभ्य ३ सर्वव्याधिभ्य ३ सर्वविषेभ्य ३ सर्वक

सुभाष

सु
त्री
श्र

तुल्य॥ त्रवैवधवन्मनगातनगर्जनयाजगाक्वनाग्नूदकविषगन्त्र्यविमावकखाल ॥
कलि२किलि२कूलु२खबर२ चिचि२चूचू२। ह्रूँक्लिंयवलवाक्षमंयगुनार्यंसत्य
हंप्रकागक।मम२नमः२ समर२मल२दमर२धर्म२महाकालिकमलनमा॥ ॥ ११
नविषमनघघानमिगाय चिरू२कमल२मिलि२मूलू२८८२००२हिलि२दू
दू२ठिठि२०५०२त्रनायवर्मकृतपनिकुन्त्रयक्ष्महिमहाकालिका।ह्रीं नमनमहम्भवनमह

हुलगलसंहंजक्का । कचरकिलिरिकुरुयचरहुलुरचरहुसचररकचररकुठठकिहिरकुदुर

मठरमहाविशुद्धविषय ः निवासिनमहाकारुणिक । सफयनिवासमन्त्र ३ । ॐ

नयकालधवीगवलमकुठ ः मालाधनसर्वकुलिनिवसिकलजाठमकुटमहालोक

मल्लालंकुलकनगलक्ष ः नसमाधिमाकप्रकैय्यवकुसल्लसक्कतिमनिपालक

महाकारुणिकसर्वकर्मावरणविशोधकसर्वकुक्षानयविधूनकसर्वव्याधिविमोचक ः

र्व्वसत्वाशाय निपूरकसर्व्वसत्वसमाश्वासनकन नमः स्वाहा । ॐ अमोघाय स्वाहा । ॐ अ-
मोघपाशाय स्वाहा । ॐ अ मक्रुधाय । ॐ अजिताय स्वाहा । ॐ अपराजिताय स्वाहा । ॐ अमि-
तहाय स्वाहा । ॐ अमिताय स्वाहा । मारसेनाप्रमर्द्दनाय स्वाहा । ॐ जम्भसमाधानसम्बु- ११८
हा । जयाय स्वाहा । विजया य स्वाहा । ॐ जयविजयाय स्वाहा ॥ बलप्रदाय स्वाहा । बल-
प्रदाय स्वाहा । ॐ कालमृत्युप्रशमनाय स्वाहा । हृदयङ्गमकर्मकुरु नमः स्वाहा ॥ हृद

यमकृष्ठा। ॐ चक्र हूँ फट् स्वाहा। ॐ जय हूँ फट् स्वाहा। ॐ सुजि हूँ फट् स्वाहा। ॐ हूँ जय स्वाहा

ॐ ज्ञीं ष्ठ साक्ष वित्र्ययापा धपा मत्रमि हनज्ञीं ष्ठ हूँ फट् स्वाहा॥ ॐ पकृदयमत्त्र

ष्ठा। ॐ वज्र सुमनि स्वाहा॥ ॐ ज्वालालि फट् स्वाहा। ॐ वज्रनि स्वाहा। ॐ ज्वालालिकष्ठी

ष्ठ जीं हूँ फट् स्वाहा। नियत निष्पाव दनीया क्रु हस्यमहगव क्रमणि क्रमपाष्ठय

विकृयीं कृत्सूर्या स्वाहा। ॐ यम हस्ता यस्वाहा॥ ॐ वज्रकष्ठ भोसियां यस्वाहा॥ ॥पठितसिद्ध

सु.पा.प

स्यास्यपन्नस्य कर्माणि ह्रस्वानि । त्रिष्कालं जापेन पठ्यमानं कर्माणि विशोधयन्ति । सर्वकर्माव
रणविशुद्धिं करोति ॥ गुह्यं पठनहीनमावन्ध अहस्मादशानसर्वयक्षादिनाकी
लकार्थे सर्वकर्मसूत्र ॥ कं बन्धयितव्यं । सर्वव्याधि सूचनकेल मूदकमावायवि ११९
ज्वरनाशनार्थं ॥ कार्यादित्य दनं गम्भीरनाशास्त्रकेन । उदकस्य लेनवत्मदर्कं
विष्णुनाशनं महाकिकया । उदकेन वा । विकृत्वा मेघोदकसूत्रकं कण्ठे बन्धयितव्यं ॥ दन्तशू

ल्हकनवीनदनकका ह्मसीमावल्हेयँववगिकसूत्रमक विंगनिवानान्यनिजम्यवतुर्षुत्ववि
वकीलकर्पूवृक्षावनुर्दिन न्निप्यानव्यँ। नीमावँ व्याहवनि। सर्वेवन्माहूत्रकना
दर्भनवाहस्मकनवा। सर्व गहमूयँवनीः कसूत्रकँ। सर्वेक्षनपूज्मनाहूत्रकँ।
सर्पकीहालूननाहलिमि गलत्रहषूमधूपिप्पलीयूमँ विकूसाज्मनल्हेमदकँप
लासादकँमधूपस्थूदकँवा। सर्वेकालिरूलहविनापायाव्यानपूदकँपनिजप्यमूलँप्र॥

गुमाघ

कालयितव्यं ॥ पुनरपि ममपरायनां सर्वोपद्रवान्का सुप्तानां कल्याणं सर्वपिलाभ्यु विनाश्य
विदग्धसाधनेन महतीं डाकिनीलोकायितव्यं । महारक्षा कि हविन्ति । अनया
ॐ दकेन सके सर्वसत्वानां रक्षाकृता भवति । सर्वोपद्रवा प्रशमं गच्छन्ति १२०
य० कि भूविद न्दनिला: कीलपायन कर्ति जातिवाद्यानवि सर्वाकर्त्तव्यं सर्वे
नेकर्माणि स्वपयन्ति । सेनान्तायनं गच्छन्ता । पश्चात् मम सर्वे सत्वरक्षा वन्दनहाम

नसर्वग्रहनक्षत्रेभ्यः । जया विजया अपराजिता कुलीन [illegible] नाकुली । वाकुली अनुपमा
सिंहे हि तिमया [illegible] गन्धविर्यं नगनवक्रामणावक्र विक्रमा । सामचारी हु
न्द्रावति । पथ्य हिरण्या [illegible] कन्यनवानान्यविजयमणिं कल्याणि नसिंवोहोय
नयिनवीं । वालानीं न [illegible] नीनीं विलम्बे [illegible] यं पवंसी [illegible] कवर्णा । [illegible]
समनें । पूतदेव । [illegible] नमस्ति नावर्द्धन सर्वचन्द्रा कृता हवमि विसाग्निर्नाक्रामति वि

शुमाव

बकर्णं नात्यघन ॥ उत्पन्नाऽभिनपीत्रों जनयिष्यन्ति । नीयुं प्रजामयिष्यन्ति । एहाश्रम

मयिष्यन्ति । नानमघानां ष्वलिमकृनं वारिणा । करवील मया सर्वकर्मकर्त्वं ॥

अ अर्या विलाकितन्यनद दर्यपनाम सिद्धसमाधिनमर्व तानि कर्माणि कृत्वान । १२।

थ अथसाधयिष्ट मिकृन्वि धिं । पद्म२ लोके वज्रकेवृद्धप्रतिमा मालिव्यार्या

८ वलाकितान्यनाजदामकूटमनी । एलेयवर्मा कुतपनि वा मा ३ । पञ्चपनि वम पन

ग्र२

॥ सर्वार्थं ज्ञान विहेविर्नं कुल्वा ध्यासध्वी कननि गुकनल विज्ञायपयि नव्या ॥ नन ॥ सा थक
नगन्स्या ग्रनी दुयतिनप्यम यनमन्त्र लर्वं कलत्र व्यनपुष्पा वकीर्ति । अष्टोग
न्प्रदक पूर्णं कृष्णा ॥ स्वा पयिनवा ॥ अपुष्प अपूपलना प्वनु ॥ सन्ति नूयकनल
निष्वतिमर्हिनूथि नवजि न ॥ अर्गनमूर्पदन्नाविद्या । अष्टम हर्षं ज्ञा ज्यिन
या । अहं नाज्ञा विननवा जिनाज्ञा विन नवाक्रि गु ज्ञाहा जिनावाक्रिप्वा लं ल्याः यिनागु

सुभाव

विवसुप्रावमाहेल्वो जाया दानव्याग्रमक ४ भ्रतिमायाअनुत्र कम्पु त्वानं कलि गंयरन्य ति ।
हैस्तुवबुद्धत्यहियाव ः स्वयपवा ख्यविला किनं ग्यवकुमग कमिास वीभय
सु विपूवयमि ।मनउमिला अनव्वायवि जय्यअपुली रय अहयि त्वा।कमा।इन्ति 122
धि नाहवलि।अपुकागंकाम मिमूर्ष माहकान वृहं नामसमाधिं प्रमिनिलकमा।य
दिकुमिन कुयाहयवहाधकनुमि ॥ ओंइदमावावइगवानाइमनाअ्रापवि

साकित·वनाबाबाभिसत्वा महासत्वस्कन्द ङ्किगव स्कन्धवाचिसत्वास्कन्धगुरु. [illegible] कापि

कदेवपूरु: ऋसदेवमानू षामूवग·षर्वेग्यलाकाहमवकालासिममरपेनन्दनि

कि।। ।। मूर्यामा·चपाजनामद्धदर्यंमहापानसूर्जसमाप

पवम्भाहितुवहावाहुहु मषी [illegible] अनगकढक्षददकृमष्यंवयानीनाषीत्रवं

वादीमहात्रमन।। ऋहंप[illegible]सर्वदाकल्यारामर्निनहदकावंगुरु।। ।।

सधर्म

ॐ नमस्सर्वबुद्धबोधिसत्वाय सद्धर्म्मपुण्डरीकाये ॥ ॐ नमो भगवताय ॥ तद्यथा ॥ अनन्तम

नो अनोयनो अमन ममनं विरुवनिग समसमिताविगान्ते मुक्ते

श्री मुक्तनय समसमविसम समसम जयक्षय । अक्षय अक्षीणे शान्त स १२३

मीत धनलिभुलाकला म उपलेदक्षलि निश्चिवृविविवृ अत्यन्तनयाः

निरुच्छिडकूल । मूक्रूल । अपरु । पयरु । सूर्पाक्षि । अमसमसम बुद्धविलाक्षितधर्म

यनिर्क्षित । सौंघनिर्घोषनि, निघोषघृषी, हूयाहूयवि ठमथनि, सर्न, सर्नाक्रयन नूत

कीर्णलाश्रुसृष्य, सूक्रय वलनाय, लकूलव लोकजूमन्यन नाय ॥ ॥

सर्वसिंपुरस्कृ निकायामन्त्र ॐ नमो नल्लकृयाय ॥ नमथ्य । कल, महाकल, ॐ

र्क्कं गुर्क्कं, सुर्क्कं, जूठ जू जावति नघ्ये, नघावति । ॐ हिलि विहिलि, विहि

नि, लघ, लघावति ॥ ॥ नमो नल्लकृयाय ॥ नमथ्य ॥ जूगल्ले, गल्ले, ल्मावि, नम्भ

सधर्म

लि खङ्गालि । मातङ्गि । पुक्कसि । संकुल । कुलसि स्वाहा ॥ ॥ ॐ नमो वज्रक्रमाय

तद्यथा ॥ ॐ हिमि । ॐ हिमि । ॐ हिमि । ॐ हिमि । ॐ हिमि । तिमि । तिमि । तिमि । तिमि

तिमि । तुरु । तुरु । तुरु ॥ तुरु । तुरु । क्रुरु । क्रुरु । क्रुरु । क्रुरु । क्रुरु स्वाहा ॥ १२४

ॐ नमो वज्रक्रमाय ॥ तद्यथा । उद्दण्डा दण्डा यमिनि दिक्काक निदण्ड क

गल दण्ड स्वाहा निर हुम यमनि कुञ्ज पद्म स्वाहा निनि जू वल्हि निर्व ... धिप

विक्षिर्कि हंघनिर्वाननधर्मप श्रीक्षिगसर्वनूतकोगत्यानूगकर्हिंहविद्धीक्तितसनू

वर्किवर्कि निवर्कालिस्वा हा॥ ॥सधर्मबुद्धनीकायामक्रम्मविरा

हमायम॥ ॥ यवमाहिकुप्रहावा हकुर्नेषा कथाणगमष्ठ॥ स्कुवद

याकुषौवमानीनामीव वन्याकीमहाकुमल४॥ गुहमम्कुसर्वदा॥ ॥

ॐ नमाभगवते श्रीमकुमारभूताय बोधिसत्वाय महासत्वाय महाकारुणिकाय॥ तद्यथा ॐ अकर्विवि

वजकुद्दविद्दुद्दमममनिविद्दमयनिजुमनविमनजयवाहिनिनुरवलीहंकुकुकुहद

श्रु पृ ८

ॐ नमः श्रीवज्रअमिताभ वज्र महाकाली काल्यगणकसूत्र पञ्चानन्दाया के सम्यक्सम्बुद्धाय
नमस्य ॥ ॐ मूलम् महामूल ॥ ॐ वज्र स्वाहा ॥ क्षिप्राय ॥ ॐ कज ह्व
स्वाहा ॥ वरकोवरयाय ॥ ॥ ॐ भूनकविक स्वाहा ॥ विकानसभूना ॥ ॐ क कमण्ड्व 128
हा ॥ धमय ॥ ॐ वजकनिष्ठ ॥ दनस्वाहा ॥ नाकध्वन ॥ ॐ कमकालाकाल स्वाहा ॥ चिन
ॐ धर्मधातुगर्भ स्वाहा ॥ अमितनभूव ॥ ॐ धर्मनिस स्वाहा ॥ पिकाय ॥ ॐ सम्यग्विजय जासनया
कृत्सन ॥

ॐ व लंक्रयाः स्वाहा ॥ ॐ पद्म श्र य धाः हूँ व ह्रू वा व नीं गं कृ क्र स्वाहा ॥ ॥ इति गथा हृदयकं
लगनल्लुध्यर्य भूक्ष्म त्नुत्वने तुं जय ल्वा य स्त्रु स्वाहा वलि ॥ ॥ गाथा हृदय भावली
समाप्त ॥ ॥ ॐ नमः सकसकनीनां सम्यक्सम्बुद्धकोटीनां ॥ तद्यथा ॐ व ल वू
लवुन्द स्वाहा ॥ ॥ इति वसुन्धा लगवह्याः स्वाकि दिनि सूक्ष्म त्नन गर्भ ऊप ल्वा व क्रु स्वा
र्यै ॥ ॥ इति वसुन्धा धारणी समाप्त ॥ ॥ ॐ नमो भगवते सर्वदुर्गतासन्नी कराना

प्र थ त्र

रायतथागतायार्हते सम्यक्संबुद्धाय नमः॥ ॐ हूं स्व महा हूं सर्व हूं नामसन नमजखाहा

हाफनं कुरु स्वाहा सफलध्यमांधि … वलीमावर्त्ते सफलबुद्धकाव्यय श्रूजिनाहवन्ति॥ ॥

ॐ हूं हि हूं नामसन नमत्ताधार … णीसमाप्त॥ ॥ ॐ नमो भगवते … बुद्ध … १२५

प्रज्वलाजायतथागताय … हिते सम्यक्संबुद्धाय नमः॥ ॐ हेम … महाहेम

… स्वाहा॥ ॥ ॐ हूं हि हेमचक्र धारणी समाप्त॥ ॥

ॐ नमः श्री आर्यावलोकितेश्वराय ॥ नमस्त्र्यध्वगतेभ्यो बुद्धबोधिसत्त्वेभ्य आर्यधर्म्म
ह्यधर्म्मसंघेभ्यः ॥ नमो भगवते आर्यपद्मपाणये महाकारुणिकाय सम्यक्संभूतनयगतम्
गतायार्हते सम्यक्संबुद्धाय ॥ एवम्मया श्रुतम् एकस्मिन् समये भगवान् [illegible]
जितिमिघच विहरति स्म महता भिक्षुसंघेन सार्द्धं बोधिसत्त्वगणेन च ॥ आर्य
वाजगल्ले सार्द्धं विद्याधरगणैर्लोकपालावनाहकुडीदेवता भगवन्तं नमस्यमानाः पर्यु

शर्वरी मामकी ॥ पाण्डरा नामथगगन सत्भगवन सर्वथा ॥ भगवन् अवलोकितेश्वरो लोका

नामनुकम्पायै क्षमकार्वयी परक्षि भगवन् बुद्धि सर्वज्ञज्ञान निर्मल लोचन भग

वत्या मृत्युना वाया ४ कुलमा गुर्वभ्युक्तिरि ॥ कः ख्याउगरूपाणि विघ्नलोकनायक १२७

भगवानाह ॥ नानावर्णानी रूपाणि नाना वर्णकृतानि च । करुणाकाय पूर्णानि

वाधिसत्वाह्वनकसष्ठा नर्षीमिक्ष्यमहाख्यावं ॥ निवरुणगमनाय सत्वानां विनयाध्याय उग

भु थ श्री

ता वाव पूरुत म मकृष्णु हिन्नाञ्जन निर्ह्यस्लाली ग्यदाक्षिण दंष्ट्रा कठमहाहीम वदनन विहृ

सिर्ग ॥ चन्द्रार्कमणिकिरीटाङ्क कालामञ्जुलमध्यगं ॥ मोराग्रीविकजठामणिर्गक

नूलमकूलमपाचाहृतासीम ॥ कृष्णपक्षालयपक्षेनमञ्जवैविधगुणाविष्णुविधुक ॥

ध्यानमूलमममहाचामूसन्त नमामि सर्वबुद्धान् गुरुपूजित महाबोधिसत्त्वान् लोकेश्वरान्नौमि

हृर्गहृक्रि वत्ताल मञ्जुप्यपताव मञ्जुलं सर्वज्ञाव जिनाय नमः ॥ आर्ह्वदमहागणवन्द्यमध्यक्ष

र्षमंल्पकपाकूलक्षालनीसंक्रान्तानां ॥ सर्वसत्वसुखावहक । आह ॥ साधू साधू महाश्रा
ऋसणवंक्षा मिक्षनणी ॥ यस्याश्रवणमात्रेण ॥ विनश्यति हत्याद्रूकमआपूना
नाम्यजननं सुखसौभाग्य: वर्द्धनं ॥ यस्य कण्ठगतं वापि पुस्तकस्यां पि सहेतुत्वे
स्य ॥ न तस्य विघ्नकविन संभ्रमसस्थ सं यानआग्निहं जराकूर ॥ नाम्कस्य स
र्द्वयक्लित्थ ॥ वक्रीकृर्द्व किन्तस्यव ॥ देवासनमकथ्य देव्या वाधिसत्वा महर्द्धिका यवनक्षा १२८

क्लिष्टमहासत्वं ॥ यश्चेमां धारणीं पठेत्‌ श्रृणुयात्‌ स्वाध्यायति ॥ सानन्तर्याणि कर्माणि सोगतम्‌ स्वर्गनाम

हासत्वमर्यनिदानादवर्जि तम्‌ अन्यान्‌ कुशलानां सर्वं ॥ धर्मस्कन्धसहस्राणां थः

सर्वं कुशलमूलं परिसमाप्त नाक्रसीणय ॥ ॐ धम महाभूताचार्य ॥ धारणी स्मृति

मानन्तरं वक्रया लिप्त नया ॥ बोधिसत्वा महासत्वा ॥ हयग्रीवाद्यका धार्ल

वनाधानकुशलानवट सर्वरूपर्वा स्कु जिनात्र ध्यायाक्रि दिवाकम ठना गमनन्द्रापनन्दा

घा॥ त्येभवान्येकूलानगः॥ वाक्सान्येवचान्त्संवस्नानृपिवलम्यठा॥ नानकन्याविस

लाक्षा॥ यक्लिव्येवृषिना: सिनःगसानर्म्मीकनिष्यक्तिमहासत्वस्यनियम॥

लोकपालायनमस्कृत्वा त्वानानाजकायिका॥ श्रमणविष्णुस्वयनकमूर्त्तिस्था १२७

एहर्सीमृतःकूमानाल्लेनना थन्वयानयन्तिमदवर्णपस्यास्यान्तःतसत्वस्यकण्ठे

ल्महसगमपिवा॥ यस्मिनापूनसवमनि॥ तज्जापूर्वेनिनूपजवमअस्मात्कुमाण्माजलं:

तुल्विं व समानयति । हृत्स्थाय ॐ क्रु सतनं, नदयायमस्य कस्य विन । लक्ष्यं त्राणनाम
र्नं, सर्वसिद्धिप्रदायकं ॥ कुबुहकुयस श्री लक्ष्मयुक्तप्रदपयता । सर्वमङ्गलयं
वर्मां श्रवणी सर्वहितं द्वादशी । नमस्य हस्तं गर्भं सर्वत्र लोकं सवनाव नन कृष्णं पिवस
नाभनि, पञ्चमेनां श्रवयः । न्नवथा नस्य पर्वादि मध्ये कुरुवयं पावाव मानकिन ॥
हनाय सर्वसत्त्वानां, कुपयनामूदा हवन ॥ ॥ ॐ नमो भगवत्यै आर्य डाकानादे

एकजटा

श्री एकजटायै ॥ नमस्सर्व्वश्रावकप्रत्येकबुद्धबोधिसत्वकायवाज ॥ बुद्धधर्म्मसंघरत्नाय ॥

जू नमोभगवतपवमञ्जुवव: महाकारुणिकायनमक्षसमनम ॥ नमस्तारायाहेतिसम्य १२०

ए ॐ बुद्धायानमः ॥ ॐ ॥ ये रमहाते ॥ उग्ररूप ॥ उग्रतार ॐ श्रीं एकजटायै

० ह्रीं त्रिकट ॐ वन्दु वज्रा किलकिल ॥ श्यामवर्णाकृपिगमकूठनवलिनामाले

रुवन ॥ दंष्ट्राकराला एहीमण्डदर्शने ॥ हूं हूं उम्रविमहामूर्त्ति हमरदमरमदनातूर्ण

उर्द्धज८२

मदनान्तयइकुलज्ञविकुलंदविकुलमानगनि ॥ कुलकालिनिवम २ हूंन ॥ २ हूलनातहूकं
हूवनज्ञविविकृतद्वंडूम हानास ॥ वालनृकाहूमकीसयदर्शनविद्जिंकनाल
वमन ॥ संत्रासिन्द्रुवनवि कनातिककीलिमहाकीलिकलानल ॥ कालनाहवि
कालककीलविषमालि ॥ व क्रमहाकालनूयक्षविलिमहाकालिमदमनि ॥ धकालि
वज्रकालि ॥ यमवकालिवकालाथायनिवकालककालिविषमहासमशानवासिनि ॥ महाका

पालिनि ॥ महाकालकपालमालिनि मांससालितमद्यसालम्पटी मानुषाक्त आवृतसवीर ॥
अलित न्वगिवामुण्डमालावल ॥ म्बिन ॥ दहसवासन ॥ क्रमाक्रूंकालिनि ॥ कृताकमय
निकृताकदंष्ट्रमहाकालि कालीमथमनि ॥ कालानलकालमोहन ॥ महाकालक १२१
कालविधमनि ॥ वज्रमहा कालरूपधारिणि ॥ हां ह्रीं २ क्रों २ हूं २ हुं २ फ्रु ठ २ फट २
यठ २ विघ्नठ २ गांठ २ स्वठ २ स्वाठ्य २ मोठ्य २ वगालमध्यवासिनि ॥ कालिनक्कालिनिसिन्धु
ज ठ २

कालिनमूर्ध्व ॐ॥ ज्वालिनिहूं फट्॥ नयन॥ ज्वाल२ ज्वालय२ वज्र२ वज्रगर्भे॥ वज्रज्वा:

लानलप्रभे। वज्रज्वालाग हुं॥ वज्रज्वालामण्डलनाहिकाममलक्ष्मुगणा। वज्र

ज्वालावहामिनमवीर॥ वे ददल्के वज्रवमवज्रवावाहिल्के विद्धे घरहमनी

महाकालीसदमनी॥ दह हमीकूर्मरुवि श्वाना। वज्रावज्रमालिवन्द॥ अजि

त॥ अपराजित॥ अमितअपवि मितजपवि मितयूलपक्षानसहासायपवित॥ अमम॥

जुसमन्तकथस २ सर्द्द २ सर्थ २ त्थ्यल्पवि ॥ जुवृति हनमहा विश्व ॥ विन्कामालिमिह्न ॥ सिद्ध २
लाथम २ हगवतिमहाका र्थानि सर्व्वसत्वानाञ्च हूनथाव ॥ कुन्दनु मथ्य वर्ति
नि ॥ जुकवनिक्लेव ॥ वज क्लेव ॥ थवनाशीन । जुमूनजुमूनीकृव ॥ जुमूनन १३२
यिलि ॥ वज्राम्हन ॥ जुम्हन वर्त्तिलि ॥ जुम्हनम्हव ॥ कृत्तुलि निजुवधूग ॥ जुवधू
ननिवासिनं । जुवृधूननक्लिलविनूनादयर्म नियम २ वल २ हर्ण २ नाय २ साव २ कण २ कण २
नि

धव २ दवदान्तमहानाद ॥ मेघनिर्घोषनाद ॥ मेघनाद ॥ मेघनादमहानादप्रिय ॥ मेघना
दान्ह्वविलिङ्किकावरूप ॥ र्थावादूदूहामक्रापिकरुवन ॥ त्रिभुवनध्वनिधक २
धूधू ॥ धूधू २ धूनविधूनं दम २ ग्मा २ धूर २ घूं फ्रं २ मू २ मूरू २ भावय २ जय २ महाकारु
णिकपवमध्वनि ॥ वि[illegible]य विरवीबध्वनि ॥ क्रोधध्वनि ॥ महाकायवाज्रध्वनि
पिरठध्वनि ॥ समयध्वनी ॥ समय ॥ महासमय ॥ समयानुपालिनि समय ॥ वज्रिणि ॥ वज्र

वाहिनि ॥ समयसाधनि ॥ समयावलाविनि स्मर २ समय ॥ समयवज्र ॥ वीनानायकि ॥ वज्रना
यकि पीठनायकि ॥ कामरूपि नि ॥ कामरूप विश्वरूप ॥ महारौद्रे ॥ घोररूप ॥ बहुविवि
धविचित्ररूपधारिणि ॥ महा विकृतरूपसहस्रपरिवर्त्तिनि । ममाविदर्पदलनि ॥
महाविघ्नौघघातनि ॥ तर्ज य २ सर्वमारान् । शोषय २ सर्वपक्षान्नागान् । घातय २ सर्वदु
ष्टप्रदुष्टान् । कीलय २ सर्वविघ्नान् । भीषयन् । सर्वभूतान् । ताडय २ सर्वयक्षराक्षसान् । भगव

श्रीमहाकरुणमहाक्रोधेश्वरविवज्रहसमांसपविवाचं सर्वसत्वानां ओं मणिहमहामणि विनाममणि

मणिपणि॥ मणिपद्म पद्मम लि॥ वन्दे वज्रमणि॥ वज्रकर्णवि॥ वज्रडाकिनी हृदया॥

त्ललनिमहाक्रूम्यकिंकिलि लिक्षिलि क्षाश्रवमांस्वादिकर्घन॥ महाक्रायवाकमूज

हुयिमवचलयूगलनामः॥ हवचल नामकृलिमणिवज्रिणलवीयहुधलभवैकन

विग्रहं॥ हुरुलिरणनमसहस्राणिवकप्रहाव क्षामिगा॥ क्षेधातुकमवणनमकृटमणिमाला॥

ॐ कनक

सैबल २

यविनष्ठितनयादपीः ० विश्वमातवज्रधरानुसूत्राकर्षणि । केकानयद्बलि ॥ त्रैधातुकवशंकवि

त्रैलोक्याकर्षणि सर्वतथागत गुह्यहृदये । महामुद्राधिष्ठितमहायायमहामाय ॥ मा

याविमा हनि । मायाजालन य ॥ बल २ विबलें २ त्रैधातुकनमस्कृत ॥ नविशनि हुं १३८

गवहनयन ॥ महाकल्याणि सन्निह ॥ वीर २ वीरगवल्हहे ॥ वीरगननमित ॥ परम

गुलमुद्राहस्त निज्रः हूं वं हो आवज्रांकुशपाशनिलि ॥ याम्यहस्ते स्वनिष्ठिय । वज्रपद्म

जुलक

महासत्वेमहावज्रधरद्युति ॥ सर्व्वमण्डलनगरे ॥ नमः सर्व्वयोगिनी सर्व्वमण्डलपूजिते ॥
कालूक्षमदनिर्हरे ॥ वज्री हूमालिनि ॥ विश्वगर्भे ॥ विश्वाङ्गगहननिलय ॥ वन्दे २
वन्द्यवज्रपीठनमस्कृते ॥ व न्दु मण्डलमध्यगर्भगते ॥ अनन्ता ॥ अनन्तलोदयमानि:
ते ॥ अनन्तमण्डलावृते ॥ कलिकालनलाकम्पसा। कालवज्रसर्व्वविघ्नविध्वंसनि
नी ॥ ४ ॥ हाहाकुसुमविद्यागर्भे। महासर्व्वमण्डलपूजिते ॥ महाकालानलिक ॥ हूकाशनवस्सर ॥ म

हामन्त्रानुसारिणि॥ महामन्त्रगर्भे सर्वमन्त्रमुद्रानिधानतार्थेषु जननि॥ वज्रकुलोपदर्श
नविनी॥ महामन्त्राङ्गं॥ सहस्राक्षि॥ सहस्रभुजे॥ शतसहस्राक्षि मोहय २ त्रास
यर्घाटय २ हन्कृय २ मारय २ त्रासय २ हन २ यर २ विध्वंसय २ उत्सादय २ सर्वदु १३२
ष्टप्रदुष्टान् भगवती विद्ये ओं कट २ हूँ हूँ हूँ नमो स्तुते स्वाहा॥ योगिनीभ
दावन्दित स्वाहा॥ सर्वतथागतसमयाधिष्ठित स्वाहा॥ सर्वतथागताधिष्ठित स्वाहा॥ ओ

पुष्टि हस्तविपस्वाहा॥ अङ्गुलिहस्तप्रकाशस्वाहा॥ त्रैलोक्याकर्षणि स्वाहा॥ ॐ क्रीं ४ स्वाहा
ॐ हूँ स्वाहा॥ ॐ क्रूं स्वाहा॥ ॐ ठाँ स्वाहा॥ त्रिवक्रवासिनि स्वाहा॥ वक्रग्रीवक्रम॰
कुल स्वाहा॥ दुःपिनी स्वाहा॥ अनूपिणी स्वाहा॥ रक्तदृष्टिमुखि स्वाहा॥ वनाह
मूर्खी स्वाहा॥ कृमान्कमय॰ नि स्वाहा॥ मांसगलवन्दिन स्वाहा॥ मांसहर्कीनव
विनि स्वाहा॥ स्मशानवासिनि स्वाहा॥ महाकिलि॰ प्रिय स्वाहा॥ माहनि स्वाहा॥ विमा

हनि स्वाहा ॥ साधनि स्वाहा ॥ विधापनी स्वाहा ॥ एकवीर्य्य स्वाहा ॥ महावीर्य्य स्वाहा ॥ स्थिर
वीर्य्य स्वाहा ॥ ज्ञानडाकिनी स्वाहा ॥ ज्ञानामृतसम्भूतिगे स्वाहा ॥ धर्म्मधातुगर्ब्भ स्वा: १२८
हा ॥ महाबोधिचित्तवज्र स्वाहा ॥ महासमय स्वाहा ॥ त्रैलोक्यसम्भनि स्वाहा ॥ मह
ाशत्रुप्रमर्द्दनी स्वाहा ॥ हूं स्वाहा ॥ हुं फट् स्वाहा ॥ स्व: स्वाहा ॥ हूं हुं फट् फट् स्वाहा ॥
वज्रवाराही स्वाहा ॥ वज्रकाशी स्वाहा ॥ सर्व्वमन्त्रनविधाधिपतये स्वाहा ॥ पञ्चजनका स्वाहा

सुलित्र

समाश्वासनकरि स्वाहा ॥ सूर्यग्रहदमनि स्वाहा ॥ वज्रकर्मां सर्वसत्वांश्च सर्वहलनपानिविग
वताकृताकिल्याय स्मानरु मम ॐ सर्वत्र सर्वदा मम सर्वसत्वानां च स्वमनिंकुरु
पुष्टिं कुरु नक्षीकुरु हृणव ति स्रिंश्च लोक जट हुं हुं फट् फट् नमः स्मरन स्वाहा ॥
ॐ पूर्वैकजटा नाम धारनि समाप्ता ॥ ॥ ये धर्मा हेतुप्रभवा हेतुन्
तेषां तथागतो ह्यवदत् तेषां च यो निरोध एवंवादी महाश्रमणः ॥ ॥ शुभमस्तु ॥

एकरूप
सिंहनाद

सू
त्र
अ

॥ नमो सिंहनादलोकेश्वराय ॥ नमः श्री आर्यावलोकितेश्वराय बोधिस
त्त्वाय महासत्त्वाय महाका[illegible]रुणिकाय ॥ तद्यथा ॥ ॐ अकट विकट कंकट
ट कवाटक थाटवीरः [illegible] वीर [illegible]धारु गवन आर्यावलोकितेश्वरस्य १८१
फूवनः प्रत्यक्षवनुपालिन [illegible] गोमयन ऊर्द्ध्वमण्डलकान् कृत्वा यतिम
ल्लती त्रयोदशवीर्यानुवादविद्या ॥ ततः सफलावान् गोमयं लेपमन्ति

मन्त्र व्याधिमुपशमयन्तु ।। सर्व्वव्याधीमुपसमयति ।। यदि सप्तमदिवसे गया
दशेष्वा. वकविंशतिमः वा दिवसपञ्चानन्तर्य्यकाविंशापिन सिद्ध
ति ।। मद्यापञ्चानन्तर्य्यकाः वीर्य्या सिद्धिति ।। ॐ नि सिद्धनाद धव लोकिता ।।
ॐ नमः रत्नत्रयाय ।। नमः आर्य्यावलोकितेश्वराय बोधिसत्वाय महास
त्वाय. महाकारुणीकाय ।। तद्यथा ।। ॐ धवनि धव धव धिधि. रुरु हुरु हृद्रवाहा ।।

शामग्रहणवा सूर्यग्रहणवा। यश्रुग थ्वनग्रकाय्य जूसा कन गनवावान मूखप्रद्दि
थ्य गावक्कूयथावन्नमू कानवनि। लोकनाथस्य पनयतिमाया जूगाव
वाघूनेनग्रदीपग्रवालयंजू थ्वांकेवसगवावान मूखप्रद्दिथ्य गावकुंय का १२८
वन्हनेनजूयतितगोम: यनवाम ओतकेहेला। ओविमावाय म.जवसो
धर्म्म गावस्कयपिन्त्वा। स्वयंवन्तु सूर्यमयथ्यनु यूहेसवा जूयूतंकृष्णावृम्नव

र्थेन साधयत् । अग्रुगान्य तिथ्यां श्रालवर्कितं च्छणोला । गुंग्गानिन श्च वंजा कि
धावलीवल्लगो वर्त्तु ४ य स्यमू क्रि प्रदीयन्न चूर्ल्मि कृत्य वपा ह्थो स्स
वसगाजानि । यावंश्रद्ध दिवाकश्री वागासवानजायन अक्कि नीयद
गस्कर ४ स्तयना त्सवेर्ध धीमाणा क्विरवतिनिव्यसम ॥ ॥ श्रीकाव
वीजसिद्धनं लाकनोथविरा हाव ॥ छितुउजवदं सर्दु वामय ख्धवसिता ४

उटांगस्थामितारञ्ज विश्वाः वनु सस्थितो। वज्रपर्य्यंकितं नाथं शाववयद्वि धि
वद्बुध्व॥ ॐ निसायथा वमाथमुखाधवलीसमासमाय॥ शुभं॥
ॐ नमः श्रीवज्राय ॥ एवं मया श्रुतमेकस्मिन् समये भगवान् श्रावस्त्यां वि १२६
हवनित्य॥ ॐ नम नमूल यविहरति दह्यो नाम महत्ता विक्रुसंघेन सार्द्धं मद्द
वृमाद नाहिकृगते ॐ संबहुले थ्वाधितत्वेमहासत्वैस्तृणावतलहणवानां हृति

यं कृमान ह्न न मा मन्त्र या मा स ॥ जु क्षि म [illegible] श्री नृ य नि [illegible] या म य नि मि न गु ल स [illegible] याः

ना म [illegible] क ध्य न्तु स्क [illegible] य वि मि गो मू [illegible] न हृ वि नि [illegible] न ना [illegible] ना [illegible] म न [illegible] न [illegible]

[illegible] कृ [illegible] न हि [illegible] ति [illegible] य न जा ध या नि स त्वा नां ध र्म न्द [illegible] या नि ॥ [illegible]

श्री ४ कृ मा व ह्न न [illegible] म जु म्मू : द्वी प का मनुष्य का जु [illegible] या पू र्व [illegible] न ना मू व [illegible] व

[illegible] का ल म व [illegible] नि मि द्धि ना नि [illegible] व न म [illegible] श्री ४ स त्वा जु स्या प नि मि ना मू व [illegible]

श्रीगणि

तम्ह्यनुलवन्त्रुपनिकीलेन्‌नामधर्म्मपर्य्यायंलि लिविध्यंकि लिवोयपियिध्यंकि। नामध

सू मात्रमपिह्मध्यंकि। याव: त्यूलगनामपिहृत्वान्हमनपियिध्यंकि। वोवपिय

क्ते न्कि। पर्य्यवाप्यंकि। पवल थ्यविलनलसंप्रकाशनपियिध्यंकि। पूर्व्यधूपगन्धमाल १०

विलयपनवस्त्रछत्रवीववकल ध्वजपघण्टयलाकापिंज्वमनन्काहिंज्वपूजालिं ८

पूजपियिध्यंकि। नयपिविकिलायूः ८ पूनववववर्म्मलनायूधाहविध्यंकि॥ यमस्कन्धीम्हल्व

यवविन्हि।श्रमूप ः सत्वानामध्ये ॐ असिद्यन्ति। धायविद्यन्ति। धायविधन्ति। श्रमामृधिः ठविम्बर्ं॥

स्तस्यापविविमिनामूर्द्धानमूविनिःक्षेननम्भावाजस्यनद्याननस्यनामामस्तलेनगर्नः प्रोव्य
न्ति धवविधिद्यन्ति वावयि द्यन्ति मघामायूर्विवद्धयिद्यन्ति॥ नस्माल्लिमिरः
शीद्धदीर्घमूष्कानांमत्वानां प्राथमिन्तुकामाकृत्लपूजावाकृत्लदृहिमवावाअप
विमिनायूधस्कथाननस्थना मास्तलेनगर्नःप्रोद्यन्ति धानविद्यन्ति वावविद्य
न्ति॥ नद्यांमिमनुष्याननुमंसानविद्यन्ति॥ ॐ नमो भगवतेऽपविविनामूर्द्धनिमूविनि॥

पूं-नि

पू
का
१

स्थि तगगनानाशायतनथागतायार्हते संम्यक्संवुद्धाय तद्यथा । ॐ पूर्णे २ महापूर्णे अप्रति
मितपूर्णे अप्रतिमितपूर्णे क्लुन सं ता शा पवित ॐ सर्वसत्त्वानां प्रविशुद्धवर्म्मते
गगनसमुद्रे ह्लिहाववित्तु कर्महानय पवित्राण स्वाहा ।। ॐ मानिमरुत्तोत्त्र
यानतानामाष्ठान त्ते न गते प कविलि ति स्विपाक्ति । लि वा पयिष्यन्ति । पूत्तकं
ति विनमपिकृत्वा २ हथन पिषाक्ति । वावयिष्यन्ति ।। तपवि त्रिणा पूर्ष पूनबलव १०१

र्ध्वतनामुष्पाहविष्यन्ति । ॐ तन्मूत्वा ज्ञूपनिमितामुपस्थान नतस्य कुन्दकृत्र उपयपघन्ते ।
ॐ नमो भगवते ज्ञूपविमि तापूर्णनिह्रुविनि ग्वि ननजानाज्ञाय तथागताय ।
र्हतसम्यक्संबुद्धाय न ॐ पुष्पे २ महापुष्पे सुपविमि तपुष्पे सुपविमि
तपुष्पे ज्ञूनहीहावापवि तॐ सर्वसंस्कार पविशुद्धयर्मा तगगनसमुद्गत
स्वभावविशुद्धे महानयपरिवार स्वाहा ॥ तन वसपुन ४ समयपन नववनवमीनीः

वृक्षकाष्ठीनां भक्षमानेन कल्पेन ॐ दशमापरिमितायुष्ठसूत्रं हाविनं ॥ ॐ नमो भगवते
अपरिमितायुर्ज्ञानसुवि निश्चिततेजोराजाय तथागतायार्हते सम्यक्संबु
द्धाय । तद्यथा । ॐ पूण्ये २ म हापूण्ये अपरिमितपूण्ये अपरिमितपूण्येज्ञा १४२
नसंभारोपचिते ॐ सर्वसंस्का रपरिशुद्धधर्मते गगनसमुद्गते स्वभावविशुद्धे
महानयपरिवारे स्वाहा ॥ येन वेलुहन ३ समसमनन्तर नीलीनां वृक्षकाष्ठीनां भक्ष

मग नेकल्लवल ॐ दमपवि मिनापृठ हृत्रं हाविगं ॥ ॐ नमो हगवतल्जूपविमिपामूर्द्धा

नहृविनिल्विनक आनाजं यतथमगनाप्याहर्न सम्यक्सं वृद्धापतघथा ॥ ॐ पूल्थेर

महापूल्थेजूपविमितपृश्वा जूपविमितपूल्थेक्वान संहानायविगं ॐ सर्वसंस्का

वपविशुद्धधर्मानगगनस मुद्भगहस्वरावविशुद्धमहानयपविवावस्वाहा ॥

गनविहपूत ठ समयनससकसकानां वृद्धकाटीनामकमर्ग नेकल्लवल ॐ दमपवि

पूपात

अपरि

मितायूठहूंहाविमं ॥ ॐ नमो भगवते अपरिमितायुर्ज्ञानसुविनिश्चितराजेन्द्राय ।
तथागतायार्हते सम्यक्संबुद्धाय तद्यथा ॐ पुण्ये महापुण्ये अपरिमितपु-
ण्ये अपरिमितपुण्यज्ञानसंभारोपचिते ॐ सर्वसंस्कारपरिशुद्धधर्मते गगन १४२
समुद्गते स्वभावविशुद्धे महानयपरिवारे स्वाहा ॥ ननवलपूत४समयन
पञ्चसप्तीनिवृडकाटीनामकर्माणिक्षपयतिअपरिमितायूठहूंहाविमं ॥ ॐ न

मा भगवते अपरिमितायुर्ज्ञानसुविनिश्चिततेजोराजाय तथागतायार्हते सम्यक्संबुद्धाय।
तद्यथा ॐ पुण्ये महापुण्ये अपरिमितपुण्ये अपरिमितपुण्यज्ञानसंभारोपचि
ते ॐ सर्वसंस्कारपरिशुद्धधर्मते गगनसमुद्गते स्वभावविशुद्धे महानयपरिवा
रे स्वाहा॥ मन बलपुनःस मयनयस्वरूपसुभीतिनामकमणे कस्वयस्वाहा ॐ द
मपरिमितायुः हृदयं विर्तं॥ ॐ नमो भगवते अपरिमितायुर्ज्ञानसुविनिश्चिततेजोराजा॥

जूपवि ११

नायतथमनतामाहिंसम्यक्संवृद्धायतथया ॥ ॐ पूलये २ महापूलये जूपविविमितपूलये जूपवि
जू मितपूलये ज्ञानसंम्भावाप विग ॐ सर्वसम्भावपविशुद्धयमभितग ॰ नसमद्गत
क्षि ख्यताववियुद्धमहानयपः मितावसाह ॥ गन वलपून ४ समयनवल्लामिग ६४०
क मीनांवृद्धकोटीनामकमम नेकलयरगह्रूदमपवि मितायू ४ हजैदाग्रिम ॥ ॐ
नमोभगवतेजूपविमितायसर्वनसविनिम्वि ततजोवाजायथागताया हिंतसम्यक्संबु

घायनघथा ओँ पूर्ण्ये २ महापूर्ण्ये जयविजितपूर्ण्ये जयविजितपूर्ण्ये ज्ञानहीला वायवि

नओँ सर्वसत्वानयविशुद्ध मैमगगनसमुद्रकस्वहावविशुद्धमहानयपावि

नानवाहा ॥ नि नावलपूर ४ समयनघधिशुगती नांपूजकाटीनामकमतने क

स्वयलहूं दमयविजितापू ४ हूं हाधिनि ॥ ओँ नमो भगवते जयविजितापूर्ण्यै

नमूर्विनिश्चितज्ञानायतथागताय ॥ हेमसम्बुद्धै पूजायतघथा ॥ ओँ पूर्ण्ये २ म

सपति

तापूर्व्वत्सूपविमितपूर्व्वत्सूपविमितपूर्व्वत्स्नानसँहानामविवि ॐ सर्व्वतत्कावयति

सू शुद्धधर्म्मतिगगनसमृद्ध नत्वलावविशुद्धमहानपथर्म्मिवानसाल ॥ ॥ न

फ़ु वित्सूपूनठसमयनस हिं विँगतीनाँ वृद्धकाठीनामकमगनेकत्वचल०ँद ४८२

ह मपविमितायू४हूतँहावि गँ ॥ ॐ नमो भगवान्सूपविमितापूर्णनहविनिस्त्रि

मनखानानायमतथागतायार्हते सम्यक्सम्बुद्धाय तमथा ॥ ॐ वृल्ये २ महापूनसूपविमि

नपूल्यजूपविमिनपूल्यक्सलनसँहानापविगः सर्वसक्लनपविगुड्रुपर्मीतगगनह
मृक्लनखलावविग्रुद्धमहा न्स्यपविवानखाला॥ ननखलूपूलठसमयनदं
मैमैभीनैश्री [illegible] बि॰ गी नीवृद्धकाठीनामकमगनैकखवनस॰ दमयपवि
मिलायूहर्ठला बिमँ॥ ॐन शालगवनजूपविमिमायूकूलनह विनि॥ ज्यनमजा
नाजायनथानगलायाहिंगसम्पर्खं वृक्षायनयथा॥ ॐपूल्यरमहापूल्यजूपविमिनपू

सुप्रति

२ गन स्वल्पूर्वन ॥ सप्रपनदश नमान दीपालु ज्ञायमा नाप [illegible] गनेकाल [illegible] तिमिताय [illegible]

सुनमारत्नगर्भनसुप्रतिष्ठितायुर्ज्ञान संविनिश्चितम ज्ञानाभयनागतायाहिंसहस्य संवृद्धायतथागताय ॥ ॐ पूर्वस्य रमहापू [illegible]

सुप्रतिष्ठितपूर्वस्य सुप्रतिष्ठितपूर्वस्य ज्ञानसंहारपविगर्भ ॐ सर्वसत्त्वानुपरिशुद्धधर्मगगनसमसमुद्रगस्वाहा विशु [illegible]

स्य सुप्रतिष्ठितपूर्वस्य ज्ञानसंहारपविगर्भ ॐ सर्वसत्त्वानुपरिशुद्धधर्मगगनसमुद्र

सु गस्वलाववि शुद्धमहानय | पविवानस्वाहा ॥ पञ्चदमपविनिर्मितायूः सूत्रेलि

कु खिष्यक्तिलिखापविष्यक्ति | सगमायूषावर्जनमायूषाहविष्यक्ति ॥ ॐ नमो रत्न १८७

द्र वतसुप्रतिष्ठितायुर्ज्ञान | संविनिश्चितमकमानानायनवभगतायाहिंसहस्य

संवृद्धायतथागताय ॥ ॐ पूर्वस्य रमहापूर्वस्य सुप्रतिष्ठितपूर्वस्य सुप्रतिष्ठितपूर्वस्य ज्ञान

संशोनायविनः ॐ सर्वसंस्कारपविशुद्धधर्ममीगगनसमुद्गतस्वभावविशुद्धमहानयप

रिवारस्वाहा ॥ यः इदमप रिमितायुः सूत्रं लिखिष्यन्ति लिखापयिष्यन्ति स

कदाचिदकालमृत्युभयं न भविष्यन्ति न तिर्यग्योनौ न यमलोके न च अकालमृत्युना कदा

चिदपि प्रतिलप्स्यन्ते। यत्र यत्र जन्मनि जन्मनि जन्म परिग्रहं करिष्यन्ति तत्र तत्र जाति

जातिस्मरा भविष्यन्ति ॥ ॐ नमो भगवते अपरिमितायुर्ज्ञानसुविनिश्चिततेजोरा

ताजामनख्मनलाया ॥ निसम्यर्थ्मु मुखाय कय ख्मा। ॐ पूल्थे २ महापूल्थे अपरिमित पूल्थे
अपरिमित पूल्थे क्लानसं ॥ हास्वाय ख्मि। ॐ सर्व संस्कान परिशुद्ध धर्मित गगन
समुद्गत खलाव विशुद्ध म ॥ हानय परिवान स्वाहा ॥ ॐ ह्रूं समय परि मिता यु
स्तुतिं लि ख्यिम्याकि। लिस्वाप ॥ ख्यिर्षीलि। नेनवह्रूनगीलि धर्मश्लुश्व सहस्राकि
ख्वाय्याला निस्वकि। ॐ नमा भगवत अपरिमिता युर्ज्ञानस्ववि निख्यि ताक्ता ना जायन

थागतायार्हते सम्यक्संबुद्धाय तद्यथा ॐ पुष्पे २ महापुष्पे सुपविसि मितपुष्पे सुपविसि

त पुष्पे पुष्पकनसंहाराय विग ॐ सर्वसत्वाना पविशुद्धय धर्मलिग गनसमुद्गते स्वाहा

व विशुद्धय महाज्ञानयपविबाव स्वाहा ॥ य ॐ दमयविमिनाभू ५ हर्षेलि लिखिष्यन्ति ।

लिखापयिष्यन्ति । तनवसु वर्गा कि धर्मं वाजि का सहस्रा नि काचाविता नि प्री

स्थापिता नि हवन्ति ॥ ॐ नमो भगवते सुपविसि जा पुष्पूर्गानसु विनिखित कतजा वाजा य

सुपनि

नध्यनगना याहि नसम्यक्संबुद्धायनमधभ ॐ बुध्ये २ महाबुध्ये सुपविनि नयबुध्ये सुप्र

सु विमिनबुध्ये स्वाहान हँनाव यविन ॐ सर्वसत्त्वानपविशुद्धय धर्म्मिनगगनस

दुक मङ्गलावहावविशुद्धे महा नयपविवानस्वाहा ॥ यं ॐ दमपविनि मिनापूर्णसूत्रे १४९

लिखिवश्यनिकिलिवापयिस्व क्ति। नसमपश्चनकर्म्मालि कर्मविवन्धनिपविन्क

यैनक्कन्ति ॥ ॐ नमो रत्नवाजसुपति मितापूर्ण्णनसुविनि श्वि दनजावाजायनध्यानना

याहिर्न्ना सुमर्वं बुद्धायमगधया। ॐ पूर्वस्य रमहापूर्वस्य जूपवि मिनपूर्वस्य जूपविमि
नपूर्वस्य जूनर्मै लानापवि ताॐ सर्वसुक्कानवरि गुरुजधर्मगगनन समुद्रा
स्वहावविशुद्धमहालनय पमि वानल व। यॐ दमपविमिनाजूरहर्तुं
लिप्विष्यन्ति लिखोपवि ष्यन्ति। नमस्नमासा आनकामिकानयकोनेवा
नमानाकालमहापूर्वनानंलष्याग। ॐनमग दनजूपविमिनायूर्ल्लोनमूविनि

सुमति

ल्पितनंतेजोराजाय तथागताया र्हते सम्यक्संबुद्धाय तद्यथा ॐ पुष्पे २ महापुष्पे सु

सु पवितिमनपुष्पेसुपविति नपुष्पे ज्ञानसंस्कारा पवित्रे ॐ सर्वसंस्कारपवि

कु शुद्धधर्मान गगन समुद्र गत्वतत्व विशुद्धे महानयपरिवारे स्वाहा ॥ य १८२

ठे ॐ सुदमपवितिमितापुष्पे लिखिष्यन्ति लिखापयिष्यन्ति ॥ तस्य मरणकाले

सम्मुखानवनवत्याबुद्धकोट्यः ४ संमुखं दर्शनं दास्यन्ति बुद्धसहस्रं हस्तेन हस्तं कोनस्याप

नामय लिखित्वा कर्णे संश्रामन्ति नाप्नकौं क्यविमति वृत्यादयीनवा ॥ ॐ नमो भगवते अपरिमि
तायुर्ज्ञानसुविनिश्चित त जोराजाय तथागतायार्हते सम्यक्संबुद्धाय तद्यथा
ॐ पुण्ये पुण्ये महापुण्ये अपरि मितपुण्ये अपरिमितपुण्ये ज्ञानसंभारोपचि
ते ॐ सर्वसंस्कारपरिशुद्ध धर्मते गगनसमुद्गते स्वभावविशुद्धे महानयप
रिवारे स्वाहा ॥ य इदमपरिमितायुःसूत्रं लिखिष्यति लिखापयिष्यति । तस्य व

सूत्रवि

त्वारश्च महाराजानः पृष्ठतः पृष्ठतः समनुबद्धा रक्षावरणगुप्तिं करिष्यन्ति ॥ ॐ नमो
भगवते अपरिमितायुर्ज्ञा नसुविनिश्चिततेजोराजाय तथागतायार्हते सं
अपू म्यक्संबुद्धाय तद्यथा ॐ पु ण्ये २ महापुण्ये अपरिमितपुण्ये अपरिमितपु १०
८० ण्यज्ञानसंभारोपचिते ॐ सर्वसंस्कारपरिशुद्धधर्म्मते गगनसमुद्गते स्वभा
वविशुद्धे महानयपरिवारे स्वाहा ॥ य इदमपरिमितायुः सूत्रं लिखिष्यन्ति लिखाप

पयिष्यन्ति। समन्तावलोकिताः कथ्यामोऽमिताभस्य तथागतस्य बुद्धक्षेत्रे उपपद्यन्ते॥ ॐ
नमो भगवते अपरिमितायु र्ज्ञानसुविनिश्चिततेजोराजाय तथागतायार्हते स
म्यक्संबुद्धाय तद्यथा। ॐ पु ण्ये २ महापुण्ये अपरिमितपुण्ये अपरिमितपु
ण्यज्ञानसंभारोपचिते सर्वसंस्कारपरिशुद्धधर्मते गगनसमुद्गते स्वभा
वविशुद्धे महानयपरिवारे स्वाहा॥ यस्मिन् पृथिवीप्रदेशे इदमपरिमितायुःसू

ड्रीं लि ल्वि ध्याक्लि लि लापमिध्याक्लि मपुयावी ब्रदं लवे लसतृणावन्दनीयम्ब्व लवि ध्या लियः

शु ल्याला लि लानी म्ह मप्रक्लि द क्लिलीं कर्णु मूलनि पाति ध्याति। कसर्वजुनुललावीसम

रु र्वौ वाधिमत्हिलॅलात्सान्न॥ ँ ननाललावलजूपविधिलिनापूर्त्हुनह वितिस्थिनाम १८

रु नानालाअनच्याभगनायाह्ति कहलम्यकॅपूह्वायलजया। ँपूल्यो २ महापूल्यो

जुपन्हिमिलापूल्य जुपविमिन पूल्यो क्रून हलानापविमॅ सर्ववृत्लानयविधुर्धर्म

गगनसमस्वभावविशुद्धे महानयपरिवारे स्वाहा ॥ ॐ दमयविमिताप्रदृ
लिविमलिहि तवापविश्च क्ति नमः श्री तावान कदाविदपि श्रमिलमान । ॐ न
माहनवमनूपविमिताप्र ज्ञानिसविनि क्लिनमः आवाक्षयमध्यानगायाहिन्द्रस
म्यक्तिवृद्धायनमया । ॐ प्र ज्ञपरमसप्र ज्ञापविमितप्र ज्ञपविमिताप्र
ज्ञानसम्क्षानायविनत ॐ सर्वसत्त्वावनपविशुद्धेय ॐ गगनसमस्वभावविशुद्धे

जुवरि

महानयप्रविवाननेता ॥ यः कश्चिदमं विमिनामृन्हत्तेनलवाजे धर्म्मपर्य्यायमुद्दिश्य

जू एकमपिकाषायर्न्नदानेदा स्यलिगनजिसाहस्त्रमललाहस्त्रसाकथाद्रुमफन

८ त्वमर्थ्यापवि पूर्ण्णकल्याद नेदघाम्रस्यपूत्यस्कन्धमस्यप्रमानेसवृंगनणिर्दे १८२

छि नलपविमिनामृन्हत्तम्र पूत्यस्कन्धमस्यप्रमानीनवृंगनणिर्दे ॥ ॐ नमात्म

वर्ज्जूपविमिनामृन्क्लीनहविनिस्थिता नमो नमायकथागतानीलम्यक्सम्बुद्धाय ॥

तद्यथा ॥ ओं पुण्ये २ महापुण्ये सुपविनिश्चितपुण्ये सुपविनिश्चितपुण्ये ज्ञानसम्भारोपचिते

सर्व्वसत्वानपविशुद्धधर्म्मे गगनसमुद्गतस्वभावविशुद्धे महानयपरिवा

र स्वाहा ॥ यं ओं देयधर्म्मसाले ये पूजयिष्यन्ति ते गगनसकलसमाकीर्णं समुद्धर्म्मपूजितं ते

वहि ॥ ओं नमो भगवते अपरिमितायुर्ज्ञानसुविनिश्चिततेजोराजाय तथागता

यार्हते सम्यक्संबुद्धाय तद्यथा ॥ ओं पुण्ये २ महापुण्ये सुपविनिश्चितपुण्ये सुपविनिश्चितपु

गृपति

ञ्चपञ्चान्तर्हितानामपविनः ॥ ॐ सर्व्वसंस्कारमविशुद्धधर्म्मा गगनसमुद्गतस्वभावविशुद्धम

सू हानयपविवाचस्वाहा ॥ ॐ ध्याविपन्चानिविविः स्फुवकाक्षकन्द कनकमूनि

७ काश्यपशाक्यमुनिप्रत्ये नीनथागतीनांसम्यक्संबुद्धायसप्तकनत्तमयर्थाश्चकृ १५२

ति याश्चतत्वायास्मस्यपूर्णयक व्येसत्यप्रमालीशक्यं गतानि ॥ ॐ नमोभगवतेजपति

मितायपूर्क्रान्नहृविनिर्घ्नितनजानाजातयकथागतायार्हतेसम्यक्संबुद्धायतद्यथा ॥ ॐ

नत्वयविमितायपूः हृसस्यपूर्णश्चकेव्येसत्यप्रमाणैनवंशनतिरिः ॥२

मूल्यस्य महापूल्यजूपविमिलिकयूल्यजूपनिमिनपूल्य क्षन संहावायविग ॐ सर्वसि
त्कावपविगुञ्जयर्म्मिगग गनसमूक्षनलसहाव विगुञ्जमसालसपविवान
स्वाहा॥ यथासमनाडपर्व मनाऊसलसफनत्तनागिं कल्यादानेदया क्सयपू
ल्यहल्यस्यप्रमार्गनर्वंग मयिगुं॥ ल्लपविमिनायूश्रकु तस्यपूल्यक्षन्यस्य
प्रमार्गनर्वंगगणमितुं॥ यथावल्यानांमहासमूद्राउदकपनिक्षुश्रीयनवयूनंकेकावि

पुयोनें

नृगमगयितुं ॥ नत्वपदि मिलायूस्त्रेस्यमूस्यक्रन्मस्मुत्रमानीगर्यूं ॥ ॐ नमो भगवते सूप
पु विमिलायूक्तूनिमह्वि निक्षि ननमाना आयत्यनगनायाहिंकिसम्यक्षीवृद्धाय ॥
९ नयथा ॥ ॐ पूस्येरेमस्तायू स्येसूपविमिलमूस्यसूवविमिलपूस्येस्नान १९॰
क संहानायविमॐ सर्वसत्काय पविमुस्तयर्म्मामगनसमसूक्तगत्तहावविरुत्सुमः
हानस्यपवि वानहाला ॥ य ॐ दमयविमिलामूरुहूर्ह्नं हिलिविघान्किलि लोपयिघोतिस

कुलेषु कुशलयिष्यन्ति । तेन दत्तादिक्षु सर्वबुद्धक्षेत्रेषु सर्वतथागता वन्दिता पूजिता मानिता भवि

ष्यन्ति ॥ ॐ नमो भगवते अपरिमिता युर्ज्ञानसुविनिश्चिततेजोराजाय तथा

गताया र्हते सम्यक्सम्बुद्धाय तद्यथा । ॐ पुण्ये २ महापुण्ये अपरिमितपुण्ये

अपरिमितपुण्ये ज्ञानसं भारोपचिते ॐ सर्वसंस्कारपरिशुद्धधर्मते गगन

समुद्गते स्वभावविशुद्धे महानयपरिवारे स्वाहा ॥ दानवलनसमुद्रकबुद्धाया

१५नि

नवलाधिगतानवसिँहाटाधानवलस्यवश्रुयतिरास्वाकानूलिकस्यपूनप्रविगन्कट॥

श्रू गीलवबलसमृद्धकवृक्षाः गीसवलाधिगतानवसिँहाटागीलवलस्यवश्रुः

७ यतिराश्वाकानूलिकस्यपू नप्रविगन्कट॥ कात्रिवरानसमृद्धनवृक्षाकाक्रि १२२

ह् वलाधिगतानवसिँहाटाका क्रिवलस्यवश्रुयतिराश्वाकानूलिकस्यपूनप्रवि

गन्कटावीर्यवरानसमृद्धनवृक्षावीर्यवलाधिगतानवसिँहाटावीर्यवलस्यवश्रुयति

गद्धाकानुलिकस्यपुत्रप्रविशन्त ठा। क्षानव लनसमुद्रगवृद्धा क्षान वलाधिग तानवर्षिं

हेठा। क्षानवलस्यवङ्कुयाति

समुद्रगवृद्धाप्रक्लावलाधिग

लिकस्यपुत्रप्रविशन्त ठा।

गद्धाकानुलिकस्यपुत्रप्रविशन्त ठा। प्रक्लावलन

तानवर्षिंहठा प्रक्लावलस्यवङ्कुयाति गद्धाकानु

ॐ नमो भगवते भूपतिभिनामुद्रोनसुविनिभ्विग

भमावाजायतघ्यगमायाहिकसम्यर्क्षैं वृज्ञायतघ्यथा। ॐ पुर्ल्ये २ महापुर्ल्ये भूपवि

मितपुण्य-नुपत्नि विनपुण्य ह्मानर्ह हाथापत्रि ... सर्वहरकान्तपनि [illegible] कर्यर्म्मकिंगम

नमप ह्मन स्वलावविगुर्द्ध । मनुमयपत्निमान ... ॥ ... दमवावन हगन

नालाना हव्वहि नाय हव्व । वाचि हव्वा ॥ हाव हर्वविवदीमर्य लदवमानुवाह १८७

नमन्वर्वम्य लाका हाम्विन । मनुनन्द विनि ॥ ॥ आर्य्यापनि मिमानामप

हापानहर्मै हामाम ॥ ॥ हमनु सर्वम्य ॥ कल्याणं मगिस सप्तकार्त ॥

ॐ नमः श्रीवज्रसत्वाय ॥ धर्म्मधातुवागीश्वराय नमः ॥ महाप्रज्ञे महावीर्ये सर्व्व मारविना
शकं । सर्व्वसिद्धीश्वरं नाथं वागीश्वरं नमाम्यहं ॥ ॥ ॐ मूलमन्त्र था धम धा
ह्रीजमन्त्र ॥ ॐ भूः सर्व्व तथागत हृदय हन हन ॐ हूं क्रीं ह हन वन ज्ञानमूर्ति
वागीश्वर महावाच सर्व्वधर्म्मगगनामल सुप्रविशुद्ध धर्म्मधातु ज्ञानगर्भे
स्वा ॥ ॐ हृदयमन्त्र ॥ ॐ वागीश्वर मू ॥ ॐ शिखा जप्यमन्त्र ॥ मध्याननम्यो हृदले

पूर्व्वदिक् ॥ ॐ महालक्ष्मी घाय स्वाहा । ॐ मितापद्रालक्ष्मी घाय स्वाहा ॥ ॐ कल्याणी लक्ष्मी घाय स्वा
पू हा । ॐ विजयालक्ष्मी घाय स्वा हा ॥ ॥ ॐ विक्रिवन्लक्ष्मी य स्वाहा ॥ ॐ जलालक्ष्मीः
८ घाय स्वाहा । ॐ महालक्ष्मीः लक्ष्मी घाय स्वाहा । ॐ जयालक्ष्मी घाय स्वाहा ॥ ॐ [illegible] नादि १२०
श्री विदिक् ॥ पूर्वकोणयम [illegible] ॥ ॐ ज्वालायाय स्वाहा ॥ मध्ये ॐ कलसाधवस्वा
हा । वाम ॥ ॥ दक्षिणकोष्ठ ॐ वलहेरुकाय स्वाहा । मध्ये ॐ कलवत्ताय स्वाहा ॥
[illegible] य स्वाहा ॥ पूर्वे ॐ [illegible] हा ॥ दक्षिणे । ॐ [illegible] स्वाहा ॥ [illegible]

उत्तरे । ॐ वज्रहस्तीयस्वाहा ॥ मध्ये । ॐ वज्रकर्णवस्वाहा ॥ पश्चिमे । ॐ वज्रमहामायस्वाहा ॥ वाम ॥
॥ ॥ पश्चिमकाष्ठ ॥ ॐ भूमिनागायस्वाहा ॥ मध्ये । ॐ वज्रधर्म्मायस्वाहा ॥ उत्तरे ॥
ॐ वज्रनीलकुयस्वाहा ॥ मध्य ॐ वज्रहनवस्वाहा ॥ पश्चिमे । ॐ वज्रमहाबायस्वाहा ॥ वाम ॥
उत्तरकाष्ठ । ॐ जूमाघसिद्वयस्वाहा ॥ मध्ये । ॐ वज्रकर्म्मिलस्वाहा । उत्तरे । ॐ व
जयन्तायस्वाहा ॥ मध्य । ॐ वज्रयक्षायस्वाहा ॥ पश्चिमे । ॐ वज्रमन्थयस्वाहा ॥ वाम ॥ ॐ नाव

नायै स्वाहा ॥ ईशानकोणे । ॐ मामकी स्वाहा ॥ आग्नेये । ॐ पाण्डरवासिनी स्वाहा ॥ नैऋत्यां ॐ ता
रायै स्वाहा ॥ वायव्ये ॥ ॥ ॐ वज्राङ्कुशाय स्वाहा ॥ पूर्वद्वारे ॥ ॥ ॐ वज्रपाश
य स्वाहा ॥ दक्षिणद्वारे ॥ ॐ वज्रस्फोटाय स्वाहा ॥ पश्चिमद्वारे । ॐ वज्रावेशाय १२८
स्वाहा ॥ उत्तरद्वारे ॥ ॥ ततो गर्भमण्डलाद्बहिर्द्वितीयमण्डले पूर्वस्यां दिशि न
क्षत्राणि प्रभृति प्रदक्षिणेन यथाक्रमं ॥ ॐ कृत्तिकानक्षत्रायै स्वाहा ॥ ॐ रोहिणिकायै स्वाहा ॥ ॐ

विमलायेस्वाहा ॥ ॐ प्रभाकर्य्येस्वाहा ॥ ॐ अर्च्चिष्मत्येस्वाहा ॥ ॐ सुदुर्जयायेस्वाहा ॥ ॐ अभिमु-
ख्येस्वाहा ॥ ॐ दूरंगमायेस्वा- हा ॥ ॐ अचलायेस्वाहा ॥ ॐ साधुमत्येस्वाहा ॥ ॐ धर्म्ममे-
घायेस्वाहा ॥ ॐ समन्तप्रभा- येस्वाहा ॥ दक्षिणतो ॥ ॐ वत्नपद्मपारमितायेस्वाहा ॥
ॐ दानपारमितायेस्वाहा ॥ ॐ शीलपारमितायेस्वाहा ॥ ॐ क्षान्तिपारमितायेस्वा-
हा ॥ ॐ वीर्य्यपारमितायेस्वाहा ॥ ॐ ध्यानपारमितायेस्वाहा ॥ ॐ प्रज्ञापारमितायेस्वाहा ॥

ॐ उपायपारमिताये स्वाहा ॥ ॐ प्रणिधानपारमिताये स्वाहा ॥ ॐ बलपारमिताये स्वाहा ॥
ॐ ज्ञानपारमिताये स्वाहा ॥ ॐ वज्रकर्म्मपारमिताये स्वाहा ॥ पश्चिमायां ॐ आयु
र्वशिताये स्वाहा ॥ ॐ चित्तवशिताये स्वाहा ॥ ॐ परिष्कारवशिताये स्वाहा ॥ ॐ क १४९
र्म्मवशिताये स्वाहा ॥ ॐ उपपत्तिवशिताये स्वाहा ॥ ॐ ऋद्धिवशिताये स्वाहा ॥ ॐ अ
धिमुक्तिवशिताये स्वाहा ॥ ॐ प्रणिधानवशिताये स्वाहा ॥ ॐ ज्ञानवशिताये स्वाहा ॥ ॐ धर्म्मवशि

नाये स्वाहा ॥ ओं नयनाये स्वाहा ॥ ओं हूं वाधय स्वाहा ॥ उ[illegible]ह्रीं ॥ ओं वज्रमहे स्वाहा ॥ ओं वज्रा
काये स्वाहा ॥ ओं रक्षो पवि त्याये स्वाहा ॥ ओं मारीचे स्वाहा ॥ ओं पञ्जुनवल्ये स्वाहा
ओं जाङ्गुल्ये स्वाहा ॥ ओं कुलन्त मूलाये स्वाहा ॥ ओं चुन्दाये स्वाहा ॥ ओं प्रज्ञावर्द्धन्ये स्वाहा
ओं सर्वकर्मावरण विशोधनः न्ये स्वाहा ॥ ओं कुरुकयज्ञनकवल्लुये स्वाहा ॥ ओं सर्वबुद्ध
धर्मकायवज्रे स्वाहा ॥ ॥ ओं धर्मप्रतिसंविदे स्वाहा ॥ पूर्वदल ॥ ओं अर्थप्रतिसंविदे

स्वाहा ॥ दक्षिणद्वार ॥ ॐ निरृतिप्रतिसविद स्वाहा ॥ पश्चिमद्वार ॥ ॐ प्रतिहारप्रतिसंविद

स्वाहा ॥ उत्तरद्वार ॥ ॥ … ॐ वज्रमालाभ्याये स्वाहा ॥ भूमिकाले ॥ ॐ वज्रमाला:

ये स्वाहा ॥ नैऋत्ये ॐ वज्रगीत … ये स्वाहा ॥ वायव्य ॥ ॐ वज्रनृत्याये स्वाहा ॥ ईशान ॥

॥ ॥ दक्षिणमण्डलेशे … न्या प्रदक्षिण यथाक्रमे । पूर्वाद्यपदिकायां । ॐ समन्तभद्रा

य स्वाहा ॥ ॐ जम्भयमनय स्वाहा ॥ ॐ क्षितिगर्भाय स्वाहा ॥ ॐ आकाशगर्भाय स्वाहा ॥ ॥ १८०

दक्षिणस्यां ॥ ॐ गगनगञ्जाय स्वाहा ॥ ॐ वज्रपाणये स्वाहा ॥ ॐ सागरमतये स्वाहा ॥ ॐ वज्रगर्भा
य स्वाहा ॥ ॥ पश्चिमायां ॥ ॐ आर्यावलोकितेश्वराय स्वाहा ॥ ॐ महास्थामप्रा
प्ताय स्वाहा ॥ ॐ चन्द्रप्रभाय स्वाहा ॥ ॐ जालिनीप्रभाय स्वाहा ॥ ॥ उत्तरस्यां
ॐ अमितप्रभाय स्वाहा ॥ ॐ प्रतिभानकूटाय स्वाहा ॥ ॐ सर्वशोकतमोनिर्घातम
मतये स्वाहा ॥ ॐ सर्वनिवरणविष्कम्भिने स्वाहा ॥ ॥ पूर्वस्यां ॥ ॐ समन्तभद्राय स्वा

हा ॥ दक्षिण ॥ ॐ प्रज्ञान्तकाय स्वाहा ॥ पश्चिम ॥ ॐ पद्मान्तकाय स्वाहा ॥ उत्तर ॥ ॥
ॐ विघ्नान्तकाय स्वाहा ॥ ईशान ॥ ॐ त्रैलोक्यविजयाय स्वाहा ॥ अग्नि ॥ ॐ व
ज्वालानलार्काय स्वाहा ॥ नैऋत ॥ ॐ हेरुकवज्राय स्वाहा ॥ वायव्य ॥ ॐ परम १८१
श्वाय स्वाहा ॥ ऊर्द्ध ॥ ॐ उष्णीषचक्रवर्तिने स्वाहा ॥ अधसि ॥ ॐ सुम्भराजाय स्वाहा
॥ ॥ दशीयमन्त्रेन सर्व्वकाणाल्येकनकेला क्वविन्यासादिवन्हु ४ क्रा ५ वेस्यावाक्क नस्वावाव

स्फस्फनजूल्नेया दिवस्तु । कालस्फूकाली हस्तमा । र्ध्वे भूपूर्वा यावामपा । र्ध्वे पूर्वजन्मूपा या ४॥
ॐ वज्रपुष्पायै स्वाहा ॥ ॐ व ज्रधूपायै स्वाहा ॥ ॐ वज्रदीपायै स्वाहा ॥ ॐ वज्रगन्धा
यै स्वाहा ॥ ॐ वज्ररूपायै स्वा हा ॥ ॐ वज्रशब्दायै स्वाहा ॥ ॐ वज्ररसायै स्वाहा ॥ ॐ
वज्रस्पर्शायै स्वाहा ॥ ॥ ॐ इन्द्राय स्वाहा ॥ पूर्व । ॐ यमाय स्वाहा ॥ याम्य ॥
ॐ वरुणाय स्वाहा ॥ ॥ पश्चिम ॥ ॐ कुवेराय स्वाहा ॥ उत्तर । ॐ ईशानाय स्वाहा ॥ ई

मले ॥ ॐ जृम्भनाय स्वाहा ॥ जृम्भे ॥ ॐ नैर्ऋत्याय स्वाहा ॥ ... ॥ ॐ वायव्य स्वाहा ॥ वायो ॥ ह्रीः
मनवग्रहसमीपवर्त्ति ... दिग्‌प्रहतिक्रमण ॥ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा ॥ ॐ विष्णवे स्वाहा
ॐ महेश्वराय स्वाहा ॥ ॐ कालिकायाय स्वाहा ॥ ॐ ब्रह्माण्यै स्वाहा ॥ ॐ रुद्राण्यै स्वाहा १८२
ॐ वैष्णव्यै स्वाहा ॥ ॐ कौमार्यै स्वाहा ॥ ॐ इन्द्राण्यै स्वाहा ॥ ॐ वाराह्यै स्वाहा ॥ ॐ चामु-
ण्डायै स्वाहा ॥ ॐ लक्ष्मीन स्वाहा ॥ ॐ गणपतये स्वाहा ॥ ॐ महाकालाय स्वाहा ॥ ॐ नन्दिकेश्वरा

य स्वाहा ॥ ॐ सूर्याय स्वाहा ॥ ॐ चन्द्राय स्वाहा ॥ ॐ मंगलाय स्वाहा ॥ ॐ बुधाय स्वाहा ॥ ॐ बृहस्प
तये स्वाहा ॥ ॐ शुक्राय स्वा हा ॥ ॐ शनैश्चराय स्वाहा ॥ ॐ राहवे स्वाहा ॥ ॐ केतवे
स्वाहा ॥ ॐ वनस्पतये स्वा: हा ॥ ॐ जयकराय स्वाहा ॥ ॐ मधुकराय स्वाहा ॥ ॐ वस
न्ताय स्वाहा ॥ ॐ अनन्ताय स्वाहा ॥ ॐ वासुकिये स्वाहा ॥ ॐ तक्षकाय स्वाहा ॥ ॐ
कर्कोटकाय स्वाहा ॥ ॐ पद्माय स्वाहा ॥ ॐ महापद्माय स्वाहा ॥ ॐ शंखपालाय स्वाहा ॥ ॐ

कुलिकायस्वाहा ॥ ओँ वसविक्रायस्वाहा ॥ ओँ बलयस्वाहा ॥ ओँ प्रक्रादायस्वाहा ॥ ओँ वैश्रावना:
यस्वाहा ॥ ओँ नकुजयस्वा: हा ॥ ओँ कुमायस्वाहा ॥ ओँ पञ्चशिखायस्वाहा ॥ ओँ स
र्वार्थसिद्धायस्वाहा ॥ ओँ पूर्णभद्रायस्वाहा ॥ ओँ मालिभद्रायस्वाहा ॥ ओँ धनदाय १८३
स्वाहा ॥ ओँ वैश्रवनायस्वाहा ॥ ओँ विविकुण्डलिनस्वाहा ॥ ओँ कलिमालिनस्वा
हा ॥ ओँ मूलेन्द्रायस्वाहा ॥ ओँ वसन्तायस्वाहा ॥ ओँ हारीतीस्वाहा ॥ ओँ जृम्भिन्येस्वाहा ॥ ओँ ह

वत्यै स्वाहा॥ ॐ कृत्तिकायै स्वाहा॥ ॐ रोहिण्यै स्वाहा॥ ॐ मृगशिरायै स्वाहा॥ ॐ आर्द्रायै स्वा
हा॥ ॐ पुनर्वसवे स्वाहा॥ ॐ पुष्याय स्वाहा॥ ॐ अश्लेषायै स्वाहा॥ ॐ मघायै स्वाहा॥
ॐ पूर्वफाल्गुन्यै स्वाहा॥ ॐ उत्तरफाल्गुन्यै स्वाहा॥ ॐ हस्तायै स्वाहा॥ ॐ चित्रायै स्वाहा॥
ॐ स्वात्यै स्वाहा॥ ॐ विशाखायै स्वाहा॥ ॐ अनुराधायै स्वाहा॥ ॐ ज्येष्ठायै स्वाहा॥
ॐ मूलायै स्वाहा॥ ॐ पूर्वाषाढायै स्वाहा॥ ॐ उत्तराषाढायै स्वाहा॥ ॐ श्रवणायै स्वाहा॥ ॐ

ग्रहक

धनिष्ठायै स्वाहा ॥ ॐ शतभिषायै स्वाहा ॥ ॐ पूर्वभाद्रपदायै स्वाहा ॥ ॐ उत्तरभाद्रपदायै स्वा-
हा ॥ ॐ रेवत्यै स्वाहा ॥ ॐ भू मिजिन स्वाहा ॥ ॥ ॐ वज्राङ्कुशाय स्वाहा ॥ पू-
र्वद्वारे ॥ ॐ वज्रपाशाय स्वा हा ॥ दक्षिणद्वारे ॥ ॐ वज्रस्फोटाय स्वाहा ॥ पश्चिम १६८
द्वारे ॥ ॐ वज्रावेशाय स्वा हा ॥ उत्तरद्वारे ॥ पंचोपहारपूजा ॥ लास्यादौ भव-
दन्तकुसि ॥ मङ्गलो श्री महावीनैर्सर्वकृत्यानदायकं ॥ सर्वविघ्नगुणम्म बनैवानी स्वबैन

सास्यहे ॥ ॥ ॐ नमो भगवते श्री कमलानन्दनाथाय ॥ तद्यथा ॐ जूनउविकस शुद्धे विशु
द्धे शोधनि विशोधनि शोधय विशोधय विमले निर्मले जयवाहिनि
हुहु हुँ हुँ हुँ फट् फट् स्वाहा ॥ ॥ नमः श्रीमदार्यावलोकितेश्व
राय बोधिसत्वाय महासत्वाय महाकारुणिकाय ॥ तद्यथा ॥ ॐ शुद्धे विशु
द्धे शोधनि विशोधनि गगनविशोधनि विशोधनि ज्ञानविशो

धनि कर्म्मावरनविशोधनि । हन २ सर्व्वावरनानि पच २ पैवानन्तर्य्याणि । पच पच पापानि
पद्मलिम्ने । ५८ हरसूर्य्ये सर्व्वकार्य्यसिद्धिनि स्वाहा ॥ पठितमात्रेन पैवानन्तर्य्या
णि कर्म्मावरनानि पविन्न यैगच्छन्ति ॥ आर्य्यावलोकितेश्वरस्यमूलमन्त्रैर्ज्जुग्ति १८
ङ्क्षिणिकालामथाववीसमाक ॥ ॥ ॐ नमः आर्य्यावलोकितेश्वराय बो
धिसत्वाय महासत्वाय महाकारुनिकाय । तद्यथा ॐ जय २ महाजय वाहिनि ॥ जया

लवि॥ कल २ मल २ बल २ हुलु २ लिनि २ सर्व्वकर्म्मावरणानि॥ मम हन वनि सहम्रावर्त्ति॥
सर्व्वबुद्धावलोकित, चक्षु श्रोत्र, घ्राण, जिह्वा, काय, मनोविज्ञान, विशोध
यनि। तद्यथा। ॐ हुलु २ ग्रहणु २ तल २ सीह्रं २ हन २ मनि २ ॐ सर्वबुद्धावि
क्षितस्वाहा॥ ॐ सर्वबुद्धा वलोकितस्वाहा॥ ॐ धर्म्मधातुगर्भे स्वाहा॥ ॥
ॐ भूताचस्वहावधर्म्मानवाधलि स्वाहा॥ ॐ निसहम्रावर्त्तिनाम धारनी समाप्ता॥ ॥

मणिभद्र

नमो मणिभद्राय ॥ एवं मया श्रुतमेकस्मिन् समये भगवान् श्रावस्त्यां विहरति स्म ॥
जेतवनेऽनाथपिण्डदस्या रामे । अथ खलु मणिभद्रो महायक्षसेनापतिर्येन भ
गवांस्तेनोपसंक्रान्तः उपसं क्रम्य भगवतः पादौ शिरसा वन्दित्वा एकान्तेऽस्थात् १८
एकान्तस्थितो मणिभद्रो महायक्षसेनापतिर्भगवन्तमेतदवोचत् । ॐ हूं दे हद
नहदयीयठकाध्रिद्रुब्राहिक्णीबाडयाहकाबाडयाहिकाबाजिह्रठहाहिवमहहविम

सि ॥ नमस्कृत्य सदा तथागतानुबुद्धा हरिष्यामि, सर्वकार्याणि करिष्यामि ॥ तथागतस्य हृदयस्थ सर्व
हृदयं धनधान्यानुप्राप्तं दास्या मि । सर्वार्थसाधनार्थं करिष्यामि । सर्वसत्वानां च प्राव
सेकं करिष्यामि सर्वविघ्ना: स्यकं करिष्यामि संपत्तिलाभं अथ ना पर्वे हि तत्पाद ग्री ॥
नमो रत्नत्रयाय ॥ नमो मा णि भद्राय । महायक्षसेनापतये संपथीदं । हिलि मा
णि भद्र । हिलि २ माणि भद्र । किलि माणि भद्र । किलि २ माणि भद्र । विलि माणि भद्र वि:

लि २ मालि हद्र । चुलु मालि हद्र । चुलु २ मालि हद्र । कुलु मालि हद्र । कुलु २ मालि हद्र । मु
२ मालि हद्र । तुलु २ मालि हद्र । कुलु २ मालि हद्र । कुलु २ मालि हद्र । सुलु मालि ह
द्र । सुलु २ मालि हद्र । सर्व्वार्थ साधय स्वाहा ॥ तद्यथा । धुनन सधुनन नसधुन पहम १८७
महन मसपुष्पहिलि किलि कलि वडुं कि द्र हिलि हिलि २ स्वाहा ॥ अहिका निर्ल्के
अहिस निर्ल्के अहिलो निर्ल्के स्वाहा ॥ सर्व्वानीपनि जोपसिद्धि हेवलि ॥ जुस्मायवन ॥

[illegible] द्यान्त्रिकालं [illegible] विना [illegible] मानन [illegible] पत्र [illegible]

[illegible] आर्यमालि [illegible] नाम ः [illegible] भवनीतमाका ॥ [illegible] ॥ ॥ ॐ नमो भगवते

[illegible] ॥ ॐ नमः समन्त [illegible] बुद्धानाम् प्रतिहत [illegible] समन्तानां ॥ ॐ किनिर ग

[illegible] [illegible] हूं स्वाहा ॥

[illegible] ॥ ० ॥ ॐ नमो भगवते

ग्यायां॥ ॐ नमो भगवते पुष्प्य पु... [illegible] ॥ गच्छ धा ॐ मुनि ... संग्रह
धर्म्मो अनुग्रह धर्म्मो वि मुक्ति धर्म्म सदानुग्रह धर्म्म। वेग्र बनपावि वरि
ग धर्म्म। सर्व्वकार्य्य पवि प्रापन धर्म्म। समन्तानुपरिवर्त्ति न धर्म्मे स्वाहा॥ १६८
पुष्पाग्र गिन्म निविनय भी क्ष वनीय स्वाहा॥ अनया क्षविनयाग नसादि
त्रिकाय पञ्चायान मिनाक्ष विगारवति॥ ० ॥ ॐ नमो भगवते ... ॥ नमः समन्त

ध्वानन्युत्रिरुगधर्म्मसमानी॥ ॐ धु नः ॐ ह्रः र र हू स्वाहा॥ ॥ॐ नय्या नि ग

योञ्जाय्यस्समाधिनागस्तु ॐ स्वाहि॥ ०॥ ॐ मणिपद्मवज्रेलि मह्रु धु

[illegible] श्रेनद्धार ह्रूं र र हू २ स्वाहा॥ ॥ॐ नमो महाप्रतिसराक्षविमार

ह॥॥ ० ॥ ॐ नमो नलरुयाय॥ ॐ नमो भगवते आर्याविल

[illegible] नागमाधिमलाय, महामलाय महा[illegible]त्रिकाय॥ [illegible] ॐ [illegible] समन्ति

ङ्कनिविश्वकनिनिर्मालमगरा, हनीगल, ... यमावनितर्खेयाद कय ... मानि

ँ नारुकयाकु, वीनकया नु, मनक्षकयाग, जूपब्ध ... कयाकु, केकयाकु,

लिनयाकु, डढकुकयाकु पवेचकेकयाकु ॥ म्यनामध्यगकावा, सिंहमध्ये

गकावा, घ्याघ्रमध्येगका वा, सर्पमध्येगकावा, रुगमध्यगकावा, वनम

ध्यगकावा, हस्तिसर्पमध्येगकावा, कालपाशमध्यगकावा, निगमध्यगकाव, मेडम

ध्यगतावा॥ हस्तिमध्यगतावा॥ समुद्रमध्यगतावा॥ कान्तुमध्यगतावा॥ नग
ध्यगतावा॥ सर्वत्रस्यम ध्यगतावा॥ सर्वदुःख्यभूमृत्युग॥ नक्र२ मोगिमहा
सत्वानां॥ आयुरारोग्य गीयाकु॥ आर्य्यावलोकितेश्वरस्य हृदय विद्य
हृयामवरुतेसर्वेपरि ह्विकोकानां॥ भावनिमावलिह्वितिनिरुनमा
स्वाहा॥ ~२४~ ॥ [illegible] नागा[illegible]हीना[illegible]पाप॥

[illegible]

१३०

मः सर्वबुद्धध्यानव्यवलोकि नामकुसुमन्धा नाम सहायादायस्य तथागतस्य ॥ दिव॰

तु नाम बोधिसत्वः सर्वबुद्ध ताम्राङ्कुमा नाम बोधिसत्वः सर्वगन्धा नाम बोधि

त्वः नामसदा बुद्धि नाम बो धिः धर्माङ्कुरा नाम बोधिसत्वः वृक्षि सना काश्याग

सतथागतः दक्षिणेन सर्वकुसुम नाम तथागतः वृक्षि मना सिनाय नाम तथागतः ॥ ९ ॥

[illegible] नमः [illegible] सम्यक्संबुद्धानां [illegible] अनि बोधिसत्वनां [illegible]

म नपाकेण वाधिसत्वानिरु आमरूसंबाराकि ॥ ॥ आर्यवज्रप्रहरासमन

वज्रमहासत्वं बुद्ध बोधिसत्वना महासंथानवलापवित्रवलासमाप्त ॥ ॥ यथाभ्यादह

मा महेरुणापाजयमनः ॥ [illegible] नि [illegible] व व ये त्रदीसहा [illegible] ॥

नमः [illegible] [illegible] [illegible] भवति [illegible] सर्वोत्ता [illegible] नमः

सर्व [illegible]

नमः आर्य [illegible]

[illegible] यनमाय [illegible] यनमा [illegible] स्वाहा।। नमो रत्नत्रयाय नमः [illegible]

[illegible] स्वाहा [illegible] स्वाहा।। नमः समन्त [illegible]